राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
Www.gauravshalibharat.com

# गौरवशाली भारत

नई दिल्ली से प्रकाशित

वर्ष : 12
अंक : 28
पृष्ठ : 08
नई दिल्ली
शनिवार 13 अगस्त 2022
मूल्य : 1.50/-
RNI No .DELHIN/2011/38334

मुख्य अपडेट
पेज 3 जैन समाज धूमधाम से मनाएगा 2550 वां निर्वाण कल्याणक वर्ष, जन-जन तक पहुंचेंगे भगवान महावीर के सन्देश
पेज 5 आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस वे पर डिवाइडर में टकराकर बस गड्ढे में घुसी, 36 यात्री घायल
पेज 7 अमेरिकी साजिश का आरोप लगाने वाले इमरान खान खुद कर रहे थे लॉबिंग, फर्म भी की थी हायर

मुलाकात

प्रधानमंत्री ने शुक्रवार को नई दिल्ली में भारत के नवनिर्वाचित उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ से मुलाकात की।

## चीन से तिरंगा आयात करने की वजह बताएं मोदी

एजेंसी

**नयी दिल्ली।** कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बताना चाहिए कि उन्होंने चीनी घुसपैठ के बीच देश की शान खादी के तिरंगे को नकार कर चीन में बने पॉलिस्टर तिरंगा आयात करने का निर्णय किन कारणों से लिया है।
गांधी ने शुक्रवार को फेसबुक पोस्ट में कहा कि श्री मोदी को चीन से झंडा आयात करने की बात खूब दिख रही है लेकिन चीन ने देश की जमीन पर कब्जा कर दिया है इस पर वह आंखें

मूंदे हुए हैं। उनका कहना था कि सच्चा देशभक्त वही है जो देश पर कोई आंच न आने दे और देश की एक-एक ज़मीन इंच की रक्षा के लिए लड़ जाए और मातृभूमि की गरिमा तथा शान को बनाए रखने के लिए समर्पित हो।
उन्होंने कहा कि सत्ता में आने से पहले श्री मोदी चीन को लाल आंख दिखाने की बात करते थे लेकिन प्रधानमंत्री पिछले आठ साल से चीन के आगे नतमस्तक हैं और उनके मुंह से अब चीन का नाम तक नहीं निकलता है। आश्चर्य की बात यह है कि जनता द्वारा चुने हुए प्रधानमंत्री जनहित को सर्वोपरि न रखते हुए चीन को लेकर चुप्पी साधे हैं।
कांग्रेस नेता ने कहा ऐसे क्या कारण हैं कि तिरंगे के लिए, देश की शान, खादी को छोड़, उन्हें चीन से आयात किए पॉलिस्टर का सहारा लेना पड़ा।

# बिहार में जहरीली शराब से 7 मौतें

## पुलिस ने कहा- मौत बीमारी से हुई; नीतीश बोले- जो पिएगा, वो मरेगा

छपरा। बिहार के सारण में 7 लोगों की संदिग्ध हालत में मौत हुई है। परिवार वालों का कहना है कि मृतकों ने शराब पी थी। अचानक तबीयत बिगड़ने लगी। अस्पताल में इलाज के दौरान सभी ने दम तोड़ दिया। इधर पुलिस-प्रशासन मौतों के पीछे की वजह बीमारी बता रहा है। मौत के बाद पुलिस प्रशासन और उत्पाद विभाग ने ताबड़तोड़ छापेमारी की। इसमें मृतक के घर से 45 फीट की दूरी पर भारी मात्रा में शराब मिली। इस घटना के बाद रक्षा सूत्र कार्यक्रम के लिए पटना के इको पार्क पहुंचे ष्टरूनीतीश कुमार ने कहा कि हम तो पहले से कहते रहे हैं कि शराब बुरी चीज है। जो पिएगा, वो देख ले कि क्या हाल होता है। इधर, सारण में शराब से मौत पर सवाल पूछने पर पुलिस ने एक पत्रकार के साथ मारपीट की है। इसका वीडियो भी सामने आया है।
गरखा थाना क्षेत्र के मोतीराजपुर पंचायत के औढ़ा गांव में संदिग्ध हालात में एक व्यक्ति की मौत हो गई।

बाकी सभी भुवालपुर गांव के रहने वाले थे। मौत के कारणों का खुलासा नहीं सो सका है। लेकिन, ग्रामीणों का आरोप है कि जहरीली शराब के सेवन से युवक की मौत हो गई है। मामला बुधवार की शाम का है। बाकी दो मौतें अलग-अलग गांव में हुई है।

### पुलिस के खिलाफ नारेबाजी

मृतक की पहचान गड़खा के मोतीराजपुर निवासी करमुल्लाह खान के 35 वर्षीय पुत्र अलाउद्दीन खान के रूप में हुई है। मौत की सूचना मिलते ही गरखा थाने की पुलिस घटनास्थल पर पहुंची है। पुलिस मामले को दबाने के साथ तबीयत खराब होने पर मौत की बात कर रही थी। इस दौरान ग्रामीण अचानक से आक्रोशित हो गए। पुलिस से सामने विरोध में नारेबाजी करते हुए विरोध करने लगे। इसके बाद पुलिस गांव से निकल वरीय पदाधिकारी को सूचित किया गया। कई थाने की पुलिस मौके पर पहुंचकर मामले की छानबीन में जुट गई है।
छापेमारी में मृतक रामजीवन राम के घर से 45 फीट की दूरी पर खेत और जमीन में छिपाकर रखे गए दो बोरा शराब जब्त किए गए है। जिसकी मात्रा 50 लीटर है। गरखा थाना

### मृतकों के नाम

- अल्लाउद्दीन (35) गड़ख थाना के मोतीराज पुर
- रोहित सिंह(30) भाभिखन सिंह
- रामजीवन राम(50) प्रभुनाथ राम
- कामेश्वर महतो उर्फ लोहा सिंह (55) पिता देव महतो
- पप्पू सिंह (45) पिता रामा सिंह
- लालबाबू साह (62) पिता सखन साह
- हीरा राय (62) पिता कैलाश राय

अध्यक्ष रामसेवक रावत, सीओ मोहम्मद जौवाद आलम, सदर एसडीपीओ मुनेश्वर प्रसाद सिंह, पहुंच मामले के जांच मे जुटे हुए हैं। मरने वालों में 6 लोग एक गांव मढ़ौरा थाना क्षेत्र के भुवालपुर के रहने वाले है।

### दोपहर बाद बिगड़ी सेहत

मृतक गुरुवार की सुबह तक स्वस्थ था। दोपहर बाद से अचानक तबियत खराब होने लगी। दर्द बुखार की लक्षण शुरू हुई और घबड़ाहट होने लगी, स्थानीय लोग द्वारा नजदीकी गड़खा अस्पताल ले जाने के क्रम में रास्ते मे उनकी मौत हो गई। घटना के सूचना पर पुलिस पहुंचकर पूरी तरह से मामले की जांच में जुटी है। जांच के बाद कुछ स्पष्ट हो पाएगा कि आखिर मौत का कारण क्या है। जबकि, ग्रामीण मौत का कारण देशी शराब का सेवन बता रहे है। ग्रामीणों के आक्रोश के बाद गुरुवार की देर रात शव का पोस्टमार्टम कराने के लिए सदर अस्पताल ले जाया गया।

# बांदा नाव हादसा, 17 अभी भी लापता

## बीती रात से रेस्क्यू में नहीं मिली कामयाबी

एजेंसी

**बांदा।** बांदा में मरका घाट पर गुरुवार को हुए नाव हादसे में लापता 17 लोगों का अब तक पता नहीं चल पाया है। NDRF, SDRF और PAC की 78 मेंबर की टीम ने रात 11:10 बजे रेस्क्यू के लिए 'ऑपरेशन जिंदगी' शुरू किया था, जिसे रात 1 बजे रोक दिया गया था। शुक्रवार सुबह 8 बजे रेस्क्यू फिर शुरू हुआ, लेकिन दोपहर तक कोई कामयाबी हाथ नहीं लगी। इस हादसे में 15 लोग तैरकर बाहर आ गए थे।
लगातार दूसरे दिन परिजन की तलाश

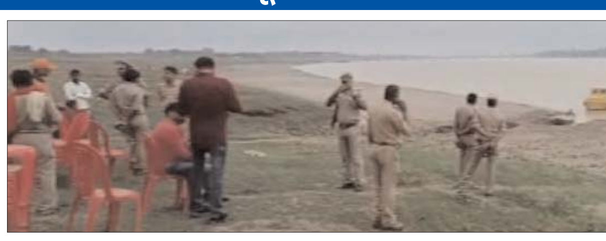

न हो पाने के बाद शुक्रवार की दोपहर गांव के लोग प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रशासन लापता लोगों को खोज नहीं पा रहा है।
2 घंटे के भीतर अगर रेस्क्यू टीम इनका पता नहीं लगा पाई, तो गांव के लोग खुद उन्हें खोज लेंगे। इसके बाद पुलिस और प्रशासन लगातार लोगों को समझाइश दे रहे हैं। NDRF, SDRF और PAC के 78 जवान 40 से 50 किमी में लापता लोगों की खोजबीन कर रहे हैं। प्रशासन ने पड़ोसी जिलों को भी अलर्ट कर दिया है। महेवा, कौशांबी, किशन पुर, फतेहपुर, चित्रकूट में जाल लगाए हैं। निगरानी बढ़ा दी गई है। गुरुवार को घटनास्थल से 500 मीटर की दूरी पर तीन शव मिले थे।
NDRF कमांडेंट नीरज मिश्रा ने बताया, पानी की गहराई 40 से 50 फीट है। अभी तक किसी की एग्जैक्ट लोकेशन का पता नहीं चल पाया है। कोई भी प्रत्यक्षदर्शी सही बात नहीं बता पा रहा है। कोई बता रहा है कि नाव नदी के बीचोंबीच पलटी है। कोई बता रहा है कि किनारे आते वक्त पलटी है, इसलिए ऑपरेशन में थोड़ी दिक्कत आ रही है। मटमौला पानी होने के चलते भी ऑपरेशन में दिक्कत आ रही है।

# दिल्ली में हथियार तस्करी करने वाला गैंग पकड़ाया

## 2000 जिंदा कारतूस के साथ 6 गिरफ्तार; पूछताछ में खुलासा- लखनऊ ले जा रहे थे खेप

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने आनंद विहार इलाके से हथियार तस्करी करने वाले गैंग के 6 लोगों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से लगभग 2000 जिंदा कारतूस सहित भारी मात्रा में गोला-बारूद बरामद हुआ है। एसीपी विक्रमजीत सिंह ने बताया कि यह खेप लखनऊ के लिए थी। शुरुआती जांच में पता चला है कि यह आपराधिक नेटवर्क का हिस्सा है। उन्होंने इस घटना के पीछे आतंकी एंगल से इंकार किया है।
स्वतंत्रता दिवस के सुरक्षा उपायों को देखते हुए दिल्ली मेट्रो स्टेशनों पर 14 अगस्त को सुबह 6 बजे से 15 अगस्त को दोपहर 2 बजे तक पार्किंग की सुविधा उपलब्ध नहीं होगी। दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन का कहना है कि मेट्रो ट्रेन सेवाएं सामान्य

समय के अनुसार चलती रहेंगी।

### दिल्ली में अलर्ट जारी

इंटेलिजेंस ब्यूरो ने 15 अगस्त को देखते हुए बुधवार अलर्ट जारी किया है। दिल्ली पुलिस को 10 पन्ने की रिपोर्ट सौंपी गई है, जिसमें स्वतंत्रता दिवस के दिन आतंकी हमला होने की आशंका जताई गई है। IB ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा जैसे आतंकी संगठन किसी हमले को अंजाम देने की साजिश रच रहे हैं। पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी ISIS ने दोनों आतंकी संगठनों के नेताओं को हमला करने के निर्देश दिए हैं।

### रिपोर्ट में उदयपुर और अमरावती में हुई हत्याओं का जिक्र

IB ने अपनी रिपोर्ट में हाल ही में हुई जापान के पूर्व PM शिंजो आबे की हत्या और उदयपुर, अमरावती की घटनाओं का जिक्र किया है। दिल्ली पुलिस को भीड़भाड़ वाली जगहों पर अलर्ट रहने को कहा गया है। लाल किले के आस-पास कड़ी सुरक्षा रखने के निर्देश भी दिए गए हैं। लाल किले में आम लोगों की एंट्री पर ज्यादा सख्ती बरतने की बात कही गई है। साथ ही IB ने पुलिस को टिफिन बम, स्टिकी बम के खतरे से निपटने के निर्देश दिए हैं।

चंडीगढ़-शिमला फोरलेन पर सवाल

# 749 करोड़ रुपए से बना एनएच पहली ही बरसात में कई जगह धंसा

**शिमला।** इंडो-तिब्बत बॉर्डर को जोड़ने वाले चंडीगढ़-शिमला नेशनल हाईवे-5 की क्वालिटी सवालों के घेरे में है। चंडीगढ़ से सोलन तक इस फोरलेन को बने सालभर ही हुआ है और यह धंसना शुरू हो गया है। मौजूदा मानसून सीजन में हिमाचल के परवाणू से लेकर सोलन के बीच यह हाईवे कई जगह से धंस चुका है।
दूसरी ओर नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया के अधिकारी इसे नेचर का प्रकोप बता रहे हैं।
करोड़ों की लागत से बने फोरलेन के पहली ही बरसात में धंसने की हिमाचल कांग्रेस अध्यक्ष प्रतिभा सिंह ने इसकी गुणवत्ता पर चिंता जाहिर की

और सरकार से इसकी गुणवत्ता की जांच करने की मांग की है।
चंडीगढ़ से शिमला के बीच फोरलेन का काम जोर-शोर से चल रहा है। हरियाणा में पिंजौर बाइपास से लेकर सोलन तक यह फोरलेन बनकर तैयार हो चुका है।
मगर मौजूदा मानसून सीजन में यह हाईवे कई जगह से धंस गया। गुरुवार को यहां सोलन और कुमारहट्टी के बीच जिस तरह फ्लाईओवर का हिस्सा धंसा, उसे देखकर हर कोई स्तब्ध है। इसके वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुए।
गुरुवार शाम लगभग 4 बजे सोलन और कुमारहट्टी के बीच शमलेच में हाईवे धंसने से वहां खड़ी 2 गाड़ियां मलबे में दब गईं।
दोनों गाड़ियों में कोई मौजूद नहीं था इसलिए जानी नुकसान होने से बच गया। इससे पहले भी हिमाचल में परवाणू से लेकर सोलन के बीच पुलिस लाइन, स्नावर, बड़ोग टनल और जाबली कोटी के बीच फोरलेन टूटता रहा है।

# यूपी के सहारनपुर से जैश का आतंकी गिरफ्तार

## नूपुर शर्मा की हत्या का मिला था टास्क, फिदायीन हमले की तैयारी में था

सहारनपुर। उत्तरप्रदेश के सहारनपुर से जैश-ए-मोहम्मद और तहरीक-ए-तालिबान, पाकिस्तान से जुड़े संदिग्ध आतंकी मोहम्मद नदीम को गिरफ्तार किया गया है। यूपी ATS की पूछताछ में आतंकी नदीम ने बताया, उसे जैश की ओर से बीजेपी से निलंबित नूपुर शर्मा की हत्या का टास्क दिया गया था।
ATS का कहना है कि सूचना मिली थी कि गांव कुंडाकलां, थाना गंगोह सहारनपुर में एक युवक जेईएम और टीटीपी की विचारधारा से प्रभावित होकर फिदायीन हमले की तैयारी कर रहा है। जिसके बाद युवक को पकड़ा गया। पूछताछ के बाद उसके मोबाइल को जब्त कर लिया गया है। 8 अगस्त

को ATS ने नदीम और उसके भाई तैमूर को पकड़कर ले गई थी। तैमूर भी अभी ATS की गिरफ्त में है।
जांच पड़ताल में पता चला है कि आतंकी की पाकिस्तान में दो बुआ रहती हैं। यह रिश्तेदारी की आड़ में ट्रेनिंग लेने पाकिस्तान जाना चाहता था। नदीम के पांच भाई और दो बहनें हैं। पढ़ा-लिखा नहीं है। पूरा परिवार किसान है। नदीम मूलरूप से सरसावा के गांव ढिक्का कला का रहने वाला है। उसके पास 50 बीघा कृषि भूमि है।

### सीरिया और अफगानिस्तान जाने की थी प्लानिंग

UP ATS के अधिकारी ने बताया, आतंकी मोहम्मद नदीम तहरीक-ए-तालिबान आतंकी संगठन के सैफुल्ला (पाकिस्तानी) से फिदायीन हमले की तैयारी करने के लिए सोशल मीडिया के जरिए ट्रेनिंग ले रहा था।
उन्होंने बताया, वह किसी सरकारी भवन या पुलिस परिसर पर फिदायीन हमला करने की फिराक में था। नदीम को अफगानिस्तान और पाकिस्तान में सक्रिय जैश-ए-मोहम्मद और तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान के आतंकवादी स्पेशल ट्रेनिंग देने के लिए पाकिस्तान बुला रहे थे। वह मिस्र के जरिए सीरिया और अफगानिस्तान जाने की भी योजना बना रहा था।

### मोबाइल से मिले अहम सुराग

UP ATS की पूछताछ में पता चला कि नदीम JEM और TTP की विचारधारा से प्रभावित होकर फिदायीन हमले की तैयारी कर रहा था। आतंकी के मोबाइल से एक PDF भी मिला है, जिसका शीर्षक एक्सप्लोसिव कोर्स फिदायी फोर्स है। उसके फोन से पाकिस्तान और अफगानिस्तान के JEM और TTP के आतंकियों के साथ चैट के अलावा वॉयस मैसेज भी मिले हैं।

### 3 दिन पहले आजमगढ़ से पकड़ा गया था आतंकी सबाउद्दीन

इससे पहले, आजमगढ़ से एटीएस ने आईएसआईएस आतंकी सबाउद्दीन आजमी को नौ अगस्त को गिरफ्तार किया था। एटीएस के मुताबिक, सबाउद्दीन की साजिश स्वतंत्रता दिवस के पहले धमाके की थी। सबाउद्दीन आईएसआईएस के रिक्रूटर से सीधे संपर्क में था। एटीएस ने उससे IED बनाने का सामान भी बरामद किया था।

बाहुबली पर शिकंजा

## 2 साल में 52 बार में जब्त हुई बाहुबली की 300 करोड़ की प्रॉपर्टी

# अतीक अहमद की 25 करोड़ की 6 बीघा जमीन कुर्क

एजेंसी

कौशांबी। कौशांबी में प्रयागराज के बाहुबली पूर्व सांसद अतीक अहमद की 25 करोड़ से अधिक की संपत्ति पर कुर्की की कार्यवाही शुक्रवार दोपहर कराई गई। करीब 1.4602 हेक्टेयर (लगभग 6 बीघे) भूमि को प्रयागराज पीडीए व चायल के SDM की मौजूदगी में पुलिस ने कुर्की का आदेश पढ़ कर सुनाया।
बताते चलें कि सितंबर 2020 से लेकर अब तक अतीक अहमद और उनके सहयोगियों की 300 करोड़ की संपत्ति कुर्क की जा चुकी है।
कौशांबी और प्रयागराज के बार्डर पर

रसूलपुर उर्फ़ कोइलहा में पूर्व सांसद अतीक अहमद की 25 करोड़ से अधिक की संपत्ति को गिरोह बनाकर अर्जित किया था। स्क्वसिटी दिनेश सिंह ने बताया, कौशांबी के कोइलहा गांव स्थित यह भूमि करीब 6 बीघे है। इसकी जानकारी कोतवाली प्रभारी को केस नंबर 200/2020 में गैंगस्टर की विवेचना के दौरान सामने आई।
उन्होंने बताया, प्रयागराज के जिला मजिस्ट्रेट ने चायल SDM से भूमि के दस्तावेज तलब कर जांच कराई। जिला मजिस्ट्रेट प्रयागराज संजय खत्री ने 6 अगस्त को जारी आदेश में अतीक अहमद के कोइलहा स्थित संपत्ति को कुर्क करने का आदेश दिया। जिसके अनुपालन में शुक्रवार को सरकार का बोर्ड लगा कर आम जन को कार्यवाही के संबंध में जानकारी दी गई।

### मुनादी करा कर हुई कुर्की की कार्रवाई

आदेश के अनुपालन में शुक्रवार की दोपहर करीब 2 बजे प्रयागराज की पूरामुफ्ती पुलिस, पीडीए के अधिकारी, चायल स्ष्ठरूमनीष यादव सहित भारी पुलिस बल जीटी रोड स्थित पूर्व सांसद अतीक की भूमि पर सरकार का बोर्ड लगा कर उसे कुर्क कर लिया।इस दौरान पूरामुफ्ती के कोतवाल ने कुर्की की कार्यवाही में जिला मजिस्ट्रेट के आदेश को पढ़ कर सुनाया। इस दौरान परंपरागत तरीके से ढोल बजा कर स्थानीय लोगों को सरकार की कब्जे में ली गई संपत्ति पर अवैध कब्जे के लिए आगाह किया।

### अब तक 300 करोड़ की संपत्ति हुई जब्त

प्रयागराज के पूर्व सांसद व बाहुबली अतीक अहमद पर शुक्रवार को हुई कार्यवाही मिलाकर अब तक 300 करोड़ से अधिक की संपत्ति जब्त की गई है।
पुलिस अधिकारियों के मुताबिक सितंबर 2020 से अब तक अतीक अहमद और उनके सहयोगियों के ऊपर 52 कार्यवाही हो चुकी है। इसमें से अकेले अतीक अहमद पर 45 कार्यवाही हुई है।

# दिल्ली और ओडिशा में सबसे ज्यादा कोरोना के सक्रिय मामले बढ़े

एजेंसी

नयी दिल्ली। पिछले 24 घंटों के दौरान देश के सात राज्यों तथा केंद्र शासनित प्रदेश में कोरोना वायरस के सक्रिय मामले में बढ़े हैं। इनमें से सबसे ज्यादा राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 635 तथा ओडिशा में 529 रोगी बढ़े हैं।
केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने शुक्रवार को यहां बताया कि सुबह सात बजे तक दो अरब 7 करोड़ 47 लाख 19 हजार 34 टीके दिये जा चुके हैं। मंत्रालय ने बताया कि पिछले 24 घंटों में कोविड संक्रमण के 16 हजार 561 नये मरीज सामने आये हैं। इनके साथ ही देश में कोरोना रोगियों की संख्या एक लाख 23 हजार 535 हो गयी है। यह संक्रमित मामलों का 0.28 प्रतिशत है। दैनिक संक्रमण दर 5.44 प्रतिशत हो गयी है।
मंत्रालय ने बताया कि इसी अवधि में 18 हजार 53 लोग कोविड से मुक्त हुए हैं। अभी तक कुल चार करोड़ 35 लाख 73 हजार 94 रोगी कोविड से उबर चुके हैं। स्वस्थ होने की दर 98.53 प्रतिशत है।
देश में पिछले 24 घंटे में तीन लाख 4 हज़ार 189 कोविड परीक्षण किए गये हैं। देश में कुल 87 करोड़ 85 लाख 37 हजार 440 कोविड परीक्षण किए हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में कोरोना सक्रिय मामले 635 बढ़ने से इसकी कुल संख्या 8840 हो गयी और इससे निजात पाने वालों की संख्या 1943069 हो गयी है। इस महामारी से छह और मरीजों की जान जाने से मृतकों का आंकड़ा बढ़कर 26357 हो गया है।
हरियाणा में कोरोना सक्रिय मामले 145 बढ़ने से इसकी कुल संख्या 4922 हो गयी और इससे निजात पाने वालों की संख्या 1024364 हो गयी है। राज्य में मृतकों का आंकड़ा 10651 है। पंजाब में पिछले 24 घंटों में कोरोना के 407 सक्रिय मामले बढ़ने इसकी संख्या 13660 हो गयी है।

## शार्ट न्यूज

### अनंतनाग में आतंकवादी हमला, पुलिसकर्मी घायल

श्रीनगर। जम्मू कश्मीर के अनंतनाग जिले में शुक्रवार को अन्य आतंकवादी हमले में एक पुलिसकर्मी घायल हो गया। आधिकारिक जानकारी के अनुसार आतंकवादियों ने आज दोपहर अनंतनाग के बिजबेहरा में पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की संयुक्त मोबाइल जांच चौकी पर गोलीबारी की। एक पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि हमले में एक पुलिस कर्मी घायल हो गया, जिसे तुरंत इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। घटना के तुरंत बाद बड़ी संख्या में संयुक्त बलों ने हमलावरों का पता लगाने के लिए इलाके की घेराबंदी कर दी और तलाशी अभियान छेड़ा है। स्वतंत्रता दिवस समारोह से पहले कश्मीर में पिछले 13 घंटों में यह दूसरा आतंकवादी हमला है। इससे पूर्व बांदीपोरा जिले में गुरुवार और शुक्रवार की दरमियानी रात एक गैर स्थानीय मजदूर की गोली मारकर हत्या कर दी गयी थी।

### 'हर घर तिरंगा' रैली को सिन्हा ने दिखाई हरी झंडी

श्रीनगर। जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने शुक्रवार को यहां डल झील पर 'हर घर तिरंगा' रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर को चिह्नित करने के लिए झील पर तिरंगा फहराने वाले सैकड़ों शिकारे एक साथ कतार में खड़े थे। रैली की शुरुआत पुलिस पाइप बैंड द्वारा राष्ट्रगान से हुई। उपराज्यपाल ने कहा,तिरंगा उत्सव देश के आदर्शों और आकांक्षाओं का उत्सव है।

### बांदीपोरा में प्रवासी श्रमिक की गोली मारकर हत्या

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के बांदीपोरा जिला में प्रवासी श्रमिक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि बांदीपोरा के सदुनारा अजस में गुरुवार और शुक्रवार की दरमियानी रात को एक अज्ञात आतंकवादी ने बिहार में मधेपुरा के बेसरह निवासी 19 वर्षीय अमरेज को करीब से गोली मार दी। पुलिस के एक अधिकारी ने कहा, घायल अवस्था में अमरेज को अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्होंने दम तोड़ दिया। यह घटना रात करीब एक बजे की है।

### कोलकाता में अंतरराष्ट्रीय सी फूड शो अगले वर्ष फरवरी में

कोलकाता। देश की सीफूड सेक्टर में जबरदस्त प्रगति के सभी आयामों को दर्शाने के लिए यहां आगामी वर्ष फरवरी में भारतीय अंतरराष्ट्रीय सीफूड शो का 23वां आयोजन किया जायेगा। समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण(एमपीडा) और भारतीय सीफूड निर्यातक संघ (एसईएआई) के साथ मिलकर बिस्व बंगाल मेला ग्राउंड में तीन दिन की प्रदर्शनी का आयोजन 15 से 17 फरवरी-2023 तक किया जायेगा। एमपीडा के चेयरमैन के एन राघवन ने कहा कि आईआईएसएस देश के निर्यातकों को समुद्री उत्पाद के विदेश खरीदारों से मिलने का एक मंच प्रदान करेगा। इसके साथ ही यह उत्पादकों और आपूर्तिकर्ताओं को अपने उत्पाद के प्रदर्शन और उनके काम में इस्तेमाल होने वाली मशीनरी, प्रोसेसिंग साजोसामान और कोल्ड चेन सिस्टम से जुडे सौदों को करने का अवसर भी प्रदान करेगा। कार्यक्रम में देश और दुनिया भर के इस क्षेत्र से जुडे प्रोसेसर्स, खरीदार और शेयरधारक हिस्सा लेंगे। इसके अलावा विभिन्न देशों से खरीदारों के सीफूड प्रोसेसिंग और मूल्य संवर्धन के क्षेत्र में परस्पर सौदों भी किये जाने की योजना है। वर्ष 2021-22 में भारत ने दुनिया को 13 लाख 69 हजार 264 टन समुद्री उत्पाद का निर्यात किया, जो मात्रात्मक रूप से अब तक का सर्वाधिक निर्यात था अगले पाच वर्षों में निर्यात से होने वाली आय 15 बिलियन डॉलर को पार कर सकती है।

### केसीआर के आवास पर आयोजित रक्षा बंधन समारोह

हैदराबाद। तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव के यहां स्थित सरकारी आवास प्रगति भवन में शुक्रवार को रक्षा बंधन समारोह मनाया गया। राखी के पर्व पर प्रेम, स्नेह और भाईचारे के भाव उमड़ पड़ते हैं। कुछ ऐसा ही माहौल मुख्यमंत्री आवास में भी देखने को मिला जब केसीआर की पत्नी शोभम्मा ने अपनी भाभी को पारंपरिक तरीके से आमंत्रित किया और घर में हर्षोल्लास का माहौल रहा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री की बड़ी बहनों ललितम्मा, लक्ष्मीम्मा, जयम्मा और छोटी बहन विनोदम्मा ने केसीआर को राखी बांधी और रक्षा बंधन मनाया। केसीआर ने भी सभी बहनों का अभिवादन किया और आशीर्वाद लिया। मुख्यमंत्री के पोते और पोती (मंत्री के टी रामाराव के बेटे और बेटी) भी रक्षा बंधन समारोह में शामिल हुए। श्री रामाराव की बेटी लेख्या ने अपने भाई हिमांशु को राखी बांधी। इस मौके पर केसीआर और शोभम्मा ने अपने पोते और पोती को आशीर्वाद दिया। समारोह में शामिल हुए अन्य बुजुर्गों ने भी बच्चों को आशीर्वाद दिया। मुख्यमंत्री कार्यालय से जारी विज्ञप्ति में कहा गया कि इस अवसर पर केटीआर और उनकी पत्नी शैलिमा और अन्य ने समारोह में भाग लिया।

### तमिलनाडु पांचवा हाथी संरक्षित क्षेत्र घोषित

चेन्नई। केन्द्र सरकार ने तमिलनाडु के दक्षिणी तिरुनेलवेली जिले में अगथियामलाई क्षेत्र को राज्य के हाथी के लिए पांचवे संरक्षित क्षेत्र के रूप में घोषित किया है। विश्व हाथी दिवस के अवसर पर की गयी इस घोषणा पर मुख्यमंत्री एम.के.स्टालिन ने प्रसन्नता व्यक्त की है। श्री स्टालिन ने ट्वीट में कहा, विश्व हाथी दिवस 2022 पर, मुझे खुशी है कि तमिलनाडु तिरुनेलवेली जिले के अगथियामलाई में अपना 5वां हाथी अभ्यारण्य प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा , हाथी वन पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशाल स्तनधारी जीव प्रकृति की संपत्ति हैं जिनका हमें हर कीमत पर संरक्षण करना चाहिए।

### भीलवाड़ा में नगरपरिषद ने निकाली तिरंगा यात्रा

भीलवाड़ा। राजस्थान के भीलवाड़ा शहर में अमृत महोत्सव को लेकर आज नगर परिषद द्वारा निकाली गई विशाल तिरंगा यात्रा से शहर पूरी तरह देशभक्ति के रंग में डूबा हुआ नजर आया। यात्रा में देशभक्ति के गीतों के बीच आज हर कोई झूमता दिखा। जहां जहां से तिरंगा यात्रा गुजरी वहां लोगों ने गर्मजोशी के साथ इसका स्वागत किया। समापन से कुछ पहले तेज बारिश शुरू हो गई जो भी तिरंगा लेकर चल रहे लोगों को अपने पथ से डिगा नहीं सकी। वहीं वापस नगर परिषद पहुंची तिरंगा यात्रा के बाद वहां बरसात में ही विधायक विठ्ठलशंकर अवस्थी, सभापित राकेश पाठक, महिला पार्षद और अन्य लोग देशक्ति गीतों पर थिरकते नजर आये। नगर परिषद परिसर से अपराह्न तीन बजे बाद तिरंगा यात्रा बैण्ड बाजों के साथ सभापति राकेश पाठक और पुलिस उपाधीक्षक नरेन्द्र दायमा के झण्डी दिखाने के साथ रवाना हुई। यात्रा में करीब 1800 लोग शामिल हुए है। जिनके हाथों में तिरंगा लहराता हुआ एक अलग ही देश भक्ति का नजारा पेश कर रहा था। नगर परिषद से रवाना हुई यह तिरंगा यात्रा शहर के मुख्य मुख्य मार्गों से होकर गुजरी। इस यात्रा में पुलिस बैंड के साथ ही तीन बैंड, पांच घोड़े भी शामिल थे।

### अपहृत व्यापारी को ढुंढने की मांग को लेकर व्यापार महासंघ ने पुलिस अधीक्षक को दिया ज्ञापन

अलवर। राजस्थान के अलवर में जिला संयुक्त व्यापार महासंघ ने जिला पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन देकर शहर में 48 घंटे से लापता स्क्रैप व्यापारी मंगत अरोड़ा को ढुंढने की मांग की गई। इस दौरान अलवर जिला सयुक्त व्यापार महासंघ से जुड़े पधाधिकारी एवं व्यापारी मोजूद थे। अलवर जिला संयुक्त व्यापार महासंघ के पूर्व जिला अध्यक्ष राज कुमार गोयल ने बताया कि शहर के स्क्रैप व्यापारी मंगत अरोड़ा पिछले तीन दिन से लापता है जिसका अभी तक पुलिस को कोई सुराग नहीं लग पाया है। मंगल अरोड़ा के भाई गोवर्धन अरोड़ा ने गुमशुदगी की रिपोर्ट कोतवाली थाने में दर्ज करवाई है। उसके बाद शहर कोतवाली थाना पुलिस ने व्यापारी को ढूंढने के लिए एक टीम गठित की और टीम व्यापारी के भाई गोवर्धन के साथ हरियाणा के रेवाड़ी पहुंची जहां मंगत अरोड़ा अपने सामान का पैसा लेने के लिए जिस व्यापारी के पास गया था उस व्यापारी से भी पुलिस टीम ने पूछताछ की है।

# 15 अगस्त पर कड़ी सुरक्षा की दरकार, भारत से कनाडा तक अलर्ट हुई सरकार

नई दिल्ली। 75वें स्वतंत्रता दिवस पर भारत सुरक्षा में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। खबर है कि भारत सरकार ने पहली बार कनाडा में भी स्वतंत्रता दिवस पर सुरक्षा के पर्याप्त इंतजार करने के लिए कहा है। कनाडा में इंडो-कनाडाई समुदाय की तरफ से 15 अगस्त पर कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इधर, भारत में भी सुरक्षा के मद्देनजर पुलिस अलर्ट मोड पर है। हाल ही में ढ्क्कने अलर्ट जारी किया था।

राजधानी ओटावा में भारतीय उच्चायोग ने कनाडा के ग्लोबल अफेयर्स को यह जानकारी दे दी है। खास बात है कि कोविड-19 के चलते 2019 के बाद पहली बार व्यक्तिगत उपस्थिति के साथ 15 अगस्त को मनाने की तैयारियां की जा रही हैं। एक वरिष्ठ अधिकारी ने जानकारी दी है कि यह पहली बार है जब भारत ने स्वतंत्रता दिवस के लिए सुरक्षा अनुरोध का दायरा बढ़ाया है।

अधिकारी ने बताया कि कनाडा के नागरिक इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करते हैं, लेकिन बड़ी संख्या में भारतीय नागरिकों की मौजदूगी चिंता का विषय है। उन्होंने कहा, हम इसे कनाडा का आंतरिक मामला मानते हैं, लेकिन हम कनाडा की अथॉरिटीज को उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कहते हैं।

#### क्या खालिस्तान का है एंगल?

भारतीय अधिकारियों का कहना है कि खालिस्तान और पकिस्तान कश्मीरी समर्थक ऐसे कार्यक्रमों में खलल डालने की योजना बना रहे हैं। बीते साल भी एक नॉन प्रॉफिट पैनोरमा इंडिया ने टोरंटो में 15 अगस्त को कार्यक्रम आयोजित किया था, लेकिन उस दौरान प्रदर्शनकारियों की तरफ से परेशानी खड़ी करने की बातें सामने आई थीं।

इस साल पैनोरमा इंडिया की तरफ से टोरंटो में इंडिया डे परेड निकाली जाएगी, जिसमें अलग-अलग राज्यों और समुदायों की झांकियां शामिल होंगी। साल 2019 में हुए इस कार्यक्रम में भारतीय मूल के 50 हजार से ज्यादा लोग शामिल हुए थे। ब्रिटिश कोलंबिया में भारतीय-कनाडाई समूह बड़ी कार रैली की योजना बना रहे हैं।

## असम में चिटफंड घोटाला मामले में सीबीआई ने दायर किये आरोपपत्र

गुवाहाटी। केंद्रीय जांच ब्यूरो(सीबीआई) ने असम में चिटफंड घोटाले के तहत 23.87 करोड़ के धन के दुरूपयोग मामले में दूसरे अनुपूरक आरोप पत्र दायर किये हैं। अतिरिक्त सत्र न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत में तत्कालीन प्रबंध निदेशक और कंपनी के निजी ग्रुप के तीन निदेशकों के खिलाफ आरोपपत्र दायर किये गये हैं। मामले में प्रबंध निदेशक चंदन दास, जीवन सुरक्षा कंपनी ग्रुप के निदेशक अरजू अचर्जी, अशोक चक्रवर्ती और उत्तम अचर्जी को आरोपी बनाया गया है। असम सरकार के अनुरोध पर सीबीआई ने जनवरी 2016 में मामला दर्ज कर जांच अपने हाथ में ली थी। असम पुलिस ने भी आरोपपत्र दायर किया था। जांच के दौरान पाया गया कि षड़यंत्र के आरोपियों ने लोगों को धोखा देने के मकसद से ही कंपनी बनायी थी और सभी कंपनी के निदेशक बन बैठे थे। सीबीआई ने अपने बयान में कहा कि आरोपियों ने मिलकर असम के बारपेटा जिले से बड़े पैमाने पर लोगों से पैसा एकत्र किया। इन सभी पर आरोप है कि लोगों के पैसे 23 करोड़,87 लाख 76 हजार 140 का इस्तेमाल इन आरोपियों ने अपने व्यक्तिगत खर्च के लिए किया।

सीबीआई ने दिसंबर 2018 में कंपनी के डायरेक्टर और तीन अन्य कंपनियों के निदेशकों के खिलाफ पहले अनुपूरक आरोप पत्र दायर किये थे।

### तेज रफ्तार कार ने मजदूर को रौंदा

जींद। हरियाणा के जींद जिले के अमरहेड़ी गांव के निकट तेज रफ्तार कार ने सडक़ किनारे खड़े मजदूर को रौंद दिया तथा एक बाइक को टक्कर मार दी जिससे एक मजदूर की मौत हो गई तथा बाइक सवार घायल हो गया। सदर थाना पुलिस ने मृतकों के शवों का सामान्य अस्पताल में पोस्टमार्टम करवा परिजनों को सौंप दिया है। गांव बोसी जिला आरिया (बिहार) निवासी पप्पू तथा उसका भतीजा मटरू गांव अमरहेड़ी के निकट सडक़ पार करने के इंतजार में खड़े थे। उसी दौरान नरवाना की तरफ से आई तेज रफ्तार कार ने पप्पू को टक्कर मार दी और उसे रौंदता हुआ निकल गया। घटना स्थल से कुछ दूरी पर एक बाइक को भी टक्कर मार दी। घटना को अंजाम देकर चालक कार को मौके पर छोड़ कर फरार हो गया। बाइक सवार युवक की पहचान शिवपुरी कालोनी निवासी मनोज के रूप में हुई। घायल पप्पू तथा बाइक सवार मनोज को उपचार के लिए सामान्य अस्पताल लाया गया जहां चिकित्सकों ने पप्पू को मृत घोषित कर दिया जबकि मनोज की पीजीआई रोहतक में उपचार के दौरान मौत हो गई। मृतक के भतीजे मटरू ने बताया कि वह अपने चाचा के साथ खेतों में मजदूरी करता था। दोनों मजदूरी करने के लिए सडक़ पार करने का इंतजार कर रहे थे। उसी दौरान तेज रफ्तार कार ने उसके चाचा को टक्कर मार दी और रौंदता हुआ निकल गया। कुछ दूरी पर जाकर उसी कार ने बाइक सवार को भी टक्कर मार दी, जिसमें उसके चाचा तथा बाइक सवार व्यक्ति की मौत हो गई। सदर थाना पुलिस ने दोनों मृतकों के शवों का पोस्टमार्टम करा परिजनों को सौंप दिया है। सदर थाना के जांच अधिकारी महेंद्र ने बताया कि फरार कार के चालक खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है। कार ने पहले मजदूर को फिर बाइक सवार को टक्कर मारी थी। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

## चुनाव में 'रेवड़ी कल्चर' पर रोक लगाने की कवायद तेज

**11 सदस्यीय कमेटी बनाने की तैयारी में केंद्र**

नई दिल्ली। केंद्र ने चुनाव लड़ने के लिए मुफ्त उपहार संस्कृति पर चिंता जताई है। सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में कहा कि अगर कुछ राजनीतिक दल यह समझते हैं कि जन कल्याणकारी उपायों को लागू करने का यही एकमात्र तरीका है तो यह त्रासदी की ओर ले जाएगा। सरकार ने इसे लेकर 11 सदस्यीय कमेटी बनाने की सलाह दी है।

इस पैनल में केंद्रीय वित्त सचिव, राज्यों के वित्त सचिवों, मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के एक-एक प्रतिनिधि, 15वें वित्त आयोग के अध्यक्ष, भारतीय रिजर्व बैंक के एक प्रतिनिधि और नीति आयोग के सीईओ को शामिल किया जा सकता है। इसमें राष्ट्रीय करदाता संगठन के एक प्रतिनिधि या भारत के पूर्व नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक भी शामिल हो सकते हैं। फिक्की और सीआईआई जैसे वाणिज्यिक संगठनों के प्रतिनिधियों और बिजली क्षेत्र की वितरण कंपनियों के प्रतिनिधियों को भी इस समिति का सदस्य बनाया जा सकता है।

#### 'राष्ट्रीय हित में दिशानिर्देश जारी करे सुप्रीम कोर्ट'

केंद्र सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि जब तक विधायिका या निर्वाचन आयोग कोई कदम नहीं उठाता, तब तक कोर्ट को राष्ट्रीय हित में यह दिशानिर्देश जारी करना चाहिए कि राजनीतिक दलों को क्या करना है, क्या नहीं।

मेहता ने कहा, हाल ही में कुछ पार्टियों की ओर से मुफ्त उपहारों के वितरण के आधार पर चुनाव लड़ा जाता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि देश के चुनावी परिप्रेक्ष्य में कुछ दल समझते हैं कि मुफ्त उपहारों का वितरण ही समाज के लिए कल्याणकारी उपायों का एकमात्र तरीका है। यह समझ पूरी तरह से अवैज्ञानिक है और इससे आर्थिक त्रासदी आएगी।

#### '...ऐसे में चुनाव चिह्न को छीन लेने का भी बने नियम'

सुप्रीम कोर्ट वकील अश्विनी उपाध्याय की ओर से दायर एक जनहित याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें चुनाव के दौरान मुफ्त उपहार का वादा करने वाले राजनीतिक दलों को रोकने की मांग की गई है। साथ ही चुनाव आयोग से उनके चुनाव चिह्नों को छीन लेने और उनका पंजीकरण रद्द करने के लिए अपनी शक्तियों के इस्तेमाल के लिए भी कहा गया है।

## आंध्र में गोदावरी, कृष्णा नदियां उफान पर, बाढ़ के पानी में कई गांव डूबे

विजयवाड़ा। आंध्र प्रदेश के डोवलेस्वरम में सर आर्थर कॉटन बैराज में भारी बारिश के मद्देनजर गोदावरी और कृष्णा नदियां ऊपरी जलग्रहण क्षेत्रों से भारी प्रवाह के कारण उफान पर हैं और चेतावनी संकेत दो जारी किए गए हैं।

गोदावरी नदी में बाढ़ की स्थिति गंभीर है क्योंकि जल स्तर बढ़ रहा है। दोवलेस्वरम बैराज में जलस्तर 15 फीट था और सभी शिखा के फाटकों को उठाकर लगभग 14.70 लाख क्यूसेक पानी समुद्र में छोड़ा जा रहा है। इस बीच कोनसीमा जिले के आईनावल्ली, एडुरुबेडे व पी गन्नावरम के कई गांव गोदावरी बाढ़ के पानी से घिरे हुए हैं। के येनुगुपल्ली लंका, शिवयालाना, पुचायाकलालंका और मानेपालीपलेम सहित विभिन्न गांवों से सड़क संपर्क बाधित होने से बाढ़ के पानी में कई कारण जलमग्न हो गए। गाँव से बाहर आने के लिए ग्रामीण देशी नावों का प्रयोग कर रहे हैं।

अल्लूरी सीताराम राजू जिले के चिंतूर गांव में ग्रामीणों ने आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध कराने में अधिकारियों की उदासीनता के खिलाफ घुटने भर बाढ़ के पानी में खड़े होकर विरोध प्रदर्शन किया।

किसानों ने मीडिया को बताया कि चूंकि उनके गांव गोदावरी बाढ़ के पानी से घिरे हुए थे, इसलिए उन्हें अपने मवेशियों को खिलाने के लिए चारा लेने के लिए खंभों पर जाने के लिए मजबूर होना पड़ा।

पश्चिम गोदावरी जिले में गोदावरी नदी के बाढ़ के पानी से अचंता और येलमंचिली मंडल के कई द्वीप गांव डूब गए। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीमों को राहत कार्यों के लिए बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में तैनात किया गया है।

उल्लेखनीय है कि गोदावरी नदी में आई भारी बाढ़ ने पिछले महीने करीब 10 दिन तक तबाही मचाई थी। राहत शिविरों में रहने वाले बाढ़ पीड़ित कुछ दिन पहले ही अपने गांवों के लिए रवाना हुए और अधिकारियों ने उन्हें अपने गांवों को छोड़ फिर से सुरक्षित स्थानों पर जाने के लिए कहा।

### ससुर के साथ आई महिला पुत्र के साथ लापता

जींद। हरियाणा में जींद जिले के बिघाना गांव में अपने ससुर तथा पुत्र के साथ आई एक महिला पुत्र के साथ संदिग्ध हालात में गायब हो गई। अलेवा थाना पुलिस ने महिला के ननदोई की शिकायत पर अज्ञात लोगों के खिलाफ बंधक बनाने का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। बिघाना गांव निवासी एक व्यक्ति ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसके साले की पत्नी, ससुर तथा उनका पांच साल का पुत्र रक्षा बंधन पर झज्जर से गांव बिघाना आए थे। कल रात महिला तथा उसका पुत्र घर से गायब हो गए। तलाशने तथा पूछताछ करने पर उसका कोई सुराग नहीं लगा। अलेवा थाना पुलिस ने व्यक्ति की शिकायत पर अज्ञात लोगों के खिलाफ बंधक बनाने का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

## कर्नाटक : ईदगाह मैदान को लेकर जारी तनाव के बीच पुलिस ने किया फ्लैग मार्च

बेंगलुरु। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु स्थित ईदगाह मैदान को लेकर दो समुदाय के बीच जारी तनाव के बीच पुलिस ने स्थिति पर नियंत्रण बनाये रखने के लिए मैदान पर शुक्रवार को फ्लैग मार्च किया।

शहर में ईदगाह मैदान को लेकर राजस्व मंत्री आर अशोक द्वारा किये गये दावे में इस जमीन को राजस्व विभाग की जमीन बताये जाने के बाद विवाद शुरू हुआ दूसरी ओर वक्फ बोर्ड भी इस जमीन पर अपनी दावेदारी करता है।

इस विवाद को और हवा कांग्रेसी विधायक जमीर अहमद खान ने विवादित ईदगाह मैदान की यात्रा करके और इसके बाद मीडिया में बयान जारी कर दी जिसमें उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता दिवस के दिन इस जगर पर तिरंगा फहराये जाने के अलावा किसी अन्य कार्यक्रम जैसे गणेश पूजा आदि की इजाजत नहीं दी जायेगी। इसके बाद विश्व सनातन परिषद भी विवाद में कूद पड़ी और इसके अध्यक्ष एस भास्करन ने कहा कि श्री खान केवल विधायक हैं वह सरकार का हिस्सा नहीं हैं जो इस तरह के बयान दे रहे हैं।

श्री भास्कर ने कहा कांग्रेस के विधायक अगर इस तरह के गैर जिम्मेदाराना बयान देंगे तो ईदगाह मैदान पर हम हर दिन गणेश पूजा शुरू कर देंगे।

उन्होंने यह भी कहा , वक्फ बोर्ड को किबला की दीवार को स्वंय ही गिरा देना चाहिए अन्यथा सरकार इसे गिरा देगी। अगर सरकार भी ऐसा नहीं करती है तो छह दिसंबर को बाबरी मस्जिद विवादित ढांचा गिराये जाने की तिथि वाले दिन ही हम इस दीवार को गिरा देंगे।

## जबरन धर्मांतरण को सख्त बनाने के लिए विधानसभा में विधेयक पेश

शिमला। हिमाचल प्रदेश विधानसभा में शुक्रवार को धर्म स्वतंत्रता संशोधन विधेयक 2022 पेश किया जबरन सामूहिक धर्मांतरण को अपराध की श्रेणी में रखते हुये कड़े प्रावधान किए जा सकें। विधेयक में एक प्रावधान है कि यदि दो या दो से अधिक व्यक्तियों का धर्म परिवर्तन किया गया है तो इसे सामूहिक धर्मांतरण माना जाएगा।

इस संशोधन विधेयक पर 13 अगस्त को सदन में चर्चा होगी। यह मूल अधिनियम में डाला गया है कि जो कोई भी सामूहिक धर्मांतरण के संबंध में धारा 3 के प्रावधानों का उल्लंघन करता है, उसे एक अवधि के लिए कारावास से दंडित किया जाएगा, जो पांच साल से कम नहीं होगा, लेकिन जिसे 10 साल तक बढ़ाया जा सकता है और जुर्माने के लिए भी उत्तरदायी होगा जो एक लाख रुपये से कम नहीं होगा, लेकिन जो एक लाख पचास हजार रुपये तक हो सकता है।

इस धारा में उल्लेखित दूसरे या बाद के अपराध के मामले में, कारावास की अवधि सात साल से कम नहीं होगी, लेकिन 10 साल तक बढ़ सकती है और जुर्माना भी होगा जो कि कम से कम नहीं होगा एक लाख पचास हजार रुपये जो दो लाख रुपये तक हो सकता है।

### रक्षाबंधन पर रोपे 25 हजार पौधे

भोपाल। रक्षाबंधन के अवसर पर 25 हजार लोगों ने अंकुर अभियान में पौधरोपण कर 'अंकुर-वायुदूत एप' पर प्रथम फोटो अपलोड की। आधिकारिक जानकारी के अनुसार इस दिन सर्वाधिक 2 हजार 98 पौधरोपण सीधी जिले में, 17 सौ से अधिक सिंगरौली, 16-16 सौ से अधिक बैतूल और हरदा, 13 सौ से अधिक विदिशा और 11-11 सौ से अधिक खरगोन, मंडला एवं शहडोल जिलों में प्रथम फोटो अपलोड की गयी। अंकुर अभियान में अब तक 13 लाख 54 हजार से अधिक लोगों ने पंजीयन कराया है।

## बेतवा नदी में बही महिला को सुरक्षित बचाया गया

**एजेंसी**

विदिशा। मध्यप्रदेश के विदिशा जिले में एक महिला पुल पार करते समय मोटर साइकिल के फिसल जाने से बेतवा नदी में बह गयी, जो काफी दूर बह गयी, जिसे सुरक्षित रेक्स्यू कर बाहर निकाल लिया गया है। महिला को अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी हालत खतरे से बाहर बतायी जा रही है। पुलिस सूत्रों के अनुसार सोनम दांगी निवासी ग्राम खजूरिया थाना कुरवाई कल अपने भाई के साथ अपने मायके ग्राम पडरिया जा रहीं थी, रात्रि करीब 8 बजे बेतवा नदी बरींघाट पुल से मोटर साइकिल फिसलकर बेतवा नदी में गिर और काफी दूर बह गई। तलाश करने पर रात्रि 11 बजे बेतवा नदी के गंज स्थित निर्माणाधीन पुल के एक पिलर में लगे हुए लोहे के सरियों के बीच पायी गयी। सूचना प्राप्त होने पर रात्रि 2 बजे से रेस्क्यू अभियान प्रारंभ किया गया, परन्तु बेतवा नदी में बाढ़ एवं अत्यधिक बहाव के कारण रेस्क्यू वोट वहां तक नहीं पहुंच पा रही थी।

इसके बाद रात्रि करीब साढ़े चार बजे पांचवे प्रयास में वोट एवं उसके साथ पांच तैराक वहां तक पहुंच गये। महिला को लाइफ जैकेट पहनाकर जब वहां से रेस्क्यू कर लाने लगे, तब तेज बहाव के कारण होमगार्ड की मोटर वोट पलट गयी, जिसमें सभी 5 जवान एवं महिला नदी में बह गये। चूंकि सभी जवान तैराक थे एवं लाइफ जैकेट पहने थे, इसलिए नीचे लगभग एक किलोमीटर नदी के दोनों किनारों पर सुरक्षित वापस आ गये, परन्तु महिला जिसको लाइफ जैकेट पहनाई जा चुकी थी, एक मोटी लकड़ी के सहारे लगभग 16 किलोमीटर नदी में बहते हुए ग्राम राजखेडा तक पहुंची।

सभी जगह सूचना करने पर ग्राम राजखेडा के पास अत्यधिक चौड़ाई है, इसलिए तहसीलदार बासौदा द्वारा राजखेडा के लोकल बर्कर्स समाज के लोगों द्वारा देखा कि नदी के किनारे एक पेड़ को महिला पकड़े हुए हैं, फिर ट्यूब के माध्यम से उस महिला को किनारे पर लाया गया एवं सफल रेस्क्यू किया गया।

## सांसद राघव चड्ढा ने संसद सत्र का अपना रिपोर्ट कार्ड जनता के समक्ष किया पेश

चंडीगढ़। आम आदमी पार्टी (आप) के वरिष्ठ नेता और पंजाब से पार्टी के राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने संसद के मॉनसून सत्र के दौरान पंजाब से संबंधित उनके द्वार उठाए गए मुद्दे और सवालों की सूची के माध्यम से अपना रिपोर्ट कार्ड पंजाब की जनता के सामने पेश किया है।

चड्ढा ने शुक्रवार को ट्वीट के माध्यम से अपना रिपोर्ट कार्ड पेश करते हुए कहा कि संसद के मॉनसून सत्र के दौरान उनकी उपस्थिति 93 प्रतिशत रही और राज्य सभा में उन्होंने पंजाब और पंजाब के लोगों की समस्याओं से जुड़े 42 सवाल उठाए। उन्होंने राज्यसभा की आठ बहसों में भाग लिया और अपने महत्वपूर्ण विचार सदन के सामने व्यक्त किए। मॉनसून सत्र के दौरान सांसद राघव चड्ढा ने

राज्यसभा में दो प्राइवेट मेंमरशिप बिल भी पेश किए, जिसमें पहला बिल किसानों को एमएसपी की गारंटी देने के लिए था और दूसरा विधायकों और सांसदों के दलबदल पर रोक लगाने एवं रिजॉर्ट पॉलिटिक्स रोकने के लिए था। इसके लिए उन्होंने राज्य सभा में संविधान के दसवीं अनूसूची में संसोधन के लिए संविधान संसोधन विधेयक-2022 पेश किया।

सांसद चड्ढा ने पंजाब के लोगों के हितों और भावनाओं की सुरक्षा के लिए भी राज्य सभा में कई महत्वपूर्ण मुद्दे उठाए। उन्होंने हरमंदिर साहिब के पास के सरायों पर केन्द्र सरकार द्वारा लगाए गए जीएसटी का मुद्दा उठाया, जिसके बाद केन्द्र सरकार को सरायों पर से जीएसटी खत्म करने पर मजबूर होना पड़ा। पंजाब के किसानों के हित के लिए उन्होंने फसलों पर एमएसपी की गारंटी देने के मुद्दे को राज्य सभा में उठाया। इसके अलावा उन्होंने केन्द्र सरकार से पंजाब के सिख श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए पूरे भारत के प्रमुख गुरुद्वारा साहिब आने-जाने के लिए स्पेशल गुरुकृपा ट्रेनें चलाने की मांग की। पंजाब में घटते भू-जल स्तर के कारण लोगों को हो रही चिंताओं के समाधान के लिए श्री चड्ढा ने इस मुद्दे को राज्य सभा में प्रमुखता से उठाया और इसके लिए केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से पंजाब को विशेष सहायता पैकेज देने की मांग की। महंगाई के मुद्दे पर भी उन्होंने संसद में केन्द्र सरकार को घेरा और इसके लिए मोदी सरकार की नीतियों को जिम्मेवार ठहराया। पंजाब के अन्य प्रमुख मुद्दों को भी सांसद चड्ढा ने राज्य सभा में उठाया। उन्होंने पंजाब के ग्रामीण विकास प्रोजेक्ट, मोहाली और अमृतसर से अंतरराष्ट्रीय विमान सेवा, गुलाबी सूंढ़ी के कारण फसलों को हुए नुकसान, पंजाब में नेशनल हेल्थ मिशन की स्थिति, असंगठित मजदूरों के लिए योजनाएं, पेट्रोल-डीजल की आसमान छू रही कीमतें और डॉलर के मुकाबले रुपये की गिरती कीमतें के लिए केन्द्र सरकार पर सवाल उठाए।

### धार में बांध में रिसाव के चलते 18 गांव खाली कराए गए

धार। मध्यप्रदेश के धार जिले के धार-धामनोद मार्ग पर कारम नदी पर स्थित ग्राम कोठीदा में जल संसाधन विभाग द्वारा बनाए गए मिट्टी बांध से आज सुबह एक बार फिर तेजी से रिसाव शुरू होने पर बांध के निचले हिस्से के करीब 18 ग्रामों को खाली करवाना पड़ा। मौके पर पहुंचे इंदौर के संभाग आयुक्त डॉ पवन शर्मा ने पत्रकारों को बताया कि डैम में कल से रिसाव आरंभ हुआ था। आज डैम की दूसरी साइड की काली मिट्टी हटी थी, धार और खरगोन समेत तीन जिलों के कलेक्टर पुलिस अधीक्षक और अन्य दल मौके पर उपस्थित हैं। डैम के पानी को नियंत्रण के साथ खाली करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

# आम आदमी पार्टी ने भाजपा के 6000 करोड़ के टोल-टैक्स घोटाले के खिलाफ सीबीआई जांच की मांग

- दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने एलजी साहब से सीबीआई जांच की मांग की है, लेकिन वे किसी तरह की जांच के लिए राज़ी नहीं हैं : विकास गोयल
- यदि एलजी साहब टोल-टैक्स घोटाले के खिलाफ सीबीआई जांच नहीं कराते हैं तो स्पष्ट हो जाएगा कि वे दिल्ली का नहीं, सिर्फ भाजपा का हित चाहते हैं : मनोज त्यागी

**प्रफुल्ल राय/गौरवशाली भारत**

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने भाजपा के 6000 करोड़ के टोल टैक्स घोटाले के खिलाफ शुक्रवार को दिल्ली के एलजी विनय कुमार सक्सेना के घर पर विरोध प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन एमसीडी प्रभारी दुर्गेश पाठक के नेतृत्व में नार्थ, साउथ और ईस्ट एमसीडी के पूर्व एलओपी और 'आप' कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया। सभी कार्यकर्ताओं ने भाजपा के घोटाले के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। आम आदमी पार्टी ने टोल-टैक्स घोटाले के खिलाफ एलजी से सीबीआई जांच की मांग की है। आम आदमी पार्टी का कहना है कि दिल्ली के एलजी भाजपा के इतने बड़े भ्रष्टाचार की सीबीआई जांच करने के बजाय दिल्ली सरकार के खिलाफ सीबीआई जांच की मांग करते रहते हैं।

आम आदमी पार्टी से नॉर्थ एमसीडी के पूर्व नेता प्रतिपक्ष विकास गोयल ने कहा कि भाजपा ने टोल-टैक्स घोटाला कर एमसीडी को 6000 करोड़ का नुकसान पहुंचाया है। 2017 में एमईपी इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपर्स लिमिटेड नाम की कंपनी को भाजपा ने 1200 करोड़ रुपए प्रति वर्ष के अनुसार पांच सालों के लिए ठेका दिया था। कंपनी ने पहले साल पैसा देने के बाद अगले साल से कभी 10 फीस तो कभी 20 फीसद पैसा दिया। भाजपा शासित एमसीडी ने कंपनी के खिलाफ कोई कार्रवाई करने के बजाय ठेके को जारी रखा। जिससे हजारों करोड़ रुपए भाजपा के अधिकारियों की जेब में चले गए।

2021 में वही ठेका शहाकर ग्लोबल लिमिटेड नाम की कंपनी को मात्र 786 करोड़ में दिया गया लेकिन वह कंपनी भी लगभग 250 करोड़ ही दे रही है। महंगाई बढ़ रही है उसके हिसाब से तो ठेका पहले से ज्यादा पैसों का होना चाहिए था। लेकिन यहां तो उल्टा उसे और कम कर दिया गया। यही नहीं भाजपा ने कोरोना काल के नाम पर नई कंपनी को 83 करोड़ रुपए की छूट दे दी। जब हम मामले की तह तक गए तो पता चला कि दोनों कंपनियों का मालिक एक ही है। रोज लाखों कॉमर्शियल वाहन दिल्ली में आते हैं जिनसे 100 रुपए से लेकर 1200 रुपए टोल टैक्स वसूला जाता है। इस हिसाब से महीने में कम से कम 200-300 करोड़ रुपए का टैक्स इकट्ठा होना चाहिए। स्पष्ट है कि भाजपा और इन कंपनियों की सांठगांठ के कारण सारा पैसा उनके अधिकारियों की जेब में जा रहा है। दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने एलजी को पत्र लिख कर मामले की सीबाई जांच की मांग की, लेकिन भाजपा किसी भी घोटाले की जांच कराने को तैयार नहीं है।

ईस्ट एमसीडी के पूर्व नेता प्रतिपक्ष मनोज त्यागी ने कहा कि यदि एलजी साहब घोटाले की जांच नहीं कराते हैं तो इससे स्पष्ट हो जाएगा कि वह सिर्फ भाजपा के नुमाइंदे हैं जो दिल्ली का हित नहीं बल्कि भाजपा का हित चाहते हैं।

साउथ एमसीडी के पूर्व नेता प्रतिपक्ष प्रेम चौहान ने कहा कि भाजपा शासित एमसीडी ने 6000 करोड़ रुपए का टोल टैक्स घोटाला कर दिल्ली वालों के साथ बहुत बड़ा धोखा किया है। एलजी साहब दिल्ली सरकार के खिलाफ सीबीआई जांच की मांग करते हैं लेकिन भाजपा के भ्रष्टाचार के खिलाफ सीबीआई जांच तो दूर की बात है, मामूली जांच भी कराने से पीछे हट जाते हैं। आम आदमी पार्टी भाजपा शासित एमसीडी के टोल-टैक्स घोटाले के खिलाफ सीबीआई जांच की मांग करती है।

आम आदमी पार्टी से आजादपुर मंडी के चेयरमैन आदिल अहमद खान ने कहा कि आज हम सभी लोग भाजपा द्वारा एमसीडी के टोल-टैक्स में किए गए भारी भ्रष्टाचार के खिलाफ सीबीआई जांच की मांग करते हुए एलजी साहब के घर के बाहर आए हुए हैं। भाजपा ने दिल्ली के टोल-टैक्स में हजारों करोड़ों का घोटाला किया है। जबतक एलजी साहब सीबीआई जांच नहीं कराते हैं, हमारा विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा।

## शार्ट न्यूज

### अमृत महोत्सव पर विद्यालय में मेंहदी चित्र कला प्रतियोगिता का आयोजन

**कपिल शर्मा/गौरवशाली भारत**

नाँगल चौधरी। ग्राम अमरपुरा स्थित राजकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय में भारत की आज़ादी का अमृत महोत्सव के अन्तर्गत मेंहदी व चित्र कला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम विद्यालय के प्राचार्य नसीब सिंह की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। अमृत उत्सव उपलक्ष्य विद्यालय में विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न विषयों पर आधारित सांस्कृतिक व संगीत गायन के साथ-साथ अन्य राष्ट्रीय सामाजिक संस्कृति व सामान्य ज्ञान विषयों की प्रतिस्पर्द्धाओं में प्रतिभागियों द्वारा भाग लिया जा रहा है। इस दिवस मेहंदी व पेटिंग प्रतियोगिता आयोजन में विद्यालय की छात्राओं ने मनमोहक मेहंदी अपने हाथों पर रचाई। पेटिंग में कई विद्यार्थियों ने महान स्तंत्रता सेनानियों सहित तिरंगा (राष्ट्रीय ध्वज) बनाकर प्रतियोगिता में भाग लिया। मेंहदी प्रतिस्पर्धा में प्रियंका व उसकी सहेलियों ने प्रथम स्थान हासिल किया वहीं द्वितीय प्रिया और उसकी सहेलियाँ और तृतीय मोना सहित सहेली और वहीं चित्र कला प्रतियोगिता में प्रथम प्रदीप पुत्र रुपचंद, द्वितीय पंकज सैनी पुत्र रतिराम सैनी, तृतीय पलक को चयनित किया गया। भारत की आज़ादी का अमृत महोत्सव के अन्तर्गत मनाए गए इस कार्यक्रम के अवसर पर निर्णायक मंडल में ब्युटी पार्लर से मोना कुमारी, ब्युटीशियन एक्सपर्ट रवीना कुमारी सहित स्कूल स्टॉफ़ बाबू कमलजीत, शास्त्री जगदेव शर्मा, राजेश कुमार व उर्मिला कुक सहित स्टॉफ़ उपस्थित रहे।

### भाजपा की दोस्तवादी सरकार वेलफेयर स्कीमों को 'फ्री की रेवड़ी' बोलकर गरीबों का मजाक बनाना बंद करें : मनीष सिसोदिया

नई दिल्ली। उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने शुक्रवार को एक प्रेस-कांफ्रेंस के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी के दोस्तवाद के मॉडल पर कड़ा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि आज देश में जनकल्याण के लिए चल रही योजनाओं को फ्री की रेवड़ी बोलकर भाजपा द्वारा आम जनता का मजाक बनाने की राजनीति चल रही है। एक ओर भाजपा जहाँ दोस्तवाद के मॉडल पर चलते हुए अपने चंद दोस्तों के लाखों करोड़ों के टैक्स व लोन माफ़ कर रही है, वहीँ देश के करोड़ों लोगों को मिलने वाली जनकल्याण योजनाओं को मुफ्त की रेवड़ियाँ बता रही है। भाजपा के अनुसार, उसके चंद दोस्तों के लाखों करोडो के टैक्स व लोन माफ़ करने से देश का विकास हो रहा है और जनता के टैक्स के पैसों से जनता को मिलने वाली शिक्षा-स्वास्थ्य सहित अन्य बुनियादी जरूरतों की चीजें मुफ्त की रेवड़ी है। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण जी ने देश के लोगों को डराने का प्रयास किया है। उनके अनुसार यदि आम जनता के लिए जनकल्याण योजनाएँ चलती रही तो देश बर्बाद हो जाएगा। उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि आज देश के सामने गवर्नेंस के 2 मॉडल है। पहला मॉडल दोस्तवाद का मॉडल है, जहाँ सत्ता में बैठे भाजपा के लोग अपने परिवारों-दोस्तों की मदद करते है। इसमें भाजपा द्वारा अपने चंद दोस्तों के लाखों-करोड़ों रुपए का टैक्स व लोन माफ़ कर दिया जाता है और इसे डेवलपमेंट का नाम दिया जाता है। दूसरी तरफ एक मॉडल है जहाँ जनता के टैक्स के पैसों का इस्तेमाल अच्छे सरकारी स्कूल, अस्पताल, जरुरी दवाइयों का इंतजाम करने, जनता को बिजली-पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं फ्री में देने, बुजुर्गों को तीर्थ यात्रा करवाने उन्हें पेंशन देने में, महिलाओं को बस में फ्री सफ़र देने के लिए किया जाता है। यानि कि पहले मॉडल में जनता के टैक्स के पैसों का इस्तेमाल चुनिंदा दोस्तों के टैक्स व लोन को माफ़ किया जा रहा है और दूसरे मॉडल में जनता के टैक्स के पैसे का इस्तेमाल करोड़ों लोगों के वेलफेयर के लिए किया जा रहा है।

### जब से सीएम अरविंद केजरीवाल ने मोदी सरकार की सच्चाई जनता के सामने रखी है, तब से भाजपा के बड़े-बड़े नेता और मंत्री बौखला गए हैं : संजय सिंह

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने आज कहा कि आम आदमी के टैक्स में से भाजपा की मोदी सरकार ने अपने अमीर दोस्तों को 19 लाख करोड़ का फायदा पहुंचाया है और आम जनता को सुविधाएं देने पर मुफ्त की रेवड़ी कहकर अपमानित किया जा रहा है। मोदी सरकार में 12.40 लाख करोड़ के लोन माफ़ हुए। 5 लाख करोड़ रुपए का बैंक फ्रॉड हुआ और कार्पोरेट टैक्स कम करने से 1.84 लाख करोड़ रुपए का नुक़सान हुआ। असल में इसे अमीरों को फ्री रेवड़ी बांटना कहते हैं। जब से सीएम अरविंद केजरीवाल ने मोदी सरकार की सच्चाई जनता के सामने रखी है, तब से भाजपा के बड़े-बड़े नेता और मंत्री बौखला गए हैं। उन्होंने कहा कि आरटीआई से खुलासा हुआ है कि मोदी सरकार ने अपने दोस्तों का लाखों करोड़ रुपए माफ़ किया। जबकि भाजपा नेताओं ने झूठ बोला कि 8 लाख करोड़ वापस आ गया। मोदी सरकार के केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री भागवत कराड ने सदन में कहा कि 5 वर्ष में केवल 86,986 करोड़ ही वसूला गया है। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी का भाजपा से एक ही सवाल है कि अपने मित्रों का आपने 11 लाख करोड़ माफ़ कर दिया और आम आदमी के दूध, दही, छाछ, दवाइयों पर टैक्स लगाकर महंगाई की मार क्यों मारी है? मोदी सरकार ने पूंजीपतियों का कॉर्पोरेट टैक्स 30 फीसदी से 22 फीसदी किया। अगर ऐसा नहीं करते तो जनता के खाने पर जीएसटी नहीं लगानी पड़ती। पीएम मोदी जनता के पैसे से हज़ारों करोड़ के हवाई जहाज में चलते हैं और विधायक-सांसदों को बंगले, बिजली-पानी फ्री मिलता है। इसके बावजूद जब सीएम केजरीवाल फ़्री बिजली-पानी-शिक्षा देते हैं तो मुफ़्त की रेवड़ी बोलकर जनता को क्यों अपमानित करते हैं। देश की अर्थव्यवस्था बर्बाद हो चुकी है। सेना का बजट 63 हजार करोड़ रुपए कम किया। 22 करोड़ युवाओं ने नौकरी मांगी लेकिन केवल 7 लाख को नौकरी दी।? देश की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से अपील है कि आप कोई पार्षद नहीं हैं, सदन का विशेष सत्र बुलाकर महंगाई और अमीरों का लोन माफ करने पर चर्चा करिए। मोदी सरकार की दौहरी नीति आम आदमी पार्टी नहीं चलने देगी कि आप चंद पूंजीपतियों को खरबपति बनाते जाओ और जनता को दस रुपये की भी सुविधा देने पर रेवड़ी कहकर अपपानित करो।

### पुलिस ने 600 नशीली गोलियां अल्प्राजोलम के साथ दो अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा। थाना दादरी पुलिस ने दो अभियुक्तों साहिल पुत्र वकील निवासी हनुमान मंदिर गली कस्बा व थाना कासना जनपद गौतमबुद्धनगर मूल पता ग्राम खटाना थाना जारचा गौतमबुद्धनगर, सलमान पुत्र समसुद्दीन निवासी नहरवाला पीर के पास कस्बा व थाना कासना गौतमबुद्धनगर को डाबरा गोल चक्कर के पास से गुरुवार को गिरफ्तार कर लिया।पकड़े गए अभियुक्तों के कब्जे से पुलिस ने 600 नशीली गोलियाँ अल्प्राजोलम की बरामद की हैं।अभियुक्तगण शातिर किस्म के अपराधी हैं।

# जैन समाज धूमधाम से मनाएगा 2550 वां निर्वाण कल्याणक वर्ष, जन-जन तक पहुंचेंगे भगवान महावीर के सन्देश

**आनंद राय/गौरवशाली भारत**

नई दिल्ली। जैन समाज ने भगवान महावीर से जुड़े पर्व को हर्षोल्लास से मनाने की तैयारियां शुरू कर दी है, मानवता की वर्तमान पीढ़ी का सौभाग्य है कि एक बार फिर से भगवान महावीर के 2550 वां निर्वाण कल्याणक वर्ष मनाने का अवसर मिल रहा हैं। जैन समाज से जुड़े प्रतिनिधि रिखब चंद जैन ने इस अवसर को भव्य बनाने की अपील करते हुए यह कहा है कि ऐसे ऐतिहासिक अवसर बड़े पुण्य से, बड़े प्रारब्ध से प्राप्त होते है। महावीर का सन्देश जन-जन तक पहुंचे इसके लिए वर्ष भर में निर्वाण कल्याणक के आलावा भी गर्भ कल्याणक, जन्म कल्याणक, दीक्षा कल्याणक, केवल्य ज्ञान कल्याणक के आने वाले दिनों के हर वर्ष से अधिक बड़े तरीके से मनाये तभी वर्ष भर के कार्यक्रम भव्य बनेंगे। विशेषतौर से और हर सम्भव प्रयास किए जाये कि वर्ष भर में धर्म चक्र में उललेखित भगवान महावीर के सन्देश जन-जन तक पूरे विश्व, राष्ट्र, हर शहर, हर गांव, हर रास्ते और हर मोहल्लें में पहुंचायें।

जैन समाज का और भारत का राष्ट्रीय कर्तव्य है कि इस काम को बड़ी निष्ठापूर्वक पूरा किया जाये। यह सभी जानते है कि महावीर के सन्देश आज के सन्दर्भ में कितने और भी अधिक सार्थक है। मानवता को युद्ध से बचाने के लिए, कई तरह के आपसी द्वेष और झंझटों से दूर करने के लिए, मानव के कल्याण के लिए, दुनिया के विकास और आध्यात्मिक प्रवृतियों को बढ़ाने के लिए महावीर के उपदेश नित्यंत आवश्यक है।

प्रभु महावीर के सन्देश के प्रमुख सिद्धान्त वनस्पति एवं जीव रक्षा, दया आदि, अहिंसा, अल्पारंभ, तप, त्याग, न्याय, सम्यक लोकतलन्त्र, शाकाहार, नशामुक्ति, नि:शस्त्रीकरण है। ये सब अत्यंत आवश्यक है।

इन सन्देशों को आज के समय में प्रचलित शब्दों और प्रचलित तरीके से जनमानस के मन और हृदय तक पहुंचाने के लिए आज के प्रचलित बातचीत में प्रयोग होने वाले शब्दों को काम में लिया गया है, ताकि महावीर के प्रत्येक सन्देश का सार आसानी से हर कोई समझ सके। एक झलक में ही सारी बाते मोटे तौर पर धर्म चक्र से ही जान सकते हैं।

## अमृत महोत्सव के अंतर्गत हर घर तिरंगा अभियान के तहत कमिश्नरेट गौतमबुद्धनगर में विभिन्न कार्यक्रमों का किया जा रहा है आयोजन

नोयडा। आजादी का अमृत महोत्सव हर्षोल्लास के साथ देश भर में मनाया जा रहा है तथा इस अमृत महोत्सव के अंतर्गत हर घर तिरंगाअभियान के तहत 11 अगस्त से 17 अगस्त तक कमिश्नरेट गौतमबुद्धनगर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में पुलिस कमिश्नर गौतमबुद्धनगर द्वारा कमिश्नरेट गौतमबुद्धनगर वासियों का आह्वाहन करते हुए शुक्रवार दोपहर 12 बजे पीए सिस्टम के माध्यम से उद्बोधन किया गया। जिसमें उनके द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत चल रहे हर घर तिरंगा अभियान के तहत सभी नागरिकों को इस अमृत महोत्सव में बढ़चड़कर भाग लेने के लिये प्रेरित किया तथा सभी नागरिकों का प्रत्येक चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में पुलिस का सहयोग करने के लिये आभार व्यक्त किया गया। तथा उनके द्वारा उद्बोदन करते हुये कहा गया कि कोरोना महामारी के दौरान जिन कठिन हालातों में पुलिस ने अपने कर्त्वयों का निर्वहन किया वह अत्यंत सराहनीय है कोई भी त्यौहार रहे हो या अन्य महत्वपूर्ण अवसर हो कमिश्नरेट गौतमबुद्धनगर पुलिस ने हर चुनौती का बहुत ही बहादुरी से सामना किया है और यह आपके बिना सहयोग के सम्भव नही था। आशा करता हूं कि भविष्य में भी आप सभी का इसी प्रकार भरपूर सहयोग मिलता रहेगा और कमिश्नरेट गौतमबुद्धनगर पुलिस आपके सहयोग से जनता की सुरक्षा में अपना योगदान देने के लिए सुरक्षा के प्रति लगातार प्रयत्नशील रहेगी।

## कोई भी घर तिरंगा लगने से न छूटे : एस राहुल

**विवेक राय/गौरवशाली भारत**

नई दिल्ली। भाजपा पूर्वांचल मोर्चा के प्रदेश मंत्री व सोशल मीडिया प्रभारी एस राहुल ने यूको बैंक जसोला में हर घर तिरंगा कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में सभी कर्मचारियों को तिरंगा वितरित किया गया। इस मौके पर बैंक मैनेजर आशिमा मैनी, अर्लिन इक्का, सोनल शर्मा, माया, लवकुश शुक्ला, रमेश यादव आदि मौजूद थे। प्रदेश मंत्री एस राहुल ने कहा कि आजादी का 75 वां अमृत महोत्सव का आयोजन हम देशवासियों के लिए गौरव का विषय है। हर घर तिरंगा अभियान में आम नागरिकों को बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। सभी नागरिकों का कर्तव्य है कि अपने आसपास के घरों में तिरंगा लग जाए उसे सुनिश्चित करें। ऐसा प्रयास होना चाहिए कि कोई घर भी तिरंगा लगने से ना छूटे। गरीब व अक्षम व्यक्तियों को तिरंगा भेंट में दिया जाए। एस राहुल ने कहा कि विभिन्न विविधताओं वाले हमारे देश को एक सूत्र में तिरंगा ही बांधता है। इसलिए विभिन्न विविधताओं वाले हमारे देश को एक सूत्र में तिरंगा ही बांधता है। इसलिए हर घर तिरंगा आयोजन में दल, भाषा, प्रांत, धर्म से ऊपर उठकर आम जनमानस को जोड़ने की अपील किया। यूको बैंक जसोला की शाखा प्रबंधक आशिमा मैनी ने कहा कि हर घर तिरंगा अभियान राष्ट्र के प्रति प्रेम व समर्पण का अभियान है। इसके द्वारा देश के लिए शहीद हुए असंख्य सेनानियों को कृतज्ञता व्यक्त किया जा रहा है। हर घर तिरंगा के आयोजन से शहीदों के प्रति सम्मान और उन्हें जाने का अवसर मिल रहा है। तिरंगा 135 करोड़ देशवासियों की आन-बान और शान का प्रतीक है।

# देशभक्ति नारों के उदघोष से गूंजा नांगल चौधरी, छात्रों ने निकाली तिरंगा यात्रा, एसएचओ ने किया नेतृत्व

**कपिल शर्मा गौरवशाली भारत**

नाँगल चौधरी। भारत की आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत शुक्रवार 12 अगस्त को राजकीय बाल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कोड संख्या (3884) में तिरंगा यात्रा समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि स्वरूप भारतीय सेना से रिटायर्ड ब्रिगेडियर रामनिवास तथा विशिष्ट अतिथि स्वरूप नांगल चौधरी थाना प्रभारी रामनाथ ने तिरंगा यात्रा समारोह में भाग लिया।

विद्यालय के प्राचार्य विकास जयदीप की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम में मंच संचालन की व्यवस्था इतिहास प्रवक्ता राजेश शर्मा द्वारा संभाला गया। भारतीय सेना से रिटायर्ड ब्रिगेडियर रामनिवास ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए बताया कि, सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी अपने आप को किसी प्रकार से कम ना समझें, अपनी क्षमताओं को पहचानें और उसी अनुरूप तैयारी करके देश सेवा के लिए जुट जाएं। साथ ही उन्होंने कहा कि, अध्यापक असली मायनों में राष्ट्र निर्माता हैं उन्हीं के संरक्षण में विद्यार्थियों का भविष्य तय होता है।

इस कार्यक्रम में थाना प्रभारी रामनाथ ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए बताया कि, देश सेवा के लिए अपने आपको अभी से तैयार रहने कि जरूरत है, आज हम विज्ञान, मेडिकल आदि हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं। साथ ही उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि, सभी विद्यार्थियों द्वारा देश को और ऊंचाइयों व शिखर बुलंदियों पर ले जाने की आवश्यकता है।

तिरंगा यात्रा समारोह में अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रधानाचार्य विकास जयदीप द्वारा बच्चों को देशभक्ति का महत्व समझाया गया। उन्होंने बच्चों को देश सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहने का आह्वान किया और साथ ही सभी विद्यार्थियों को देश के प्रति निष्ठावान, जिम्मेदार बनने का प्रण दिलवाया। इसके पश्चात विद्यालय प्रधानाचार्य विकास जयदीप ने तिरंगा जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाई। रैली का नेतृत्व एनसीसी एवं एएनओ बृजेश कुमार द्वारा किया गया। इस तिरंगा जागरूकता रैली में एनसीसी कैडेट्स ने भी भाग लिया। हर घर तिरंगा अभियान को सफल बनाते हुए एवं रैली का नेतृत्व एवं मार्गदर्शन करते हुए थाना प्रभारी रामनाथ भी शहर में छात्राओं द्वारा निकाली गई जागरूकता रैली में शामिल हुए। यह तिरंगा यात्रा रैली नांगल चौधरी शहर के हर गली-मोहल्ले, कॉलोनी, बस स्टैंड, बाजार से होकर निकली। इस दौरान विद्यार्थियों ने भारत माता की जय, वन्दे मातरम, जय जवान -जय किसान आदि देशभक्ति के नारे लगाए। विद्यार्थियों के जयकारों के उदघोष से शहर वासियों के अंतर्मन में राष्ट्रीय भावना को जाग्रत किया गया।

## तिरंगा गौरव यात्रा के मद्देनजर नजफगढ़ में तिरंगा गौरव यात्रा निकाली गई

नई दिल्ली। भारत की आजादी की 76 वी वर्षगांठ पूरा होने पर देश भर में कांग्रेस पार्टी की तिरंगा गौरव यात्रा के मद्देनजर राजधानी दिल्ली में आज चौथे दिन नजफगढ़ में तिरंगा गौरव यात्रा निकाली गई। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष चौधरी अनिल कुमार की अगुवाई में राजधानी में 9 से 15 अगस्त तक इस यात्रा का आयोजन किया जाएगा और अब तक दिल्ली के 14 में से सात जिलों में इस यात्रा का समापन हो गया है। आज सुबह की तिरंगा गौरव यात्रा नजफगढ़ में तूड़ा मंडी हनुमान मंदिर से आरंभ होकर जवाहर चौक पर समाप्त हुई। इसमें मुख्य अतिथि दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ नरेश कुमार, जिला अध्यक्ष सतबीर शर्मा, पूर्व विधायक कंवल सिंह यादव, विजय लोचव, पूर्व निगम पार्षद सुरेश पहलवान, सुखबीर शौकीन, सरला चौधरी, प्रदीप पालीवाल और सैकड़ों कांग्रेसी कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। इस मौके पर डॉ कुमार ने कहा कि आठ अगस्त 1942 को बंबई के कांग्रेस अधिवेशन में महात्मा गांधी ने पहली बार अंग्रेजो भारत छोड़ो का नारा दिया था और उसी के तारतम्य में 9 अगस्त 1942 को उस आंदोलन की सुरुआत हुई थी। अंग्रेजो ने डर कर सभी कांग्रेसी नेताओं को जेल भेज दिया था और तब अरुणा आसफ अली ने तिरंगा उठाकर ब्रितानी हुकूमत को चुनौती दी थी। आज कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने उसी प्रकार देश में तिरंगा गौरव यात्रा की शुरुआत की है। उस समय बिहार के लोगों ने भारत छोड़ो आंदोलन तथा देश की आजादी में अपनी कुर्बानी दी थी और जिस तरह से वहां से अंग्रेजों का पतन आरंभ हुआ था यह भी संयोग ही है कि भाजपा का पतन अब बिहार से शुरू हो गया है। उन्होंने कहा कि जब कांग्रेस के लोग अंग्रेजो को देश से भगाने की बात कर रहे थे तो भाजपा के जनक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने अंग्रेजो का साथ दिया था और आंदोलन का विरोध किया था। महात्मा गांधी की हत्या के बाद जब संघ पर प्रतिबंध लगाया गया था तो संघ के संचालक गोलवलकर और प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के बीच पांच सूत्रीय समझौता हुआ था जिसमें संघ से तिरंगे का सम्मान करने की बात कही गई थी। अब देर से ही सही, लेकिन भाजपा को तिरंगे का सम्मान करने की सुध तो आई है, जबकि उसने दशको तक इसकी उपेक्षा की थी।

## 16 से 22 अगस्त तक दिल्ली में होगा रोजगार आंदोलन : गोपाल राय

**पुरे देश से 200 से ज़्यादा संगठनो के 2000 प्रतिनिधि इस आंदोलन का हिस्सा बनेगें**

दिल्ली के कैबिनेट मंत्री एवं देश की बात फाउंडेशन के संस्थापक गोपाल राय ने आज सिविल लाइन्स में संयुक्त रोजगार आंदोलन समिति द्वारा आयोजित प्रेसवार्ता के दौरान राष्ट्रीय रोजगार नीति को बनाने की मांग की 7 प्रेसवार्ता के दौरान उपस्थित सभी पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने बताया की आज देश में दो तरह का संघर्ष चल रहा है, एक सत्ता के लिए संघर्ष और दूसरा बेरोजगारी का संघर्ष। बेरोजगारी आज देश की सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है और उसके समाधान के लिए आज जिस तरह के बेहतर प्रयास करने की ज़रूरत है वह सरकार की तरफ से नहीं दिख रहा है। आलम यह है कि देश को आज़ादी मिले 75 साल हो गए लेकिन अबतक किसी भी सरकार ने राष्ट्रीय रोजगार नीति का मुद्दा ना तो उठाया है और ना ही इस नीति पर कोई चर्चा की है। वर्तमान में सभी सेक्टर के लिए एक समग्र पालिसी बनाने की ज़रूरत है। राष्ट्रीय रोजगार नीति आज के वक्त की मांग है और इसको लागू करके ही बेरोजगारी की समस्या का समाधान हो सकता है। श्री गोपाल राय ने आगे कहा की आज देश में बेरोज़गारी दर बढ़ती जा रहा है और इसी को देखते हुए देश के तमाम क्षेत्र के बुद्धिजीवीयों के साथ मिलकर हमारी समिति ने राष्ट्रीय रोजगार नीति का ड्राफ्ट तैयार किया है। संयुक्त रोजगार आंदोलन समिति ने राष्ट्रीय रोजगार नीति को देश में लागू करने को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को दो बार - 20 दिसंबर 2021 और 5 अगस्त 2022 ज्ञापन भी दिया गया लेकिन उसपर अभीतक कुछ भी कार्रवाही नहीं की गई है। केंद्र की सरकार ने 2007 में ही राष्ट्रीय रोजगार नीति बनाने के लिए अंतरमंत्रालय में सलाह के लिए भेजी थी, और 2018 में नौकरियों पर नीति दस्तावेज़ तैयार करने के लिए अंतर मंत्रालय समिति का गठन भी किया गया था लेकिन आज तक इसपर अमल नहीं हो सका है।

## केजरीवाल को हम बताएंगे मुफ्त की रेवड़ियों का मतलब: बिधूड़ी

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने कहा है कि अरविंद केजरीवाल मुफ्त की रेवड़ियों के मुद्दे पर जनता के सामने झूठ बोलकर भ्रमित करने की कोशिश कर रहे हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य बुनियादी सुविधाएं मुफ्त की रेवड़ियां नहीं हैं। मुफ्त की रेवड़ियों का मतलब उच्च शिक्षा के लिए पिछले साल सिर्फ दो छात्रों को लोन बांटकर उस पर 19 करोड़ रुपए से ज्यादा का खर्चा प्रचार पर करना है। पराली से खाद बनाने के लिए सिर्फ 3 लाख रुपए खर्च करना और उस पर 15 करोड़ 80 लाख रुपए का प्रचार करना है। केजरीवाल को जवाब देना होगा कि आखिर उन्होंने दिल्ली के खजाने से इतना पैसा कैसे लुटा दिया?

बिधूड़ी ने कहा कि केजरीवाल मुफ्त की रेवड़ियां बांट रहे हैं, इसीलिए माननीय सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियों से उन्हें सबसे ज्यादा तकलीफ हो रही है। सुप्रीम कोर्ट ने किसी का नाम नहीं लिया और मुफ्त की रेवड़ियों के कल्चर पर तीखी टिप्पणी की है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियों पर को देखते हुए इस कल्चर पर अपनी चिंता जताई है। इसीलिए केजरीवाल को सबसे ज्यादा परेशानी शुरू हो गई है कि कहीं कोर्ट उनकी मुफ्त की रेवड़ियों पर रोक न लगा दे। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि शिक्षा और स्वास्थ्य समवर्ती सूची में हैं और राज्यों के विषय हैं। इसलिए यह आरोप लगाना कि केंद्र मुफ्त शिक्षा या स्वास्थ्य पर रोक लगाने जा रहा है, वैसे ही बेबुनियाद है।

बिधूड़ी ने कहा कि केजरीवाल कैसे मुफ्त की रेवड़ियां बांट रहे हैं, हम इसका मतलब समझा रहे हैं। केजरीवाल ने उच्च शिक्षा के नाम पर लोन का वादा किया और पिछले साल 2021-22 में सिर्फ दो छात्रों को ही यह लोन दिया गया। इस योजना के प्रचार पर ही केजरीवाल सरकार ने 19 करोड़ 27 लाख से ज्यादा की राशि खर्च कर दी। शुरू के सालों में तो सरकार ने कुछ छात्रों को लोन दिया लेकिन पिछले 3 सालों में सिर्फ 35 छात्रों को ही लोन के लिए चुना गया जबकि प्रचार पर करोड़ों रुपया फूंक दिया गया।

## संपादकीय

# सबसे बड़ा सलाम देश के नाम

आजादी के अमृत महोत्सव पर पूरा देश गर्व का महापर्व मना रहा है ।बेशक, आज देश ऐसी सुदृढ़ अवस्था में है कि किसी भी चुनौती का सामना करने में न केवल सक्षम है अपितु विकास के नए सोपानों पर ऊपर की ओर बढ़ रहा है । काल की चाल के बीच अब हमने परिस्थितियों की आंखों में आंखें डाल कर हिम्मत के साथ रहना सीख लिया है ।इस बदले हुए भारत को कोई भी आसानी से न ही झुका सकता है और न ही डरा सकता है । इसका संकेत है दुनिया भर में अपनी दादागिरी से रोब गालिब करने वाले ड्रैगन और लोकतंत्र के चौधरी कहे जाने वाले देश भी आज हिंदुस्तान की अहमियत को समझने लगे हैं यदि आज हम दुनिया के सामने सिर उठाकर जी पा रहे हैं और सारी दुनिया आज भारत की तरफ एक आस भरी निगाहों से देख रही है तो यह कोई एक दिन में नहीं हो गया है इसके पीछे आज़ादी से पहले के उन जुझारू स्वाधीनता सेनानियों का खून पसीना है और हमें इसका श्रेय उन्हें देना होगा जिन्होंने अंग्रेजों के अत्याचार सहे, अपने परिवार को एक तरफ रख कर देश के लिए बलिदान किए और आने वाली पीढ़ियों में देश के लिए कुछ करने का जज़्बा भरा ।तो आजादी के इस अमृत महोत्सव पर सबसे पहला सलाम जाता है उन नींव की ईंटों को जिनके बलिदानों से आज देश की बुलंद इमारत मजबूती के साथ खड़ी हुई है।

ऐसा नहीं है कि आज़ादी के बाद की सरकारों ने एक ही मन: स्थिति और रणनीति के साथ देश का विकास किया हो न ही यह कहना चाहिए कि एक विचारधारा विशेष की सरकारों ने ही देश को आकाश पर पहुंचाया और न ही इसका श्रेय केवल राजनेताओं या दलों को दिया जाना चाहिए ।यदि देश ने आज तरक्की की है तो इसका ठोस आधार है यहां के देशभक्त नागरिक। रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहने वाले सैनिक, खेतों में पसीना बहाने वाले कृषक और मजदूर, अर्थव्यवस्था को रीढ़ की हड्डी की तरह मजबूत करने वाले व्यापारी, इस सारी उन्नति एवं प्रगति के सहभागी हैं ।दलित, दलित,मजदूर, शोषित, सर्वहारा वर्ग, हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और दूसरे धर्म भी सबने किसी न किसी तरह से इस देश की बगिया को सींचा है तभी यह भारत की हरी-भरी बगिया एक बड़े उद्यान में परिवर्तित हो पाई है ।और दूसरा सलाम उन सबके नाम होना चाहिए जो भले ही दृश्यपटल पर दिखाई न दिए हों पर उन्होंने देश के विकास में योगदान दिया है।

जब - जब भी समस्याओं का समुद्र मंथन हुआ है तब -तब किसी को अमृत तो किसी को हलाहल मिला है । आजाद भारत के अमृत मंथन में भी देश के हर वर्ग ने अपने जीवट के विंध्याचल पर्वत से देश मथा है और इसमें मंथन से अमृत भी निकला है और विष भी मगर अमृत सब को नहीं मिला । भोले देव के रूप में देश के सर्वहारा वर्ग के हिस्से में हलाहल ही आया है ।

गरीबी, भूख,अशिक्षा,मजबूरी, बेरोजगारी और यहां तक कि जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी न हो पाने जैसे हलाहल यदि किसी के हिस्से में आए हैं तो वह सर्वहारा वर्ग ही है ।जबकि अमृत हथियाने के लिए समर्थ वर्ग ने हर तरह की मोहिनियों का इस्तेमाल किया है ।भोले -भाले वर्ग को बहलाया, फुसलाया, डराया, धमकाया या मारा पीटा तक गया और कभी चालाकी से तो कभी ताकत से अमृत कलश अपने और अपने लोगों के लिए हथिया लिया । यही है आजादी के अमृत मंथन का का हैरतअंगेज भरा विष अमृत खेल ।

तो तीसरा सलाम उस सर्वहारा वर्ग को जो हलाहल पीकर भी देश को अपने अमृत रूपी पसीने से सींचता रहा है ।

यदि इस देश का आम आदमी बुद्धू होता तो फिर यहां सरकारों की अदला बदली भी नहीं की होती ।मीडिया का चालाकी भरा उपयोग 1971 के युद्ध के बाद शुरू हुआ जब देशभक्ति के भावों को राजनीति में भुनाया गया । यदि आज मीडिया पर %गोदी% मीडिया होने का आरोप लग रहा है तो यह भी शायद एकदम गलत नहीं है मीडिया का एक खास वर्ग हमेशा से ऐसे ही दृष्टिकोण वाला रहा है जो एक खास वर्ग को खास अंदाज में उभारता है और दूसरे का स्याह पक्ष चुन-चुन कर सामने लाता है मगर इतना सब होने के बावजूद यदि देश में लोकतंत्र बचा रहा एवं अधिनायकवाद हावी नहीं हो पाया तो इसका श्रेय अभी मीडिया को ही दिया जाना चाहिए और इसके लिए वह सलाम का पात्र है।

# महावीर चक्र धर्म

**डॉ. रिखब चन्द जैन**

**लेखक भारत के प्रतिष्ठित टैक्सटाइल समूह टी.टी. लिमिटेड के चेयरमैन, संस्थापक होने के साथ ही, सामाजिक संस्था भारतीय मतदाता संगठन के संस्थापक भी हैं।टीटी चैरिटेबल ट्रस्ट सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों के माध्यम से समाज सेवा में रत हैं।**

मानवता की वर्तमान पीढ़ी का सौभाग्य है कि हमें भगवान महावीर के 2550 वां निर्वाण कल्याणक वर्ष मनाने का अवसर मिल रहा है।ऐसा ऐतिहासिक अवसर बड़े पुण्य से, बड़े प्रारब्ध से प्राप्त होता है।महावीर का सन्देश जन-जन तक पहुंचे इसके लिए वर्ष भर में निर्वाण कल्याणक के अलावा भी गर्भ कल्याणक, जन्म कल्याणक, दीक्षा कल्याणक, केवल्य ज्ञान कल्याणक के आने वाले दिनों के हर वर्ष से अधिक बड़े तरीके से मनायें तभी वर्ष भर के कार्यक्रम भव्य बनेंगे।

विशेषतौर से और हर सम्भव प्रयास किए जायें कि वर्ष भर में धर्म चक्र में उल्लेखित भगवान महावीर के सन्देश जन-जन तक पूरे विश्व, राष्ट्र, हर शहर, हर गांव, हर रास्ते और हर मोहल्ले में पहुंचायें।जैन समाज का और भारत का राष्ट्रीय कर्तव्य है कि इस काम को बड़ी निष्ठापूर्वक पूरा किया जाये।यह सभी जानते हैं कि महावीर के सन्देश आज के सन्दर्भ में कितने और भी अधिक सार्थक हैं। मानवता को युद्ध से बचाने के लिए कई तरह के आपसी द्वेष और झंझटों से दूर करने के लिए, मानव के कल्याण के लिए दुनिया के विकास और आध्यात्मिक प्रवृतियों को बढ़ाने के लिए महावीर के उपदेश नित्यंत आवश्यक है।प्रभु महावीर के सन्देश के प्रमुख सिद्धान्त वनस्पति एवं जीव रक्षा, दया आदि, अहिंसा, अल्पारंभ, तप, त्याग, न्याय, सम्यक लोकतन्त्र, शाकाहार, नशामुक्ति, निःशस्त्रीकरण हैं।ये सब अत्यंत आवश्यक हैं।इन सन्देशों को आज के समय में प्रचलित शब्दों और तरीके से जनमानस के मन और हृदय तक पहुंचाने के लिए बातचीत में प्रयोग होने वाले शब्दों को काम में लिया गया है, ताकि महावीर के प्रत्येक सन्देश का सार आसानी से हर कोई समझ सके।एक झलक में ही सारी बातें मोटे तौर पर धर्म चक्र से ही जान सकते हैं।प्रभु महावीर के 2500वें निर्वाण वर्ष में भी और उसके बाद 2600वें जनकल्याणक वर्ष के अवसर पर समाज को इसी तरह के दायित्व निभाने के अवसर मिले थे।समाज ने काफी परिश्रम के साथ उस कर्तव्य को निभाया, लेकिन इस बार उससे भी ओर अधिक जोश के साथ प्रयास करने हैं।करीब 20 वर्षों में तो कुछ महावीर के सन्देशों को दोहराने की आवश्यकता पड़ी है।नई पीढ़ी के लोगों को उनसे परिचित करना और जानकारी देना जरूरी हो गया है।मैं सभी समाज के प्रमुख, प्रबुद्ध संस्थानों का आह्वान करता हूँ कि अब समय बहुत कम है, लेकिन तैयारी अभी तक कुछ भी नहीं है।इस कार्यक्रम को भव्य रूप देने के लिए राष्ट्रव्यापी प्रयास चालू हो।मुझे भाई रतन जैन ने जो मान्य मंत्री - जैन महासभा और जैन महासंघ के हैं उन्होंने याद दिलाया और कहा कि उनके अनुसार 2600वें जन्म कल्याण वर्ष पर जो मैंने धर्म चक्र की प्रस्तुति की उसका व्यापक प्रयोग उस समय भी पूरे राष्ट्र में हुआ और अभी भी अनेक तरीकों से उसका प्रयोग किया जा रहा है।यह चक्र धर्मग्राही बना था।इस वर्ष मुझे फिर सौभाग्य मिला कि मैं धर्म चक्र को आज के प्रचलित वाक्यों में प्रस्तुत करूं।मैंने प्रभु की आज्ञा से ध्यान करके, अध्ययन करके इसे प्रस्तुत किया है।मुझे इससे प्रभु सेवा करने का अवसर मिला उसके लिए मैं समाज का भी आभारी हूँ और प्रभु की कृपा के लिए भी प्रभु का ऋणी हूँ।मैं मीडिया, जैन पत्र-पत्रिकाओं और संवादाताओं, रेडियो, टी.वी. तथा सोशल मीडिया के माध्यम से सक्रिय लोगों से निवेदन कर रहा हूँ कि इसका अधिक से अधिक प्रचार करें और दीपावली से पूर्व सभी अपने-अपने क्षेत्र के और राष्ट्र के एवं राज्यव्यापी कार्यक्रम की रुपरेखा पूरी तैयारी के साथ प्रस्तुत करें एवं क्रियान्वित करें।अभी पर्युषण पर्व एवं दस लक्षण पर्व महापर्व आ रहा है इस अवसर पर इस विषय पर आसानी से व्यापक विचार, चिन्तन हो सकता है।इन अवसरों का जैन समाज पूरी तैयारी करने के लिए अवश्य प्रयास करें।सभी एक ही धर्म चक्र को हर अवसर पर विभिन्न आकार में मुख्यता के साथ प्रयोग करें।जय जिनेन्द्र!

# श्रीकांत त्यागी प्रकरण - ओछी राजनीति व क्षणिक राजनीतिक स्वार्थ के चलते 'त्यागी समाज' के सम्मान को ठेस पहुंचाना उचित नहीं

दीपक कुमार त्यागी

जिस तरह से श्रीकांत त्यागी को गिरफ्तार करने वाली उत्तर प्रदेश पुलिस की टीम की पीठ शासन-प्रशासन में दिग्गज पदों को सुशोभित कर रहे चंद लोगों के द्वारा थपथपायी जा रही है, उसे देखकर लगता है कि उत्तर प्रदेश की जांबाज पुलिस ने भारत के एक सबसे बड़े कुख्यात आतंकवादी को गिरफ्तार करके सलाखों के पीछे पहुंचाने कार्य किया है, जिस तरह से मीडिया के ट्रायल व चंद अन्य लोगों ने श्रीकांत त्यागी प्रकरण को हवा दी है, वह हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या आज देश में सबसे बड़ी समस्या श्रीकांत त्यागी है, बाकी सब तरह से देश में हालात बहुत अच्छे बने हुए हैं।वैसे आपको यहां बता दें कि देश की राजधानी दिल्ली से एकदम सटा हुआ व उत्तर प्रदेश की आर्थिक राजधानी माने जाने वाला नोएडा विभिन्न कारणों के चलते आयेदिन मीडिया की सुर्खियों में बना रहता है। नोएडा में देश का इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सबसे बड़ा हब होने के चलते ही कभी सकारात्मक व कभी कोई बेहद नकारात्मक छोटा या बड़ा कोई भी घटनाक्रम चंद मिनटों में ही देश-दुनिया की मीडिया कि हैडलाइन बन कर जबरदस्त सुर्खियों में छा जाता है। ऐसा ही एक गालीगलौच और अभद्रता के आपसी विवाद का प्रकरण नोएडा सेक्टर 93 की बेहद पॉश सोसाइटी ग्रैंड ओमैक्स सोसाइटी में 5 अगस्त को घटित हो गया था।इस विवाद के एक वायरल वीडियो में यह देखा जा सकता है कि सोसाइटी की एक महिला ने अपनी आवासीय सोसाइटी में नियमों के उल्लंघनों का हवाला देते हुए स्वयं को भाजपा नेता कहने वाले श्रीकांत त्यागी के द्वारा वहां पर लगाये जा रहे पेड़ों पर आपत्ति जताई थी, जिसको लेकर दोनों पक्षों में हुई गर्मागर्म बहस में श्रीकांत त्यागी ने उक्त महिला को अपशब्द बोलते हुए पीछे धकेल दिया था। लेकिन बाद में जब यह वीडियो सोशल मीडिया पर बहुत तेजी से वायरल हुआ, तो नोएडा पुलिस तेजी से हरकत में आई और उसने तत्काल इस मामले में केस दर्ज करने का कार्य किया, जिसके बाद से श्रीकांत त्यागी घटनास्थल से फरार हो गया था। फिलहाल मुख्य आरोपी श्रीकांत त्यागी पुलिस की गिरफ्त में आ चुका है और उसके खिलाफ पुलिस-प्रशासन की कार्यवाही चल रही है।हालांकि यह तो आने वाले समय में न्यायालय ही तय करेगा कि आखिरकार दोषी कौन है।

लेकिन इस मसले पर देश में ओछी राजनीति जारी है, जब देश के विभिन्न राजनीतिक दलों को यह पता चला कि श्रीकांत त्यागी का कुछ ना कुछ जुड़ाव चाहे वो एकतरफा हो सत्ता पक्ष भाजपा से है तो इस मसले को बहुत तेजी के साथ जबरदस्त ढंग से तूल दिया गया, देखते ही देखते आपसी विवाद का यह मसला अब देश के चंद राजनेताओं व मीडिया की कृपा से एक बहुत बड़ा मुद्दा बन गया है।आरोप प्रत्यारोप से बचने के लिए ही आननफानन में भाजपा ने भी तत्काल समझदारी दिखाते हुए श्रीकांत त्यागी का पार्टी से कभी कोई नाता नहीं रहा है यह कहकर अपना पल्ला झाड़ लिया है।सूत्रों के अनुसार साथ ही वह सभी चंद राजनेता, खास व आम लोग भी अब सार्वजनिक रूप से श्रीकांत त्यागी का बचाव करने से बचने लगे जो कभी उसके धन दौलत व भौकाल का लंबे समय से आनंद भोग रहे थे। आपसी विवाद के एक बेहद छोटे से मसले का तुरंत समाधान करने की जगह आज चंद राजनेताओं की कृपा से धरातल पर ऐसे तनावपूर्ण हालात बना दिये गये, जिसके बाद से श्रीकांत त्यागी पुलिस-प्रशासन, मीडिया, सोशल एक्टिविस्ट, आम व खास लोगों व देश के विभिन्न राजनेताओं के निशाने पर एक बड़े अपराधी के रूप में आ गया, मीडिया की टीआरपी की भूख को पूरा करने खातिर यह मामला चंद घंटों में ही बेहद गंभीर होता चला गया।सूत्रों की मानें तो इस मसले पर कहीं ना कहीं भारी दबाव में कार्य कर रही पुलिस ने हद तो उस वक्त कर दी जब वह खुद एक महिला के सम्मान के नाम पर छोटे-छोटे बच्चों की मां व श्रीकांत त्यागी की पत्नी को लंबे समय तक थाने में बिठाकर रखने का अघोषित अपराध जाने अंजाने कर बैठती है।उसके बाद धरातल पर जिस तरह के हालात बनाये गये और हमारे शासन प्रशासन, राजनेताओं व मीडिया का रवैया देखकर यह लगता है कि श्रीकांत त्यागी देश-दुनिया का सबसे बड़ा कुख्यात आतंकवादी है।हालात पर नज़र दौड़ाएं तो यह स्पष्ट है कि कभी श्रीकांत त्यागी के इशारे पर नाचकर उसकी सेवा करके माल कमाने में व्यस्त रहने वाला तथाकथित सिस्टम और उसको खुली छूट देना वाला सिस्टम ही आज श्रीकांत त्यागी की दुनिया को बहुत लंबी चौड़ी अपराध की सल्तनत बताकर उसको तबाह करके स्वयं ही अपनी पीठ थपथपाने में लगा हुआ है।

लेकिन देश में हद तो उस वक्त हो जाती है कि जब बेहद अहंकार में वशीभूत होकर के हमारे प्यारे देश के चंद सम्मानित दिग्गज राजनेता व मीडिया का एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसे बेहद सभ्य, देशभक्त व बेहद बुद्धिजीवी, समाजसेवी, त्यागी समाज को टीआरपी के अपने क्षणिक स्वार्थों को पूरा करने के लिए निशाने पर लेकर के उसकी छवि खराब करने पर आमादा हो जाते हैं। देश में अभद्रता का आलम यह हो गया है कि शीर्ष मीडिया घराने, देश के चंद दिग्गज राजनेता व चंद बेहद जिम्मेदार लोगों ने भी सार्वजनिक रूप से व देश दुनिया के सोशल मीडिया के विभिन्न ताकतवर प्लेटफॉर्मों पर त्यागी समाज की छवि को ठेस पहुंचाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। इन चंद लोगों की बेहद गलत करतूतों ने उस देशभक्त, नियम-कायदे-कानून पसंद, बेहद सभ्य, समाजसेवा के लिए हमेशा तत्पर रहने वाले व बेहद सम्मानित त्यागी समाज को गालीबाज़ त्यागी, लंगड़ा त्यागी, गुंडा त्यागी, भगोड़ा त्यागी, गोलीबाज़ त्यागी, दबंग त्यागी आदि ना जाने कितने ग़लत जातिसूचक संबोधनों से संबोधित करने का जघन्य अपराध किया है, जो स्थिति देश व समाज की एकता अखंडता के लिए बिल्कुल भी उचित नहीं है। जिस तरह से श्रीकांत त्यागी के मसले पर हमारे देश के चंद दिग्गज राजनेताओं ने एक व्यक्ति के कृत्य के लिए पूरी जाति विशेष को निशाना बनाया है वह सरासर ग़लत है। वहीं हर वक्त टीआरपी की अंधी दौड़ में उतावली रहने वाली भारतीय मीडिया ने अपनी एकतरफा रिपोर्टिंग में जिस तरह से त्यागी समाज को बेहद आपत्तिजनक जातिसूचक विश्लेषणों से नवाजा है वह देश के सभ्य समाज के लिए बिल्कुल भी उचित नहीं है। आज हम लोगों के साथ-साथ, देश के सभी बेहद जिम्मेदार राजनेताओं, मीडिया संस्थानों व शासन प्रशासन मैं बैठे लोगों को भी यह समझना होगा कि एक व्यक्ति के द्वारा किये गये कृत्य के लिए चंद लोग कैसे किसी भी पूरे समाज को जिम्मेदार ठहराते हुए उसके मान सम्मान व भावनाओं से खिलवाड़ कर सकते हैं।

देश के जिम्मेदार पदों पर आसीन लोगों व संस्थानों को समय रहते यह समझना चाहिए कि भारत में तो जाति धर्म के नाम पर वैसे ही दिन-प्रतिदिन लोगों के बीच चौड़ी खाई बनती जा रही है, फिर वह क्षणिक लाभ के लिए ऐसी गलती बार-बार क्यों कर रहे हैं। आज मेरा देश के नीतिनिर्माताओं से विनम्र अनुरोध है कि देश में फिर कभी किसी जाति या धर्म के साथ भविष्य में ऐसी स्थिति ना बने सके इसके लिए तत्काल कानून बनाकर रोक लगानी चाहिए।वहीं एक व्यक्ति के कृत्य के चलते पूरे समाज को कटघरे में खड़ा करके इस तरह बदनाम करने वाले लोगों व संस्थानों को तत्काल सख्त चेतावनी देने की कानूनी कार्यवाही करनी चाहिए, जिससे कि भविष्य में वह फिर कभी किसी के साथ इस तरह के शर्मनाक कृत्य की पुनरावृति ना कर सकें।वहीं श्रीकांत त्यागी के इस पूरे मसले के बाद धरातल पर लगातार जिस तरह से देश के बेहद सम्मानित, देशभक्त त्यागी समाज को निशाने पर लिया जा रहा है, उन हालातों पर भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व को भी शांतचित्त से विचार अवश्य करना चाहिए कि कहीं यह किसी व्यक्ति या दल के द्वारा भाजपा के परंपरागत त्यागी वोटबैंक को उससे दूर करने का कोई बड़ा षड्यंत्र तो नहीं है। कहीं यह सब कुछ लोगों के द्वारा हिन्दू धर्म के बेहद मजबूत स्तंभ त्यागी समाज को बदनाम करने की कोई सुनियोजित बहुत बड़ी साजिश तो नहीं है। क्योंकि जिस तरह से इस पूरे घटनाक्रम के बाद देश में चंद दिग्गज राजनेताओं व मीडिया घरानों ने त्यागी समाज के मान सम्मान व छवि को धूमिल करने का दुस्साहस किया है, वह स्थिति केवल त्यागी समाज के खिलाफ़ ही नही है, बल्कि देश की एकता अखंडता व पूरे हिन्दू धर्म के खिलाफ है।वैसे भी इन चंद लोगों को यह ध्यान रखना चाहिए कि देश की आज़ादी की जंग से लेकर के, आज के आधुनिक भारत के नव निर्माण में देशभक्त व मेहनतकश %त्यागी समाज% का अपना एक बेहद अनमोल योगदान हमेशा रहा है, उस पर क्षणिक राजनीतिक स्वार्थ व ओछी राजनीति के लिए यूं बेवजह प्रश्नचिन्ह लगा कर सवाल खड़ा करना बिल्कुल भी उचित नहीं है।

*।। जय हिन्द जय भारत ।।*

*।। मेरा भारत मेरी शान मेरी पहचान ।।*

# चीन-ताइवान युद्ध हुआ तो हालात और बिगड़ जायेंगे

**डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा**

चीन ने ताइवान से आने वाली खाद्य सामग्री के 100 से अधिक उत्पादों के आयात पर रोक लगा दी है तो दूसरी और ताइवान ने भी चीन से मंगाये जाने वाले कंस्ट्रक्शन से जुड़े उत्पादों को मंगाना बंद कर दिया है और इन उत्पादों के आयात पर रोक लगा दी है।

अभी दुनिया के देश रूस-यूक्रेन के युद्ध की विभिषिका से दो-चार हो ही रहे हैं कि अमेरिकी संसद की स्पीकर नैंसी पेलोसी की ताइवान यात्रा के बाद चीन-ताइवान के बीच तनाव के हालात पैदा हो गए हैं।हालांकि बड़े दिग्गजों को यह समझ जाना चाहिए कि रूस के सामने यूक्रेन जैसे छोटे से देश ने युद्ध को इतना लंबा खींचकर रूस के सामने चुनौती साबित कर दी है और माने या ना माने रूस को अंदरखाने यह महसूस करा दिया है कि जिस युद्ध को दो चार दिन का युद्ध मानकर यूक्रेन से सरेण्डर की आस लगाये बैठा था उस युद्ध ने रूस ही नहीं दुनिया के देशों की अर्थव्यवस्था को झकझोर के रख दिया है।अनाज संकट के साथ ही कच्चे तेल, गैस आदि का संकट सबके सामने है। लगभग यही हालात ताइवान-चीन के बीच संघर्ष के दौरान होना है। भले ही ताइवान कितना ही छोटा देश हो, चीन कितना ही बौना मानता हो पर दुनिया के देशों की अर्थव्यवस्था को हिलाने के लिए ताइवान किसी बड़ी ताकत से कम नहीं है।यहां तक कि ताइवान से तनाव के परिणाम को स्वयं चीन को भी भुगतना पड़ेगा।कोरोना के दौर में हालात हम देख चुके हैं।हालांकि नैंसी की यात्रा के बाद चीन ने गहरी नाराजगी जताई है और प्रतिक्रिया स्वरूप सैन्य अभ्यास आरंभ कर दिया है। या यों कहें कि दबाव की नीति के तहत ताइवान की घेराबंदी शुरू कर दी है।ताइवान आज भले ही छोटा देश हो पर अपनी तकनीक की ताकत की बदौलत सारी दुनिया के देशों को हिलाने की क्षमता रखता है।चौपहिया से लेकर मोबाइल इंडस्ट्री तक को पटरी से उतारने की क्षमता आज ताइवान के पास है और मजे की बात यह कि इस ताकत को दुनिया के सारे देश जानते हैं। स्वयं चीन की अर्थव्यवस्था को ऑक्सीजन देने में ताइवान की प्रमुख भूमिका है। आज चौपहिया वाहन से लेकर मोबाइल सहित इलेक्ट्रोनिक उत्पादों के निर्माण उपयोग में आने वाला सेमीकंडक्टर का सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक देश ताइवान है। अभी पिछले दिनों ही सेमीकंडक्टर की कम आपूर्ति के चलते कार इंडस्ट्री बुरी तरह प्रभावित हो चुकी है।आज दुनिया के देशों में सेमीकंडक्टर के निर्माण में सबसे आगे ताइवान है।ताइवान आज भी सेमीकंडक्टर के निर्माण में पहले पायदान पर है। यह सफर भी कोई ज्यादा पुराना नहीं है। 1987 में ही ताइवान ने सेमीकंडक्टर निर्माण की कंपनी की स्थापना की थी।एक समय ऐसा भी रहा है जब दुनिया के देशों की 92 फीसदी डिमांड की पूर्ति इस कंपनी द्वारा की जा रही थी। दक्षिण कोरिया की कंपनी सैमसंग की भागीदारी केवल 8 फीसदी थी।सेमीकंडक्टर के निर्माण व गुणवत्ता में ताइवान चीन से मीलों आगे है। यह भी साफ है कि ताइवान और चीन के बीच तनाव बढ़ता है और युद्ध के हालात बनते हैं तो सेमीकंडक्टर बनाने वाली कंपनियों में उत्पादन प्रभावित होगा और इससे कारों से लेकर मोबाइल तक सभी के उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। दुनिया की कार, मोबाइल व इलेक्ट्रोनिक कंपनियों में उत्पादन कार्य प्रभावित होगा।

चीन ताइवान के बीच तनाव का असर अभी फिलहाल तो इन दोनों देशों में सामने आने लगा है। चीन ने ताइवान से आने वाली खाद्य सामग्री के 100 से अधिक उत्पादों के आयात पर रोक लगा दी है तो दूसरी और ताइवान ने भी चीन से मंगाये जाने वाले कंस्ट्रक्शन से जुड़े उत्पादों को मंगाना बंद कर दिया है और इन उत्पादों के आयात पर रोक लगा दी है।इसे केवल दो देशों के बीच एक दूसरे के खिलाफ कार्यवाही से नहीं देखा जा सकता। इस टकराव का सीधा-सीधा असर दुनिया के देशों पर निश्चित रूप से पड़ेगा, इससे कोई इंकार करता है तो यह किसी भूल से कम नहीं होगी। कोरोना के बाद संभलती अर्थव्यवस्था को रूस यूक्रेन युद्ध से पहले ही धक्का लग चुका है।

# भारत भाग्य विधाता - किसी भी राष्ट्र का ध्वज अभिव्यक्ति और आजादी का प्रतीक होता है

तीन दिवसीय हर घर तिरंगा के जश्न में हृदय की गहराइयों से डूबा हर नागरिक - एक दिन पहले से ही भारत की गाथा शुरुआत से इतिहास रचा जाएगा - एडवोकेट किशन भावनानी

गोंदिया - पूरे विश्व में भारत को युवाओं का देश कहा जाता है। हमारे देश में 35 वर्ष तक की उम्र के 65 करोड युवा हैं इसलिए हम भारत की जन जनसंख्यकिया तंत्र की ताकत का अंदाजा लगासकते हैं, क्योंकि हमारे इन युवाओं में देशभक्ति राष्ट्रभक्ति की जांबाज़ी और जज्बे का जुनून है भरा है जिसने नहीं देखा हो तो वह आज भारत के तिरंगा में जुनून और हर घर तिरंगा के जश्न में देख और महसूस कर सकते हैं कि आज भारत महाबली है

साथियों बात अगर हम दिनांक 12 अगस्त 2022 को टीवी चैनलों पर कश्मीर के कुपवाड़ा श्रीनगर इत्यादि शहरों में स्टेडियम पर तिरंगा महोत्सव, जवानों द्वारा बाइक तिरंगा रैली और कश्मीरी छात्र छात्राओं द्वारा तिरंगा जुलूस निकाल कर देशभक्ति के नारों से सारे भारत को गौरव में कर दिया हमारे हर भारतवासी गर्व महसूस कर रहे हैं क्योंकि दशकों बाद यह स्थिति वहां टीवी चैनलों केमाध्यम से देखने को मिली।

साथियों बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा संस्कृति बांग्ला मिश्रित भाषा में 1882 में प्रकाशित गीत वंदे मातरम, मेरे देश की धरती सोना उगले, यह देश है वीर जवानों का इत्यादि अनेक गीत हमने कई बार सुने हैं पर इनको आंखों देखी गाथा आज तीन दिवसीय हर घर तिरंगा के जश्न में हृदय की गहराइयों से डूबे हर नागरिक महसूस कर रहे होंगे और भारत भाग्य विधाता भारत का राष्ट्रीय ध्वज अभिव्यक्ति और आजादी का प्रतीक को हर युवा महसूस कर रहे हैं इन लम्हों में दर्ज़ इतिहास को हमारे युवा साथी इतिहास के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित करते रहेंगे क्योंकि आज चहुंओर भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का जश्न मना रहे हैं इसलिए 15 अगस्त 2022 के उपलक्ष में आर्टिकल के माध्यम से हम हमारे राष्ट्रीय ध्वज के इतिहास और भारत की गाथा पर चर्चा करेंगे चूंकि आज हर भारतीय के लिए

साथियों बात अगर हम भारतीय राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा की करें तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार, भारत के राष्ट्रीय ध्वज में शीर्ष बैंड भगवा रंग का है, जो देश की ताकत और साहस को दर्शाता है।सफेद मध्य बैंड धर्म चक्र के साथ शांति और सच्चाई का संकेत देता है।आखिरी पट्टी हरे रंग की होती है जो भूमि की उर्वरता, वृद्धि और शुभता को दर्शाती है।1904 में विवेकानंद की शिष्या सिस्टर निवेदिता ने पहली बार ध्वज बनाया था, जिसे निवेदिता ध्वज कहा जाता था। पीएम की अपील के तहत हर घर तिरंगा अभियान चलाया जा रहा है।लोगों से तिरंगा फहराने की अपील की जा रही है। लेकिन इस तिरंगे के पीछे की कहानी बहुत लंबी है।बीते 116 सालों में देश में छह बार झंडा बदला गया है। आजादी की वर्षगांठ पर हमें यह जानना बेहद जरूरी है कि हमारा राष्ट्रीय ध्वज की इस यात्रा में क्या-क्या अहम पड़ाव रहे और कब-कब क्या- क्या बदलाव हुए। आखिरी बदलाव 1947 में हुआ था

भारत की आजादी की लड़ाई जैसे-जैसे तेज होती जा रही थी, क्रांतिकारी दल अपने-अपने स्तर पर स्वतंत्र राष्ट्र की अलग पहचान के लिए अपना झंडा प्रस्तावित कर रहे थे।देश में पहला झंडा 1906 में सामने आया। सात अगस्त, 1906 को पारसी बागान चौक, कलकत्ता में फहराया गया था। इस झंडे में तीन रंग की पट्टियां थीं। इनमें सबसे ऊपर हरे रंग, मध्य में पीले रंग और नीचे लाल रंग की पट्टियां थीं। इसमें ऊपर की पट्टी में आठ कमल के फूल थे, जिनका रंग सफेद था।बीच की पीली पट्टी में नीले रंग से वन्दे मातरम् लिखा हुआ था।इसके अलावा सबसे नीचे वाली लाल रंग की पट्टी में सफेद रंग से चांद और सूरज भी बने थे। साथियों पहले ध्वज को मिले हुए एक साल ही हुआ होगा कि देश को दूसरा झंडा मिल गया।पहले पहले झंडे में कुछ बदलाव करके मैडम भीकाजीकामा और उनके कुछ क्रांतिकारी साथियों जिन्हें निर्वासित कर दिया गया था, ने मिलकर पेरिस में भारत का नया झंडा फहराया था। यह झंडा भी देखने में काफी हद तक पहले जैसा ही था। इसमें केसरिया, पीला और हरे रंग की पट्टियां थी। बीच में वन्दे मातरम् लिखा था। वहीं, इसमें चांद और सूरज के सात आठ सितारे बने थे।इसके बाद 1917 में एक और नया झंडा सामने आया।डॉ. एनी बेसेंट और लोकमान्य तिलक ने एक नया झंडा फहराया। इस नए झंडे में पांच लाल और चार हरे रंग की पट्टियां थी। झंडे के अंत की ओर काले रंग में त्रिकोणनुमा आकृति बनी थी। बाएं तरफ के कोने में यूनियन जैक भी था। जबकि एक चांद तारे के साथ इसमें सप्तऋषि को दर्शाते सात तारे भी थे।इसके एक दशक बाद 1921 में ही भारत को अपना चौथा झंडा भी मिल गया।साथियों भारत का झंडा 1931 में एक बार फिर से बदला गया।इस झंडे को इंडियन नेशनल कांग्रेस ने आधिकारिक तौर पर अपनाया था।इस झंडे में सबसे ऊपर केसरिया रंग, बीच में सफेद रंग और अंतिम में हरे रंग की पट्टी बनाई गई।इसमें छोटे आकार पूरा चरखा बीच की सफेद पट्टी रखी गई थी। सफेद पट्टी में चरखा राष्ट्र की प्रगति का प्रतीक है।

तमाम प्रयासों के बाद जब 1947 में आखिरकार देश आजाद हुआ तो देश को तिरंगा झंडा मिला। 1931 में बने झंडे को ही एक बदलाव के साथ 22 जुलाई, 1947 में संविधान सभा की बैठक में भारत का राष्ट्रीय ध्वज स्वीकार किया गया। इस ध्वज में चरखे की जगह सम्राट अशोक के धर्म चक्र को गहरे नीले रंग में दिखाया गया है। 24 तीलियों वाले चक्र को विधि का चक्र भी कहते हैं। इसे पिंगली वैंकेया ने तैयार किया था।इसमें ऊपर केसरिया, बीच में सफेद और नीचे हरे रंग की पट्टी है।तीनों समानुपात में है। इसकी लंबाई - चौड़ाई दो बाय तीन है। हर देश का अपना झंडा होता है। भारतीय ध्वज को तिरंगा कहा जाता है क्योंकि इसमें तीन रंगों का इस्तेमाल किया गया है- केसरिया, सफेद और हरा हालांकि भारत में शुरू से यही झंडा नहीं फहराया जाता था।

## भाई बहन का रिश्ता!

कभी दोस्ती तो कभी लड़ाई,
एक दूजे से ना बात छुपाई,
मुसीबत में कभी भाई काम आया,
तो कभी बहन काम आई,
खुशनसीब होते हैं वह जिनके होते है
बहन और भाई!

निराश होने पर, दिल में उम्मीद
जगाई, कितनी भी बहन हो जाए
पराई, इजहार करने से पहले, ही हर
चीज दिलाई, खुशनसीब होते हैं वह
जिनके होते है बहन और भाई!

कितनी भी मुश्किलें जिंदगी लाई,
भाई बहन के रिश्ते में आचं ना आई,
कभी प्यार तो कभी मिली सख्ताई,
खुशनसीब होते हैं वह जिनके होते है
बहन और भाई!

इस प्यारे से रिश्ते में , तो है सच्चाई,
करें हमेशा बहन के सामने उसकी
बुराई, दुनिया के सामने करें बहन
की अच्छाई , खुशनसीब होते हैं वह
जिनके होते है बहन और भाई!

अपनी बहना पर करे खर्च अपनी
पहली कमाई, हमेशा बहन भाई से
कहे, तुझ में इतनी शैतानी कैसे आई,
और दुनिया के सामने कहे हीरो हे
मेरा भाई, खुशनसीब होते हैं वह
जिनके होते है बहन और भाई!

## शार्ट न्यूज

### कुशीनगर में 16 अगस्त को लगेगा एकदिवसीय रोजगार मेला, 18 से 35 साल के अभ्यार्थी हो सकेंगे शामिल

**कुशीनगर।** कुशीनगर के जिला सेवायोजन अधिकारी संजय कुमार ने शुक्रवार को बताया कि पडरौना स्थित राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के परिसर में एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। इसमें शामिल होने वाले प्रतिभागी ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से भाग ले सकते हैं। इस रोजगार मेले में प्राइवेट कंपनी हिमालया इंपैक्ट मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड आ रही है जिसके अधिकारी विभिन्न पदों के लिए प्रतिभागियों का इंटरव्यू करेंगे। इंटरव्यू के बाद चयन उम्मीदवारों की पोस्टिंग स्टोर मैनेजर, सुपरवाइजर, रिसेप्शनिस्ट समेत कई अन्य पदो पर होगी। संजय कुमार के मुताबिक इस रोजगार मेले में बारवीं पास अभ्यर्थी शामिल हो सकेंगे। वहीं उम्रसीमा 18 से 35 साल है। इस रोजगार मेले में भाग लेने वाले प्रतिभागी सेवायोजन विभाग के वेब पोर्टल सेवायोजन डॉट यूपी डॉट एनआई डॉट इन पर अपने आईडी पासवर्ड की मदद से लॉगिन करके संबंधित कंपनी में रजिस्टेशन कर सकते हैं। ये प्रक्रिया पूरे तरीके से फ्री है। यहां तक कि रोजगार मेले में आने के लिए भी कोई यात्रा व्यय देय नहीं है।

### सुल्तानपुर में थाने पहुंचकर लड़कियों ने पुलिसकर्मियों को बांधी राखी, पुलिसकर्मियों ने भी दिया रक्षा का वचन

सुल्तानपुर। यूपी के सुल्तानपुर में पुलिसकर्मियों के लिए, राखी यादगार रही क्योंकि वो जिन लड़कियों की रक्षा और सुरक्षा के लिए दिन-रात मुस्तैद रहते हैं उन्होंने थाने आकर पुलिसकर्मियों को राखी बांधी। सुल्तानपुर में लड़कियों ने पुलिसकर्मियों को राखी बांधकर उनकी लंबी उम्र की कामना की। सरस्वती शिशु वाटिका में पढ़ने वाली लड़कियां राखी बांधने कोतवाली नगर थाने पहुंचे। लड़कियों का कहना था कि वे उन पुलिस वाले भाइयों को राखी बांधने आईं हैं जो उनकी रक्षा कर रहे हैं। जो लोग अपने परिवार से सैकड़ों मील दूर रहते हैं ताकि हमारी रक्षा कर सकें। उन्हें त्योहार पर अपनी बहनों की कमी महसूस ना हो इसलिए वो उन्हें राखी बांधने आईं हैं। एसडीएम सदर चंद्र प्रकाश पाठक ने कहा कि थाने में आकर छात्राओं ने राखी बांधकर ये कहने की कोशिश की कि वे भी पुलिस की रक्षा के लिए खड़ी हैं। हमें यह देखकरअच्छा लगा। थाने आई लड़कियों को देख पुलिसवालों के भी चेहरे खिल उठे और उन्होंने अपनी धर्म की बहनों को कई उपहार और पैसे देकर उनको इस दिन को यादगार बनाने के लिए धन्यवाद दिया। शिक्षिका ने कहा कि पुलिस हमेशा लोगों की रक्षा करती है, लेकिन कभी-कभी ड्यूटी के कारण पुलिसकर्मी रक्षाबंधन के दिन अपनी बहनों के पास राखी बंधवाने तक नहीं जा पाते। ऐसे में स्कूल के छात्राओं ने थाने पहुंचकर पुलिसकर्मियों की कलाई पर राखी बांधी और उनकी लंबी उम्र की कामना की।

### फर्रुखाबाद में युवक की हत्या, कार सवारों ने गोली मारकर उतारा मौत के घाट

फर्रुखाबाद। यूपी के फर्रुखाबाद में रक्षाबंधन के दिन रंजिश के चलते एक युवक की हत्या कर दी गई। घटना शुक्रवार दोपहर की है। जानकारी के अनुसार कुछ युवक कार पर सवार होकर आए और बाइक सवार युवक की गोली मारकर हत्या करके भाग निकले। दरअसल युवक दो और बाइकों पर सवार अपने साथियों के साथ इटावा बरेली हाईवे से गुजर रहा था। बघार के पास पहुंचा कि तभी कार सवार हमलावरों ने युवक को गोली मार दी। युवक के साथी कुछ समझ पाते कि उसकी मौके पर ही मौत हो गई। मृतक का नाम कौशल है वह फतेहगढ़ कोतवाली के निनौआ गांव का रहने वाला था। पुलिस पूरे मामले में जांच पड़ताल कर रही है। फायरिंग के बीच कौशल के पांच अन्य दोस्तों ने एक होटल में घुसकर जान बचाई व मृतक पोस्टमार्टम की फोटोग्राफी का कार्य करता था।

### अपने ही घर में पराई हो गई है मिर्जापुर की कजरी

**मिर्जापुर।** सावन में अपनी अनूठी सांस्कृतिक परम्पराओं के लिये देश विदेश में मशहूर मिर्जापुर की कजरी अपने गृह नगर में ही अब पराई सी होती जा रही है। लोगों की उपेक्षा का दंश झेल रही कजरी पर सबसे बड़ा कुठाराघात शासन ने किया है। जिला प्रशासन ने कजरी को अब जिले की सांस्कृतिक विरासत की लिस्ट से बाहर कर दिया है। इस बार जिला प्रशासन ने कजरी उत्सव पर मौनी अमावस्या और पितृ विसर्जन को वरीयता देते हुए कजरी को स्थानीय अवकाश की सूची से भी हटा दिया है। प्रशासन के इस निर्णय से सांस्कृतिक कर्मियों में गुस्सा है। ये लोग योगी सरकार को कटघरे में खड़ा कर रहे हैं। अचरज की बात तो यह है कि कजरी को बढ़ावा देने के लिए इसी साल कजरी गायिका अजीता श्रीवास्तवा को प्रद्म श्री पुरस्कार से नवाजा गया है। एक तरफ उत्तर प्रदेश सरकार आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित करने का दावा जोरशोर से कर रही है। वहीं पहले से आधुनिकता की मार झेल रही कजरी को मिर्जापुर के जिला प्रशासन ने जोर का झटका दिया है। वर्षा गीत के रूप में प्रसिद्ध सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षण देने के स्थान पर प्रशासन ने कजरी से मुंह फेर लिया है।

### स्वतंत्रता दिवस के मद्देनजर भारत-नेपाल सीमा पर कड़ी चौकसी

बस्ती। उत्तर प्रदेश में बस्ती परिक्षेत्र के पुलिस उपमहानिरीक्षक आरके भारद्वाज ने कहा है कि स्वतंत्रता दिवस के मद्देनजर भारत-नेपाल सीमा पर चौकसी बढ़ा दी गई है। भारद्वाज ने शुक्रवार को बताया कि बस्ती परिक्षेत्र के सिद्धार्थनगर जिले की सीमा से सटे नेपाल बार्डर पर सीमा सुरक्षा बल (एसएसबी) द्वारा चौकसी बरत रही है। उन्होंने यूनीवार्ता को बताया कि जनपद की सीमा नेपाल से जुड़ी हुई है इसलिये खुली सीमा होने के चलते सुरक्षा को लेकर कड़ी निगरानी रखी जाती है। स्वतंत्रता दिवस के मद्देनजर सुरक्षा बढ़ा दी गई है और हर आने जाने वाले पर नजर रखी जा रही है। उन्होंने बताया कि बीएसएफ के जवान बॉर्डर के साथ आसपास के इलाकों पर नजर बनाये हुए है। उन्होंने बताया कि एसएसबी और पुलिस की सयुक्त टीम द्वारा सीमा से सटे गांवों का भी निरीक्षण किया जा रहा है। सीमा से गुजरने वाले वाहनों की सघंन चेकिंग हो रही है तथा उनके आने-जाने का कारण पूछ कर रजिस्टर पर दर्ज किया जा रहा है। भारद्वाज ने कहा कि बॉर्डर पर सीसीटीवी कैमरे पूरी तरह से सक्रिय है। सीमावर्ती गांव में पुलिस बल की गश्ती बढ़ा दी गयी है। समस्त थाना प्रभारियों और चौकी प्रभारियों को तस्करों के विरुद्ध अभियान चलाकर कार्रवाई करने का निर्देश दिये गये हैं। उन्होंने बताया कि स्वतंत्रता दिवस पर शांति एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिये समाज में भय और आतंक पैदा करने वाले व्यक्तियों को चिन्हित करके उनके विरुद्ध निषेधात्मक कार्यवाही की जा रही है।

### भाजपा नेता शेष नारायण मिश्रा कर निधन, योगी ने जताया शोक

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की उत्तर प्रदेश इकाई के अवध प्रांत के क्षेत्रीय अध्यक्ष शेष नारायण मिश्रा का शुक्रवार को निधन हो गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मिश्रा के निधन पर शोक व्यक्त किया है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक मिश्रा किडनी के संक्रमण से पीड़ित थे और लखनऊ स्थित संजय गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान (एसजीपीजीआई) में पिछले कुछ समय से उनका इलाज चल रहा था। शुक्रवार को सुबह उनका निधन हो गया। उनके परिजनों ने बताया कि मिश्रा का अंतिम संस्कार आज ही उनके गृह जनपद गोंडा में होगा। उन्हों चार दिन पहले ही इलाज के लिए एसजीपीजीआई में भर्ती कराया गया था. इसके पहले उनका इलाज लखनऊ के ही डिवाइन हॉस्पिटल में चल रहा था। उस दौरान प्रदेश के चिकित्सा मंत्री बृजेश पाठक ने अस्पताल जाकर उनकी सेहत की जानकारी ली थी। मुख्यमंत्री योगी ने उनके निधन पर शोक प्रकट करते हुए ट्वीटर पर कहा, भाजपा, अवध क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री शेष नारायण मिश्रा जी के निधन का दु:खद समाचार प्राप्त हुआ है। मेरी ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि। प्रभु श्री राम पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान और परिजनों को यह असीम दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। शांति।

# आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस वे पर डिवाइडर में टकराकर बस गड्ढे में घुसी, 36 यात्री घायल

**आगरा।** आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर शुक्रवार रात बड़ा सड़क हादसा हुआ। जानकारी के मुताबिक एक डबल डेकर बस शुक्रवार तड़के डिवाइडर से टकराकर खाई में गिर गई। हादसे में 36 यात्री घायल हो गए हैं। पुलिस के मुताबिक हादसा नगला खंगार थाना इलाके में तड़के रात करीब एक बजे हुआ जब बस दिल्ली से गोरखपुर जा रही थी। पुलिस अधीक्षक अखिलेश नारायण के मुताबिक एक्सप्रेसवे पर 67 किलोमीटर चलने

के बाद बस अचानक डिवाइडर से टकराकर गड्ढे में गिर गई। सभी घायलों को एंबुलेंस के जरिए सैफई मेडिकल कॉलेज भेजा गया। जानकारी के मुताबिक घायलों में से 28 को अस्पताल में भर्ती कराया गया है, बाकी को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई है।

बताया जा रहा है कि ड्राइवर को झपकी लगने की वजह से ये हादसा हुआ। इस दौरान ज्यादातर यात्री सो रहे थे जो हादसे के बाद ऊपर से नीचे गिरे या किसी का सिर सामने वाली सीट से टकराया। देर रात होने की वजह से मदद भी थोड़ी देर से पहुंची। जानकारी के मुताबिक ये बस नेपाल से दिल्ली आ रही थी। बस में ज्यादातर यात्री या तो दिल्ली में काम करने के लिए आ रहे थे, कुछ इलाज कराने और कुछ घूमने के मकसद से आ रहे थे।

जानकारी के मुताबिक हादसे में ड्राइवर का हाथ कट गया है और उसकी हालत भी गंभीर है। कई यात्रियों को गंभीर चोट लगी है।

अक्सर कहा जाता है कि गाड़ी चलाते हुए शराब नहीं पीनी चाहिए और अगर आपको लगे कि आपको नींद आ रही है तो भूलकर भी गाड़ी नहीं चलानी चाहिए।

# रोडवेज बस ने तीन मजदूर कुचले, मौके पर मौत

एजेंसी

बुलंदशह। उत्तर प्रदेश के जनपद बुलंदशहर में अर्निया थाना क्षेत्र में बीती देर रात एक रोडवेज बस से कुचलकर तीन बाइक सवार मजदूरों की मौत हो गई। जिले के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्लोक कुमार सिंह ने बताया कि एनएच-91 पर गांव ईसनपुर के निकट यह हादसा हुआ। इस दुर्घटना में मारे गये कालीचरन (35 साल) निवासी गांव टक्कर की नगलिया, धर्मेंद्र (32 साल) और छतारी के गांव चौगानपुर निवासी साहब सिंह (28 साल) दशहरा स्थित टीएचडीसी में मजदूरी करते थे। गुरुवार देर रात तीनों बाइक से ईसनपुर के निकट बने एक निजी कंपनी के गेस्ट हाउस पर जा रहे थे। रास्ते में सामने से आ रही रोडवेज बस ने तीनों बाइक सवारों को कुचल दिया। हादसे में तीनों की मौके पर ही मौत हो गई। बस चालक घटनास्थल पर बस को छोड़कर फरार हो गया। पुलिस ने बस के नीचे फंसे मृतकों को बाहर निकाला। घटना की सूचना पर पहुंचे परिजनों में कोहराम मच गया। मृतकों के परिजनों ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है।

## रोडवेज बस और मिनी ट्रक की टक्कर में 12 यात्री घायल हुए, चार गंभीर

बाराबंकी। उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जनपद में गुरुवार को देर रात लखनऊ बहराइच मार्ग पर तेज रफ्तार रोडवेज बस ने एक डीसीएम मिनी ट्रक में पीछे से टक्कर मार दी, जिससे 12 यात्री घायल हो गए। इनमें 04 की हालत गंभीर बताई गयी है।

पुलिस ने शुक्रवार को इस घटना की जानकारी देते हुए बताया कि घायलों को जिला चिकित्सालय में भर्ती करा दिया गया है। पुलिस के अनुसार थाना रामनगर अंतर्गत लखनऊ बहराइच मार्ग पर देर रात एक भीषण सड़क हादसे को अंजाम देते हुए एक तेज रफ्तार रोडवेज बस ने डीसीएम में पीछे से जोरदार टक्कर मार दी।

जानकारी के मुताबिक रोडवेज बस का ड्राइवर डीसीएम को ओवरटेक कर रहा था, इसी दौरान बस अनियंत्रित होकर ट्रक में पीछे से टकरा गयी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि रोडवेज बस के परखच्चे उड़ गए, बस का एक तरफ का हिस्सा बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया।

बलरामपुर डिपो की यह बस कानपुर से बलरामपुर जा रही थी।

## भारत-नेपाल बॉर्डर पर सुरक्षा बढ़ी

गोरखपुर। सुरक्षा कारणों के चलते भारत-नेपाल की अंतर्राष्ट्रीय सीमा गौरीफंटा पर देर रात के आवागमन पर रोक लगा दी गई है। रात आठ बजे के बाद बॉर्डर पार नहीं किया जा सकेगा। स्वतंत्रता दिवस को लेकर हर तरफ चौकसी बरती जा रही है। इसे लेकर अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर भी विशेष सुरक्षा के निर्देश दिए गए हैं। क्षेत्रक मुख्यालय के डीआईजी जेडी वशिष्ट की ओर से सभी वाहिनी को यह निर्देश दिया गया है कि स्वतंत्रता दिवस के मद्देनजर बॉर्डर पर विशेष चौकसी बरती जाए।

# मेरठ में मिली सिर कटी लाश, प्लास्टिक की कैरेट में ठूंसकर नाले में फेंका

**मेरठ।** यूपी के मेरठ में उस समय खलबली मच गई, जब एक युवती की सिर कटी लाश मिली। लाश देखकर लोगों के होश उड़ गए। हत्यारे युवती का सिर बेरहमी से काटकर उसकी लाश प्लास्टिक के कैरेट में ठूंसकर नाले में फेंककर भाग गए। आसपास के लोगों ने जब देखा तो आनन-फानन में पुलिस को सूचना दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लिया है। मामला जिले के लिसाड़ी गेट के लक्खीपुरा गली नंबर 28 का है। यहां एक गहरे नाले में शुक्रवार सुबह के समय युवती की लाश बरामद हुई। फल रखने वाले प्लास्टिक कैरेट में युवती की लाश सिर कटी लाश भरकर और ऊपर से कपड़ा बांधकर फेंकी गई थी।

मृतका के पैर कपड़े से बाहर दिखाई देने कर आसपास के लोगों ने लिसाड़ी गेट पुलिस को सूचना दी। सिर कटी लाश मिलने के बाद मौके पर हड़कंप मच गया। सीओ कोतवाली अरविंद चौरसिया और पुलिस फोर्स मौके पर दौड़ी।

फिलहाल शव को बाहर निकाला गया है। डेड बॉडी करीब 1 से 2 दिन पुरानी बताई गई है। अभी तक मृतक का सिर बरामद नहीं हो सका और न ही उसकी पहचान हो सकी है। फॉरेंसिक टीम को मौके पर बुलाया गया है और छानबीन की जा रही है। आसपास के सीसीटीवी कैमरा कैमरों को खंगाला जा रहा है।

# वृद्धा पेंशन में घोटाले का भंडाफोड़, कार मालिक से लेकर सरकारी कर्मी को बताया पात्र

कानपुर। वृद्धा पेंशन योजना में घोटाले का भंडाफोड़ हो गया है। शादी अनुदान और राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना के बाद अब वृद्धा पेंशन में अपात्र मिले हैं। इन आवेदकों का सत्यापन शहरी क्षेत्र में एसडीएम और ग्रामीण इलाकों में बीडीओ को करना था, लेकिन उन लोगों ने बगैर सत्यापन इन्हें पात्र मान लिया। डीएम विशाख जी के आदेश पर जिला स्तरीय अधिकारियों ने दोबारा सत्यापन किया तो पोल खुल गई। जो अपात्र मिले उनमें कार मालिक से लेकर सरकारी कर्मी तक शामिल हैं।

एसडीएम और बीडीओ ने वृद्धा पेंशन के 5779 आवेदनों को जांच के बाद पात्र मानते हुए समाज कल्याण विभाग भेजा था। दोबारा सत्यापन में कुल

आवेदनों में 11 फीसदी से ज्यादा यानी 67 अपात्र निकले हैं।

### ये निकले अपात्र

नसिरापुर निवासी 68 वर्षीय श्रीकांत शुक्ला ने पेंशन के लिए आवेदन किया है। बिल्हौर के एडीओ सहकारिता ने इनके घर जाकर सत्यापन किया तो पता चला कि इनके पास चार पहिया वाहन है। वहीं सी ब्लॉक गोविन्द नगर निवासी गंगाराम को पहले से दो पेंशन मिल रही हैं। बावजूद इसके उन्हें पात्र मान लिया गया था।डुडवा जमौली निवासी विनोदनी आर्थिक संपन्न हैं,उनके पास चार बीघा जमीन है। वह भी अपात्र हैं।

### सात साल पुराने आय प्रमाण पत्र

कर्नलगंज निवासी 71 वर्षीय जैतून निशा ने आवेदन पत्र में 2015 में बना आय प्रमाण पत्र लगा दिया है। इसके बाद भी जिम्मेदारों ने उन्हें पात्र मान लिया था। वहीं, आवेदन में मैकू हसन ने तलाक महल और विजय लक्ष्मी ने भीतरगांव का जो पता भरा था। दोनों लोग उन इलाकों में रहते ही नहीं हैं। जिला समाज कल्याण अधिकारी डॉ. प्रज्ञा पांडेय ने बताया कि अपात्रों के नाम सत्यापन के बाद हटा दिए गए हैं।

### बलिया में महावीरी झंडा जुलूस से खींचकर युवक की हत्या

बलिया। बलिया में महावीरी झंडा जुलूस के दौरान गुरुवार की रात दुस्साहसिक वारदात को अंजाम दिया गया है। दुबहड़ के नगवां निवासी 20 वर्षीय लखन की युवकों ने जुलूस के दौरान गली में खींचकर हत्या कर दी। घटना की जानकारी होते ही पुलिस महकमे में खलबली मच गयी। पुलिस मामले की छानबीन करने में जुटी है। बताया जाता है कि चौक-लोहापट्टी मार्ग पर एक जुलूस गुजर रहा था। इसी बीच लखन से कुछ युवकों का विवाद हो गया। इसके बाद युवक लखन को एक गली में खींचकर ले गये और उसे मारने पीटने के साथ ही उसपर चाकू से हमला कर दिया। उसे बचाने में शहर कोतवाली के मीन बाजार का निवासी विजय सोनी भी घायल हो गया। उसे भी चाकू लगा है। घटना के बाद मौके पर अफरातफरी मच गई।

# गुमशुदा शख्स की उसी के घर से निकली लाश

शाहजहांपुर। उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में लापता शख्स की उसी के घर से लाश मिलने के बाद पुलिस ने उसकी पत्नी को गिरफ्तार किया है। आरोप है कि महिला ने बेडरूम में ही अपने पति की लाश दफन कर दी थी। मामला तब सामने आया जब घर से बदबू आने लगी जिसके बाद मृतक के भाई ने पुलिस से शिकायत की। महिला ने पूछताछ में पुलिस को बताया कि उसके पति ने आत्महत्या की है। आरोपी महिला ने पुलिस को बताया कि वो डर गई जिसके बाद उसने शव को घर में दफना दिया। पुलिस ने शव को बरामद करने के बाद आरोपी महिला को हिरासत में ले लिया है। जानकारी के मुताबिक गड़िया रंगीन थाना इलाके के खमरिया गांव निवासी गोविंद सिंह तीन भाइयों में सबसे छोटा था। वह अपनी पत्नी शिल्पी और तीन बच्चों के साथ रहते था। मृतक की पत्नी ने पूछताछ के दौरान पुलिस को बताया कि सात अगस्त को दोनों के बीच झगड़ा हुआ था जिसके बाद उसके पति ने कथित तौर पर फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया।

पुलिस के मुताबिक घर से बदबू आने की शिकायत मिलने के बाद जांच टीम मौके पर पहुंची और मृतक का शव बरामद किया। पूछताछ के दौरान गोविंद की पत्नी ने कहा कि उसके पति ने झगड़े के बाद 7 अगस्त को फांसी लगा ली थी।

# बरेली में रक्षाबंधन पर बहन ने की फांसी लगाकर की आत्महत्या

बरेली। उत्तर प्रदेश के बरेली में रक्षा बंधन के मौके पर प्रेमनगर इलाके में एक बहन ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। खुशियों का त्योहार देखते ही देखते मातम में बदल गया। प्रेमनगर पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में शव का पंचायत नामा भरा गया।

जानकारी के मुताबिक प्रेमनगर भरत गली के रहने वाले आलोक देवल ने अपनी बेटी सुरभि की शादी 14 नवंबर 2021 को संभल के सिरसी गांव के रहने वाले विशाल देवल के साथ की थी। आरोप है कि शादी के कुछ दिन बाद ही ससुराल वाले दहेज के लिए उसका उत्पीड़न कर रहे थे। उसके साथ मारपीट कर रहे थे। काफी हंगामा होने के बाद डेढ़ महीने पहले भाई अंकित देवल अपनी बहन सुरभि को बरेली ले आए थे। सुरभि तब से मायके में रह रही थी। आरोप है कि फोन पर भी ससुराल वाले उसे प्रताड़ित करते थे। गुरुवार को भी उसकी फोन पर पति से बात हुई थी। इसके बाद उसने अपना मोबाइल बंद कर लिया। सुरभि की मां सोनी अपने मायके राखी बांधने गई थी। घर में सुरभि व उनका भाई अंकित थे।

# सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया से गायब हुआ लॉकर, 6 कैरेट डायमंड और लगभग 2 किलो सोना था रखा

**कानपुर।** सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की कराचीखाना शाखा में कारोबारी रमेश खन्ना के लॉकर से गायब सोने चांदी और हीरे के जेवरात का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। गुरुवार को कारोबारी ने व्यापारी नेताओं के साथ फीलखाना थाने में तहरीर दी। जिस पर उन्होंने आरोप लगाया कि पूर्व बैंक मैनेजर ने अपने साथियों के साथ मिलकर पूरा लॉकर ही गायब कर दिया। तिलक नगर निवासी व्यापारी रमेश खन्ना ने बताया की उनका और उनकी दादी स्व.देवकी देवी का संयुक्त

खाता सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया कराचीखाना शाखा में है। साथ में लॉकर भी है। अकाउंट का नंबर 6249 है और लॉकर नंबर 391बी है।यह लॉकर लगभग 45 साल से भी ज्यादा पुराना है जिसमें लगातार जेवर आदि रखा जाता रहा है। उक्त लॉकर में उनके परिवार का लगभग 1 किलो 900 ग्राम सोना, 600 ग्राम चांदी व लगभग 6 कैरेट का डायमंड था।

### लॉकर गायब हो गया

कारोबारी ने बताया कि जब 27 अप्रैल 2022 को वह लॉकर ऑपरेट करने पहुंचे तो उन्हें बताया गया कि पूरा लॉकर ही नहीं मिल रहा है। रमेश खन्ना ने कई बार बैंक में संपर्क किया पर कोई जवाब नहीं दिया गया। बार बार कहा जाता रहा की बैंक शाखा में 11 लौकरों की डकैती में ब्रांच मैनेजर जेल में हैं और सब अस्त व्यस्त हो चुका है। इसलिए नए ब्रांच मैनेजर के नियुक्त होने के बाद देखा जाएगा। रमेश खन्ना ने 15 और 29 जून 2022 को इस संबंध में बैंक को पत्र लिखा जिसका कोई जवाब बैंक ने नहीं दिया। व्यापारी नेता अभिमन्यु गुप्ता ने कहा कि मामला गम्भीर है फीलखाना पुलिस को मामले में तहरीर दी गई है। इस मामले में एफआईआर दर्ज कराकर कार्रवाई कराने का प्रयास किया जाएगा।

# जौनपुर में कपड़ा दुकान में भीषण आग, 60 लाख का माल खाक

एजेंसी

जौनपुर। जौनपुर में मुंगराबादशाहपुर नगर के साहबगंज में लिबास गारमेंट की दुकान में गुरुवार की रात करीब ढाई बजे भीषण आग लग गई। बिजली शॉर्ट सर्किट से लगी भीषण आग में दो लाख नगदी समेत 60 लाख कीमत के कपड़े जलकर ख़ाक हो गए। आग के तांडव से घर की छत व दीवारें भी फट गई। आग की लपटें इतनी भीषण थी कि सीढ़ी पर रखे कपड़े से आग की लपटे दुकान सहित तीसरे मंजिल तक पहुंच गई। मौके पर पहुंची सतहरिया व मड़ियाहूं फायर ब्रिगेड तथा नगरपालिका की हाइड्रोलिक व पानी टंकर व मुहल्ले के लोगो की तत्परता से 4 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया।

घटना बीती गुरुवार की रात 2:30 बजे की है।नगर के गल्ला मंडी निवासी बलराम जायसवाल की लिबास गारमेंट के नाम से रेडीमेड की फुटकरकी दुकान है।ऊपरी हिस्से तीन तल तक पूरा रेडीमेड कपड़ा भरा हुआ था। रात लगभग 2:30 बजे दुकान में शॉर्ट सर्किट से आग लग गई।

दुकान से धुआं उठाते देख लगभग रात के 3:00 बजे लखनऊ से काशी विश्वनाथ ट्रेन से घर जाते समय मुहल्ले के एक व्यक्ति ने देखा और दुकान मालिक व मुहल्ले वासियों को सूचना दी सूचना मिलते ही आस-पास के लोग जमा हो गए। देखते ही देखते कुछ ही देर में आग उग्र हो गई। ऊपर के हिस्से के तीन तलों तक की गोदामों पर आग की भीषण लपटे से तीनों तल धूं -धूं कर जलने लगी।

देखते ही देखते तीनों तल में रखा सारा समान जलकर नष्ट हो गया।मौके पर मौजूद भारी भीड़ ने आग बुझाने का हर सम्भव प्रयास किया लेकिन सफलता नहीं मिली। सूचना पर पुलिस, नगरपालिका परिषद का पानी टैंकर व अग्निशमन गाड़ी मौके पर पहुंच गई। दुकान का शटर खोलने का भी प्रयास किया गया, लेकिन वह आग लगने से जाम हो गया।

## भाजपा नेता के अवैध निर्माण पर चला बुलडोजर, अपार्टमेंट की महिलाओं ने उठाई थी आवाज

वाराणसी। सेंट्रल जेल रोड स्थित वरुणा इनक्लेव अपार्टमेंट के बाहर भाजपा के जिला उपाध्यक्ष सत्यप्रकाश सिंह उर्फ अखंड सिंह की ओर से पांच सौ वर्ग फुट जमीन कब्जा कर निर्माण कराया गया था। वीडीए के प्रवर्तन दल ने गुरुवार को इस निर्माण को तोड़ दिया। इस दौरान बड़ी संख्या में कैंट थाने की पुलिस मौजूद थी। वीडीए के जोनल अधिकारी व अवर अभियंता भी मौजूद थे। अपार्टमेंट में रहने वाली महिलाओं ने अवैध निर्माण को लेकर बीते मंगलवार को प्रदर्शन किया था। बताया कि अपार्टमेंट में ही रहने वाले भाजपा नेता ने जमीन पर अवैध कब्जा कर निर्माण कराया है। बताया कि पांच माह से सभी उच्चाधिकारियों को प्रार्थना-पत्र देने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। आरोप है कि जब कालोनी के

लोगों ने विरोध किया गया तो भाजपा का जिला उपाध्यक्ष होने का धौंस दिखाया। इस वजह से सड़क पर उतरना पड़ा। उधर, महिलाओं के प्रदर्शन और सोशल मीडिया पर प्रकरण के वायरल होने के बाद वीडीए प्रशासन चेता। गुरुवार को पुलिस की मौजूदगी में अवैध निर्माण तोड़ा गया। वीडीए के अधिकारियों ने बताया कि पांच सौ वर्ग फुट में अवैध निर्माण कराया गया था। मौके पर जोनल अधिकारी परमानंद यादव, अनिल दुबे, प्रकाश कुमार सिंह गौरव, जयप्रकाश, अवर अभियंता पीएन दुबे मौजूद थे। आवाज उठाने वाली महिलाओं डॉ. अमृता कात्यायनी, रश्मि सिंह, कल्पना वर्मा, डॉली सिंह, शशिकला सिंह, पूर्णिमा सिंह ने कार्रवाई की सराहना की। कार्रवाई के दौरान किसी भी तरह का कोई विरोध नहीं हुआ। जिला उपाध्यक्ष सत्यप्रकाश सिंह उर्फ अखंड सिंह का कहना है कि राजस्व विभाग की जांच में यह आराजी नं. सोसाइटी से अलग मिली है। सोसाइटी के ही तीन परिवारों की ओर से बाहरी लोगों के प्रभाव में आकर उन्हें बदनाम करने के लिए यह काम किया गया। नक्शा पास न होने पर वीडीए उपाध्यक्ष ने निर्माण को हटाने का निर्देश दिया था।

## जौनपुरः स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की 115 साल की पत्नी को जिलाधिकारी ने किया सम्मानित

जौनपुर। आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के जौनपुर जनपद में आयोजित किए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की कड़ी में जिले के स्वतंत्रता सेनानी बाबू रामेश्वर प्रसाद सिंह की धर्मपत्नी 115 वर्षीय महारानी देवी को जिलाधिकारी ने शुक्रवार को सम्मानित किया। गौरतलब है कि आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान 11 अगस्त से 17 अगस्त तक मनाये जा रहे 'स्वतंत्रता सप्ताह' के तहत 13 से 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस क्रम में जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा ने स्वतंत्रता सेनानी बाबू रामेश्वर प्रसाद सिंह की धर्मपत्नी महारानी देवी जी को उनके आवास पर तिरंगा एवं अंगवस्त्रम देकर सम्मानित किया। उन्होंने महारानी देवी से आशीर्वाद भी प्राप्त किया। इस दौरान महारानी देवी ने जिलाधिकारी के साथ जंग ए आजादी के दौरान किए गए संघर्षों की यादों को साझा किया। महारानी देवी जी की पुत्रवधू विमला सिंह ने बताया कि देश की आजादी में बाबूजी शुरुआत से ही सक्रिय थे और आजादी की लड़ाई में वह कई बार जेल भी गए। बाबू रामेश्वर सिंह का निधन 05 अगस्त 1982 को हुआ है। स्वतंत्रता संग्राम में महारानी देवी ने भी अपना योगदान दिया। इस अवसर पर जिलाधिकारी के साथ मुख्य विकास अधिकारी साईं तेजा सीलम, अधिशासी अधिकारी संतोष कुमार मिश्रा, समाजसेवी शमशेर शेख और सलमान शेख आदि उपस्थित रहे।

## शार्ट न्यूज

### औद्योगिक उत्पादन वृद्धि जून में रही 12.3 प्रतिशत, तुलनात्मक आधार का प्रभाव

नयी दिल्ली। अनुकूल तुलनात्मक आधार के लाभ से औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) पर आधारित भारत में औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि दर एक साल पहले इसी माह की तुलना में 12.3 प्रतिशत ऊंची रही।यह महामारी के बाद देश की आर्थिक दशा में सुधार दर्शाता है। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा शुक्रवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, जून में खनन क्षेत्र के उत्पादन में सालाना आधार पर 7.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि 12.5 प्रतिशत रही। बिजली क्षेत्र ने जून में सालाना आधार पर 16.4 फीसदी की वृद्धि दर्ज की। चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-जून तिमाही के दौरान आईआईपी एक वर्ष पहले की इसी अवधि की तुलना में 12.7 प्रतिशत ऊंचा रहा। इक्रा की मुख्य अर्थशास्त्री अदिति नायर ने कहा, जून का यह आंकड़ा हमारे अनुमान से अधिक है। जल्दी-जल्दी आने वाले आंकड़ों में आर्थिक गतिविधियों के सालाना आधार पर नरम पड़ने के रुझानों को देखते हुए हमें लगता था कि जून में औद्योगिक वृद्धि दर 10.2 प्रतिशत।

### रुपया 12 पैसे उतरा

मुंबई। दुनिया की प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर के कमजोर रहने के बावजूद आयातकों और बैंकरों की डॉलर मांग बढ़ने के दबाव में आज अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया 12 पैसे गिरकर 79.74 रुपये प्रति डॉलर पर आ गया। पिछले कारोबारी दिवस रुपया 37 पैसे गिरकर 79.62 रुपये प्रति डॉलर पर रहा था। कारोबार की शुरुआत में रुपया पांच पैसे टूटकर 79.67 रुपये प्रति डॉलर पर खुला। सत्र के दौरान लिवाली बढ़ने से यह 79.74 रुपये प्रति डॉलर के निचले स्तर तक लुढ़क गया जबकि बिकवाली की बदौलत यह 79.63 रुपये प्रति डॉलर के उच्चतम स्तर पर भी रहा। अंत में पिछले सत्र के 79.62 रुपये प्रति डॉलर की तुलना में 12 पैसे उतरकर 79.74 रुपये प्रति डॉलर रह गया।

### विदेशी मुद्रा भंडार 89.7 करोड़ डॉलर घटा

मुंबई। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 05 अगस्त को समाप्त सप्ताह में 89.7 करोड़ डॉलर कम होकर 572.97 अरब डॉलर पर आ गया जबकि इसके पिछले सप्ताह यह 2.32 अरब डॉलर बढ़कर 573.9 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से शुक्रवार को जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 05 अगस्त को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 1.61 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 509.64 अरब डॉलर रह गया। हालांकि इस अवधि में स्वर्ण भंडार 67.1 करोड़ डॉलर की बढ़ोतरी के साथ 40.31 अरब डॉलर पर पहुंच गया। इसी तरह आलोच्य सप्ताह विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) 4.6 करोड़ डॉलर बढ़कर 18.03 अरब डॉलर पर रहा। वहीं, इस अवधि में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि 30 लाख डॉलर कम होकर 4.98 अरब डॉलर रह गया।

### पेट्रोल-डीजल की कीमत स्थिर

नयी दिल्ली। तेल विपणन कंपनियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बीते कुछ दिनों से कच्चे तेल की कीमत 100 डॉलर प्रति बैरल से नीचे रहने बावजूद देश में शुक्रवार को पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया। देश में करीब दो माह से अधिक समय से ईंधन की कीमतों में स्थिरता होने से आम आदमी के लिए राहत बनी हुयी है। सार्वजनिक क्षेत्र की देश की सबसे बड़ी तेल विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन (आईओसीएल) के अनुसार, दिल्ली में आज पेट्रोल के दाम 96.72 रुपये और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर बिक रहा है। मुंबई में पेट्रोल और डीजल के दाम क्रमश: 106.31 रुपये प्रति लीटर और 94.27 रुपये प्रति लीटर पर हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में लंदन ब्रेंट क्रूड आज 0.34 प्रतिशत गिरकर 99.26 डॉलर प्रति बैरल और अमेरिकी क्रूड 0.38 प्रतिशत की गिरावट के साथ 93.98 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा। देश में पेट्रोल और डीजल की कीमतें मूल्य वर्धित कर (वैट) और माल ढुलाई शुल्क के आधार पर सभी राज्यों में अलग-अलग हैं। पेट्रोल-डीजल के मूल्यों की प्रतिदिन समीक्षा की जाती है।

### कीमती धातुओं में तेजी

मुंबई। वैश्विक बाजार की तेजी की बदौलत आज घरेलू सर्राफा बाजार में सोना 93 रुपये प्रति दस ग्राम और चांदी 379 रुपये प्रति किलोग्राम चढ़ गई। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सोना हाजिर 0.18 प्रतिशत की तेजी लेकर 1792.73 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गया। इसी तरह अमेरिका सोना वायदा 0.25 प्रतिशत चमककर 1794.20 डॉलर प्रति औंस हो गया। इस दौरान चांदी हाजिर भी एक प्रतिशत चढ़कर 20.49 डॉलर प्रति औंस बोली गई। देश के सबसे बड़े वायदा बाजार एमसीएक्स में सोना 93 रुपये चमककर 52429 रुपये प्रति दस ग्राम और सोना मिनी 105 रुपये की तेजी के साथ 52351 रुपये प्रति दस ग्राम पर रही। इसी तरह चांदी 379 रुपये महंगी होकर 58756 रुपये प्रति किलोग्राम और चांदी मिनी 294 रुपये मजबूत होकर 59222 रुपये प्रति किलोग्राम बोली गयी।

### हीरो मोटोकॉर्प को 600 करोड़ रुपये से ज्यादा का मुनाफा, 53 प्रतिशत बढ़ा कंपनी का रेवेन्यू

नई दिल्ली। टू-व्हीलर बनाने वाली देश की सबसे बड़ी कंपनी हीरो मोटोकॉर्प को 30 जून 2022 को खत्म हुई तिमाही में 624.52 करोड़ रुपये का स्टैंडअलोन नेट प्रॉफिट हुआ है। पिछले साल की जून तिमाही के मुकाबले कंपनी का मुनाफा 71 पर्सेंट बढ़ा है। पिछले फाइनेंशियल ईयर की जून तिमाही में हीरो मोटोकॉर्प को 365 करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ था। हीरो मोटोकॉर्प के शेयर 12 अगस्त 2022 को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में 2760.90 रुपये के स्तर पर बंद हुए हैं। अप्रैल-जून 2022 तिमाही में कंपनी का रेवेन्यू 53 पर्सेंट बढ़कर 8,392.54 करोड़ रुपये रहा है। एक साल पहले की समान अवधि में कंपनी का रेवेन्यू 5,487 करोड़ रुपये था। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में कंपनी के टोटल एक्सपेंसेज 7,621.73 करोड़ रुपये रहे। पिछले साल की समान अवधि में कंपनी के टोटल एक्सपेंसेज 5,141 करोड़ रुपये थे। जून 2022 तिमाही में इबिट्डा 941 करोड़ रुपये रहा। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में कंपनी ने 13.90 लाख दो-पहिया गाड़ियां बेचीं। वहीं, एक साल पहले की समान अवधि में कंपनी ने 10.25 लाख टू-व्हीलर बेचे थे। इस साल अब तक हीरो मोटोकॉर्प के शेयरों ने 11 पर्सेंट से ज्यादा रिटर्न दिया है। कंपनी के शेयरों ने शुरुआत से लेकर अब तक 2400 पर्सेंट से ज्यादा रिटर्न दिया है। पिछले 5 साल में हीरो मोटोकॉर्प के शेयरों में करीब 31 पर्सेंट की गिरावट आई है।

### जोमैटो के शेयर में जबरदस्त तेजी, एक्सपर्ट ने दी बेचने की की सलाह

नई दिल्ली। फूड डिलीवरी कंपनी जोमैटो के शेयरों में आज शुक्रवार को 8 प्रतिशत तक की जबरदस्त तेजी देखने को मिल रही। कंपनी के शेयर पिछले महीने एनएसई पर अपने नए 52-वीक के निचले स्तर रु 40.60 पर पहुंचने के बाद लगातार ऊपर की ओर चल रहे हैं। यह फूड प्लेटफॉर्म स्टॉक अगस्त 2022 में लगभग रु 46.80 से बढ़कर रु 63.10 के स्तर पर पहुंच गया है। शेयर बाजार के एनालिस्ट्स के अनुसार, Zomato ने जून तिमाही में अनुमान से बेहतर रिपोर्ट जारी की हैं। इतना ही नहीं कंपनी मैनेजमेंट लेवल पर कई अहम बदलाव पर भी विचार कर रही है। अगले चार तिमाहियों में भी ब्रेकईवन को पूरा करने का वादा किया है। एक्सपर्ट के मुताबिक, स्टॉक वर्तमान में रु 48 से रु 70 के स्तर पर कारोबार कर रहा है और जिनके पोर्टफोलियो में यह स्टॉक शामिल है, उन्हें लगभग रु 70 के लेवल से बाहर निकलने की सलाह दी जाती है। जीसीएल सिक्योरिटीज के सीईओ रवि सिंघल ने कहा, ज़ोमैटो ने अनुमानित त्ता परिणामों की तुलना में बेहतर रिपोर्ट जारी की है और इसके प्रबंधन ने अगली चार तिमाहियों में ब्रेकईवन को पूरा करने का वादा किया है। हालांकि, स्टॉक अभी भी रु 73 प्रति इक्विटी शेयर के अपने इश्यू प्राइस से नीचे कारोबार कर रहा है। चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-जून तिमाही में जोमैटो का कंसॉलिडेटेड नेट लॉस घटकर 185.7 करोड़ रुपये रहा है। एक साल पहले की समान अवधि में कंपनी का घाटा 356.2 करोड़ रुपये था।

# बुनियादी सुधारों के दौर से गुजर रहा है भारत का खनन क्षेत्र: सुमित देब

एजेंसी

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय खनिज विकास निगम (एनएमडीसी) के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ (फिक्की) की खनन समिति के अध्यक्ष सुमित देब ने कहा है कि देश के खनन क्षेत्र में कारोबार का वातावरण सुगम बनाने के अलावा खनिजों के उत्पादन में आत्मनिर्भरता का लक्ष्य हासिल करने के लिए नीतिगत सुधारों के साथ राष्ट्र एक बेहतर एवं आदर्श बदलाव के दौर से गुजर रहा है।

श्री देब ने शुक्रवार को यहां संवाददाताओं से बातचीत में कहा कि उद्योग, केंद्र और राज्यों सहित सभी संबंधित एवं प्रासंगिक हितधारकों के बीच सहयोग महत्वपूर्ण है और 23-24 अगस्त को यहां होने वाली सम्मेलन आपसी सहयोग और आगे की योजना को मजबूत करने के लिए एक सशक्त मंच के रूप में काम करेगा। उन्होंने कहा कि आसान और कुशल निर्णय हमारी नीति बनाने में महत्वपूर्ण रहे हैं और नीति निर्माण को और आसान बनाने तथा समयबद्ध एवं विवेकपूर्ण तरीके से मंजूरी प्राप्त करने में मदद करने के लिए मानदंड तैयार किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि आयोजन का मुख्य उद्देश्य 'विजन 2047' के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए खनिज और धातु क्षेत्र के भविष्य के रोडमैप पर विचार-विमर्श करना है। इसमें उद्योग, नीति और शिक्षा जगत के वक्ताओं द्वारा प्रमुखता से भाग लिया जाएगा। वैश्विक और घरेलू उत्पादक, खनिज संगठन, नीति निर्माता, खान उपकरण निर्माता, वैश्विक कंपनियों के कंट्री हेड, केंद्र और राज्य सरकार के अधिकारी और अन्य लोग कॉन्फ्रेंस में उपस्थित होंगे और अलग-अलग विषयों पर अपने विचार रखेंगे। श्री देब ने बताया कि

देश में मौजूद खनिज संसाधनों के विशाल आधार और विकसित और आसान व्यापार और नियामक वातावरण को देखते हुए कई प्रमुख अंतरराष्ट्रीय कंपनियां भी घरेलू कंपनियों के साथ-साथ देश की खदानों और खनिज उद्योग में काफी अधिक दिलचस्पी दिखा रहे हैं।

एनएमडीसी के निदेशक (उत्पादन) डी के मोहंती ने कहा कि देश आत्मनिर्भरता के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है और आयात पर निर्भरता को कम करने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

खान और खनिज उद्योग विकास के लिए भारत की भविष्य की योजनाओं में एक प्रमुख भूमिका निभाएंगे क्योंकि देश को 'आत्मनिर्भर भारत' में बदलने के लक्ष्य को जल्द से जल्द प्राप्त करना है।

फिक्की की उप-महासचिव ज्योति विज ने कहा कि खान और खनिज क्षेत्र सरकार की निर्णय लेने की प्रक्रिया के मूल में है और सरकार का लक्ष्य है कि घरेलू संसाधनों का अधिकतम उपयोग प्राप्त करना है, जिससे रोजगार को भी बढ़ावा मिलेगा और देश के विभिन्न हिस्सों में तेजी से आर्थिक विकास होगा। आगामी कॉन्फ्रेंस में नए युग के खनिजों, डिजिटलीकरण और ऑटोमेशन और अन्य तकनीकी इनोवेशंस पर भी विचार-विमर्श होगा। इस दौरान कई नये संबंधित विषयों पर बातचीत की जाएगी। कॉन्फ्रेंस खनिजों और धातुओं के लिए वैश्विक वस्तु बाजार को समझने में सक्षम होगा, खनिज विकास और आर्थिक विकास के बीच अंतर-संबंध को उजागर करेगा, अंतरराष्ट्रीय बाजारों में ऐसा घटनाक्रम जो भारतीय खनिजों और धातु उद्योग को प्रभावित कर सकता है और भारतीय खनिजों और धातु उद्योग में अन्य अवसरों की पहचान कर सकता है।उन्होंने कहा कि भारत विविध खनिजों से संपन्न देश है और ईंधन, परमाणु, धातु, गैर-धातु और लघु खनिजों सहित 95 खनिजों का उत्पादन करता है।

सुश्री विज ने कहा कि काफी क्षेत्रों में अभी तक महत्वपूर्ण खनिज संसाधनों का अभी तक खनन नहीं होने, नये खनिजों की खोज में कई तरह की कमियों को दूर करते हुए खनन कंपनियों के पास देश को देने के लिए बहुत कुछ है। इसके अलावा, शहरीकरण की तीव्र गति के साथ, यह उम्मीद की जाती है कि विशेष रूप से बुनियादी ढांचे और विनिर्माण क्षेत्रों से खनिज और धातुओं की मांग में आने वाले सालों में भी लगातार वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि घरेलू खनन उद्योग मांग और आपूर्ति संतुलन स्थापित करने में सहयोग कर देश को पांच हजार अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य की दिशा में बड़ा योगदान दे सकता है।

# उत्तर प्रदेश में 15 करोड़ रुपये से अधिक नकदी और आभूषण बरामद

नयी दिल्ली। आयकर विभाग ने सार्वजनिक अनुबंध और रियल एस्टेट डेवलपमेंट के कारोबार में लगे झांसी स्थित एक समूह के ठिकानों पर छापेमारी कर 15 करोड़ रुपये से अधिक की नकदी और आभूषण बरामद किया है। विभाग ने आज यहां जारी बयान में कहा कि श्ह छामापारी झांसी, दिल्ली, लखनऊ, कानपुर और गोवा स्थित लगभग 30 परिसरों में चलाया गया। तलाशी अभियान के दौरान, विभिन्न तीसरे पक्षों की कई अचल संपत्तियों के दस्तावेजी साक्ष्य सहित कई आपत्तिजनक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं और उन्हें जब्त कर लिया गया है। लोक अनुबंध के कारोबार में साक्ष्य के प्रारंभिक विश्लेषण से पता चला है कि समूह हर वर्ष के अंत में अपने नियमित बही खातों में हेरफेर के माध्यम से अपने मुनाफे को कम दिखा कर बड़े पैमाने पर कर चोरी कर रहा था। ये हेर-फेर फर्जी खर्चों और फर्जी विविध लेनदारों आदि के दावे की प्रकृति के थे। इन विविध लेनदारों को अनुपस्थित और असत्यापित पाया गया था। 250 करोड़ रुपये से अधिक की राशि के फर्जी खर्च और फर्जी विविध लेनदारों का दावा जब्त किए गए सबूतों से आंका गया है। तलाशी के दौरान शामिल किए गए प्रमुख व्यक्ति ने स्वेच्छा से उपरोक्त में से 150 करोड़ रुपये से अधिक की अतिरिक्त आय होना स्वीकार किया है।

रियल एस्टेट के कारोबार में लगी कंपनियों द्वारा अपनाई गई एक अन्य कार्यप्रणाली में स्टांप शुल्क मूल्य से अधिक धन की प्राप्ति शामिल थी जिसके परिणामस्वरूप कर चोरी हुई। इसके अतिरिक्त, ये कम्पनियाँ पर्याप्त निर्माण कार्य पूर्ण होने के बाद भी लेखांकन मानकों के अनुसार कर के लिए आय की घोषणा नहीं कर रही थीं।

अब तक, तलाशी के दौरान एकत्र किए गए साक्ष्यों की जांच में बेहिसाब प्राप्तियों की मात्रा का पता चला है, जो कुल मिलाकर 150 करोड़ रुपये है।

तलाशी अभियान में अब तक 15 करोड़ रुपये से अधिक की बेहिसाबी नकदी और जेवरात भी बरामद हुए हैं।

# शेयर बाजार में तेजी जारी

**मुंबई।** वैश्विक बाजार की मजबूती से उत्साहित निवेशकों की स्थानीय स्तर पर तेल एवं गैस, ऊर्जा, धातु, पावर और यूटिलिटीज समेत तेरह समूहों में हुई लिवाली से शेयर बाजार आज लगातार पांचवें दिन तेजी पर रहा।

बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 130.18 अंक चढ़कर 59462.78 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 39.15 अंक बढ़कर 17698.15 अंक पर रहा। इसी तरह बीएसई का मिडकैप 0.15 प्रतिशत की बढ़त लेकर 24,765.05 अंक और स्मॉलकैप 0.39 प्रतिशत की तेजी के साथ 27,905.91 अंक पर रहा।

इस दौरान बीएसई में कुल 3543 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 1809 में लिवाली जबकि 1581 में बिकवाली हुई वहीं 153 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह एनएसई में 26 कंपनियों में तेजी जबकि 24 में गिरावट रही।

बीएसई में तेरह समूहों में लिवाली जबकि शेष छह में बिकवाली हुई। इस

दौरान तेल एवं गैस 2.47, ऊर्जा 2.15, धातु 1.77, यूटिलिटीज 1.60, पावर 1.52, बेसिक मैटेरियल्स 0.93 और रियल्टी समूह के शेयर 0.64 प्रतिशत चढ़े वहीं हेल्थकेयर 1.02, आईटी 0.76 और टेक समूह में 0.80 प्रतिशत की गिरावट रही।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तेजी का रुख रहा। ब्रिटेन का एफटीएसई 0.35, जर्मनी का डैक्स 0.46, जापान का निक्केई 2.62 और हांगकांग का हैंगसेंग 0.46 प्रतिशत उछल गया जबकि चीन का शंघाई कंपोजिट 0.15 प्रतिशत गिर गया।

शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 97 अंक टूटकर 59,235.98 अंक पर खुला और बिकवाली के दबाव में थोड़ी देर बाद ही 59,113.01 अंक के निचले स्तर तक लुढ़क गया। हालांकि लिवाली होने से दोपहर बाद यह 59,538.08 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंचा।

अंत में संभलते हुए यह पिछले दिवस के 59,332.60 अंक के मुकाबले 0.22 प्रतिशत बढ़कर 59,462.78 अंक पर रहा।

वहीं निफ्टी 17,659.65 अंक पर सपाट खुला। कारोबार के दौरान यह 17,597.85 अंक के निचले जबकि 17,724.65 अंक के उच्चतम स्तर पर रहा। अंत में पिछले सत्र के 17,659.00 अंक की तुलना में 0.22 प्रतिशत बढ़कर 17,698.15 अंक पर रहा।

इस दौरान सेंसेक्स की मुनाफा कमाने वाली कंपनियों में एनटीपीसी 3.26, टाटा स्टील 3.25, पावरग्रिड 2.24, आईसीआईसीआई बैंक 1.80, रिलायंस 1.64, एसबीआई 1.16, आईटीसी 0.69, एशियन पेंट 0.65, बजाज फिनसर्व 0.26, एक्सिस बैंक 0.16, इंडसइंड बैंक 0.08, एचडीएफसी 0.04 और डॉ. रेड्डी 0.02 प्रतिशत शामिल है।

वहीं नुकसान उठाने वाली प्रमुख कंपनियों में इंफोसिस 1.56, मारुति 1.35, एलटी 1.25, टेक महिंद्रा 1.02, सन फार्मा 0.72, हिंदुस्तान यूनीलीवर 0.66, टीसीएस 0.66, एचसीएल टेक 0.62, विप्रो 0.51, महिंद्रा एंड महिंद्रा 0.46, एचडीएफसी बैंक 0.13 और भारती एयरटेल 0.08 प्रतिशत शामिल रही।

# खुदरा मुद्रास्फीति और गिरकर 6.71 प्रतिशत पर आयी

नयी दिल्ली। खाद्य और अन्य वस्तुओं से प्रेरित भारत की खुदरा मुद्रास्फीति जुलाई, 2022 में इससे पिछले माह के 7.01 प्रतिशत से घट कर 6.71 पर आ गयी। मुद्रास्फीति 2-6 प्रतिशत की भारतीय रिजर्व बैंक की लक्षित सीमा से अब भी ऊपर बनी हुई है। यह इसका पांच माह का न्यूनतम स्तर है।

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार आम लोगों को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाली खाद्य मुद्रास्फीति जून के 7.75 प्रतिशत की तुलना में घट कर जुलाई में 6.75 प्रतिशत रही।

मुद्रास्फीति में नरमी से सरकार और नीति-निर्माताओं पर दबाव कम होगा। पिछले कई महीनों से देश उच्च मुद्रास्फीति के दबाव से जूझ रहा और इस पर अंकुश लागने के लिए सरकार ने खाद्य तेल, इस्पात और प्लास्टिक की कीमतों पर अंकुश लगाने के लिए कई महत्वपूर्ण राजकोषीय कदम उठाए हैं। इसी तरह, भारतीय रिजर्व बैंक ने भी कर्ज महंगा करने की नीति अपना ली है और इस साल मई से अब तक नीतिगत दर रेपो में कुल मिला कर प्रति सैकड़ा 1.40 अंक की बढ़ोतरी कर चुका है।

इस समय, वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट का रुख देखते हुए आने वाले दिनों में मुद्रास्फीति में और नरमी आने की उम्मीद है। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लि के मुख्य अर्थशास्त्री निखिल गुप्ता ने कहा, जुलाई की खुदरा मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति के आंकड़े बाजार के पूर्वानुमान के अनुरूप ही है। मुद्रास्फीति की मुख्य दर 6.7 प्रतिशत पर पांच माह के न्यूनतम सतर है। इसी तरह मूल मुद्रास्फीति (विनिर्मित उत्पादों संबधी) भी वार्षिक आधार पर छह प्रतिशत पर आ गयी है जो 10 माह का न्यूनतम स्तर है।

मिलवुड केन इंटरनेशनल के संस्थापक एवं मुख्य अधिशासी नीश भट्ट ने कहा कि खुदरा मुद्रास्फीति में नरमी मुख्यतः खाद्य तेलों पर आयात शुल्क कम करने तथा वैश्विक बाजार में कच्चे तेल और कुछ अन्य जिंसों की कीमतों में कमी के कारण आयी है। यह कम जरूर हो रही है पर लगातार सात माह से यह रिजर्व बैंक की छह प्रतिशत की ऊपरी स्वीकार्य सीमा से ऊपर चल रही है।

उन्होंने कहा कि जुलाई में खुदरा मुद्रास्फीति में गिरावट और जून में औद्योगिक उत्पादन में 12.3 प्रतिशत की वृद्धि का आंकड़ा उत्साह जानक है पर भारतीय रिजर्व बैंक मौद्रिक नीति के अगले कदम के संबंध में और एक माह के आंकड़े का इंतजार करेगा।

केंद्रीय बैंक ने हाल में आपनी मौद्रिक समीक्षा में चालू वित्त वर्ष के दौरान मुद्रास्फीति 6.4 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है और रिजर्व बैंक नीतिगत दर में एकाध और बढ़ोतरी कर सकता है।

## मेट्रो ब्रांड्स के शेयर 52 हफ्ते के नए हाई पर

नई दिल्ली। मल्टी-ब्रांड फुटवियर रिटेल चेन मेट्रो ब्रांड्स के शेयरों में शुक्रवार को अच्छी तेजी देखने को मिली है। मेट्रो ब्रांड्स के शेयरों ने शुक्रवार को 52 हफ्ते का नया हाई बनाया और कंपनी के शेयर 869 रुपये पर पहुंचे। दिन के कारोबार के दौरान मेट्रो ब्रांड्स के शेयरों में 7 पर्सेंट का उछाल आया। आखिर में कंपनी के शेयर 5.13त्न की तेजी के साथ 854.30 रुपये पर बंद हुए। पिछले 5 दिन में मेट्रो ब्रांड्स के शेयरों में 17 पर्सेंट से ज्यादा की तेजी आई है। मेट्रो ब्रांड्स के शेयरों में आई तेजी का बड़ा फायदा दलाल स्ट्रीट के बिग बुल राकेश झुनझुनवाला को हुआ है। एक दिन में ही राकेश झुनझुनवाला की दौलत करीब 221 करोड़ रुपये बढ़ गई है। मेट्रो ब्रांड्स के शेयरों ने पिछले साल 21 दिसंबर को स्टॉक एक्सचेंज में एंट्री की थी। आईपीओ का प्राइस बैंड 485 से 500 रुपये था। कंपनी का आईपीओ 3.64 गुना सब्सक्राइब हुआ था। एक्सचेंज में लिस्टिंग के बाद से बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज पर मेट्रो ब्रांड्स के शेयर 76 पर्सेंट से ज्यादा चढ़ चुके हैं। इस साल अब तक मेट्रो ब्रांड्स के शेयरों में करीब 92 पर्सेंट की तेजी आई है। वहीं, पिछले 6 महीने में कंपनी के शेयरों में 55 पर्सेंट से अधिक का उछाल आया है। 30 जून 2022 तक के लेटेस्ट शेयरहोल्डिंग पैटर्न के मुताबिक, राकेश झुनझुनवाला की उनकी पत्नी रेखा झुनझुनवाला के जरिए मेट्रो ब्रांड्स में 39,153,600 शेयर या 14.43 पर्सेंट हिस्सेदारी है। राकेश झुनझुनवाला अपनी पत्नी के पोर्टफोलियो को मैनेज करते हैं।

# जुलाई में वाणिज्यिक निर्यात 2.14 प्रतिशत बढ़ा

## व्यापार घाटा बढ़कर 30 अरब डॉलर

एजेंसी

नयी दिल्ली। इलेक्ट्रॉनिक्स सामान, पेट्रोलियम उत्पादों और रसायनों जैसे प्रमुख वस्तु समूहों के अच्छे प्रदर्शन की बदौलत भारत का वाणिज्यिक निर्यात जुलाई 2022 में सालाना आधार पर 2.14 प्रतिशत बढ़कर 36.27 अरब डॉलर हो गया। जुलाई 2021 में निर्यात 35.51 अरब डॉलर था।

वाणिज्य मंत्रालय द्वारा शुक्रवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, जुलाई 2022 में वाणिज्यिक आयात 43.61 प्रतिशत बढ़कर 66.27 अरब डॉलर हो गया, जबकि जुलाई 2021 में आयात 46.15 अरब डॉलर का था।

जुलाई 2022 में व्यापार घाटा (आयात का आधिक्य) 30 अरब डॉलर रहा, जो जुलाई 2021 में 10.63 अरब डॉलर था। इस तरह व्यापार घाटे में 182.10 अरब का उछाल आया है।

आंकड़ों के अनुसार जुलाई 2022 में गैर-पेट्रोलियम और गैर-रत्न और आभूषण निर्यात 26.62 अरब डॉलर था, जो जुलाई 2021 में 26.21 अरब डॉलर के गैर-पेट्रोलियम और गैर-रत्न और आभूषण निर्यात से 1.55 प्रतिशत अधिक है।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की एक विज्ञप्ति के अनुसार, गैर-पेट्रोलियम, गैर-रत्न और आभूषण (सोना, चांदी और कीमती धातु) का आयात जुलाई 2022 में 38.45 अरब अमेरिकी डॉलर रहा। यह एक साल पहले इस खंड के 26.90 अरब डॉलर के आयात में 42.91 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।

जुलाई 2022 में भारत का कुल निर्यात (वस्तुओं और सेवाओं को मिलाकर) 61.18 अरब डॉलर होने का अनुमान है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 11.51 प्रतिशत अधिक है।

जुलाई में कुल आयात 82.22 अरब डालर होने का अनुमान है, जो एक साल पहले के वस्तु एवं सेवा आयात से 42.90 प्रतिशत अधिक है।

आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल-जुलाई 2022 में भारत का कुल निर्यात (वस्तुओं और सेवाओं को मिलाकर) 253.84 अरब डॉलर होने का अनुमान है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 22.85 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।

अप्रैल-जुलाई 2022 में कुल आयात 317.40 अरब डॉलर होने का अनुमान है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 47.68 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि दर्शाता है।

# जॉनसन टेल्कम बेबी पाउडर की बिक्री पर विराम

न्यू ब्रंसविक (अमेरिका)। जानी-मानी दवा निर्माता कंपनी जॉनसन एंड जॉनसन (जेएंडजे) वर्ष 2023 से दुनिया भर में अपने प्रतिष्ठित टैल्कम-आधारित जॉनसन बेबी पाउडर की बिक्री नहीं करेगी।

अमेरिका और कनाडा में इस पाउडर की ब्रिकी पहले से ही बंद है।आरोप लगाया गया था कि इस बेबी पाउडटर से कैंसर होता है और इसके बाद कंपनी के खिलाफ दुनियाभर में हजारों मुकदमें दायर हो गए थे। कैंसर की आशंका वाली रिपोर्ट सामने आने के बाद प्रॉडक्ट की बिक्री में भी भारी गिरावट दर्ज की गई थी।

सूत्रों ने कहा, जेएंडजे अगले साल से दुनिया भर में अपने टैल्क-आधारित बेबी पाउडर का निर्माण और बिक्री बंद

कर देगा। अमेरिका में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र की दिग्गज कंपनी द्वारा उत्पाद की बिक्री समाप्त होने के दो साल से अधिक समय बाद यह घोषणा की गई है। बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक, इस कंपनी को महिलाओं के हजारों मुकदमों का सामना करना पड़ रहा है। महिलाओं ने आरोप लगाया कि टैल्कम पाउडर में एस्बेस्टस है और इससे वे ओवेरियन कैंसर की चपेट में आयीं। कंपनी ने हालांकि दोहराया कि दशकों के स्वतंत्र शोध से पता चलता है कि उत्पाद उपयोग करने के लिए सुरक्षित है। कंपनी ने एक बयान में कहा, दुनिया भर में पोर्टफोलियो मूल्यांकन के रूप में, हमने सभी कॉर्नस्टार्च-आधारित बेबी पाउडर की ब्रिकी को बंद करने का निर्णय लिया है। उसने हालांकि कहा कि कॉर्नस्टार्च आधारित बेबी पाउडर पहले से ही दुनिया भर के देशों में बेचा जाता है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि कंपनी को उपभोक्ताओं और उनकी पीढ़ियों की ओर से दायर मुकदमों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने आरोप लगाया था कि जेएंडजे के टैल्क उत्पादों एस्बेस्टस है जो कैंसर का कारण बना।

सूत्रों ने कहा, कंपनी के खिलाफ 19,400 मुकदमें दर्ज हैं। आरोप लगाया गया है कि इसके टैल्कम पाउडर के कारण लोगों को डिम्बग्रंथि का कैंसर हुआ है। इससे मेसोथेलियोमा कैंसर होता है जो फेफड़ों और अन्य अंगों पर हमला करता है।अब तक जिन मामलों में कोर्ट का फैसला आ चुका है, उनमें 12 में कंपनी को जीत मिली, जबकि 15 में फैसला उसके खिलाफ आया।

मिशिगन विश्वविद्यालय के बिजनेस स्कूल के प्रोफेसर एरिक गॉर्डन ने वर्ष 2020 में एसोसिएटेड प्रेस से कहा था, चाहे पाउडर वास्तव में कैंसर का कारण बनता है या नहीं, लोग उत्पाद का उपयोग करने से हिचकिचाते हैं।

टैल्क का खनन किया जाता है और यह एस्बेस्टस के करीब पाया जाता है। यह कैंसर का कारण बनने वाला एक पदार्थ है।

# पाम ऑयल सस्ता, दालों में मिलाजुला रुख

नयी दिल्ली। वैश्विक बाजार के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर मांग सुस्त रहने से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में पाम ऑयल की तेजी को छोड़कर अन्य खाद्य तेलों में टिकाव रहा।

तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का अगस्त वायदा 130 रिंगिट उबलकर 4430 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। वहीं, इस दौरान अमेरिकी सोया तेल का अगस्त वायदा 0.25 सेंट की गिरावट लेकर 66.24 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

इस दौरान पाम ऑयल 146 रुपये प्रति क्विंटल उतर गया। वहीं, सरसों तेल, मूंगफली तेल, सूरजमुखी तेल, सोया रिफाइंड और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ और वे पुराने स्तर पर टिके रहे।

गुड़-चीनी : मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान गुड़ और चीनी के भाव स्थिर रहे।

दाल-दलहन : दाल-दलहन के बाजार में मिलाजुला रुख रहा।

इस दौरान उड़द दाल 50 रुपये प्रति क्विंटल सस्ती हो गई जबकि अरहर दाल में 50 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी रही। वहीं, चना, चना दाल, मसूर दाल और मूंग दाल के भाव पड़े रहे।

अनाज : अनाज मंडी में भी स्थिरता रही। इस दौरान गेहूं और चावल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ और वे पिछले स्तर पर टिके रहे।

दाल-दलहन : चना 4600-4700, दाल चना 5600-5700, मसूर काली 8300-8400, मूंग दाल 8200-8300, उड़द दाल 9900-10000, अरहर दाल 8850-8950 रुपये प्रति क्विंटल रहे।

अनाज : (भाव प्रति क्विंटल) गेहूं दड़ा 2300-2400 रुपये और चावल : 2550-2650 रुपये प्रति क्विंटल रहा।

चीनी-गुड़ : चीनी एस 3530-3660, चीनी एम. 3800-3900, मिल डिलीवरी 3410-3510 और गुड़ 3850-3950 रुपये प्रति क्विंटल बोले गये।

## शार्ट न्यूज

### बधिर क्रिकेट सोसायटी ने राष्ट्रीय चैम्पियनशिप के लिए दिल्ली टीम की घोषणा की

नयी दिल्ली। भारत में बधिरों के लिए क्रिकेट को नियंत्रित करने, बढ़ावा देने और क्रिकेट संबंधी आयोजन करने वाली शीर्ष संस्था बधिर क्रिकेट सोसाइटी (डीसीएस) ने आगामी छठी बधिर टी-20 राष्ट्रीय क्रिकेट चैंपियनशिप के लिए चयनित दिल्ली राज्य टीम की घोषणा शुक्रवार को की। डीसीएस ने बताया कि यह आयोजन 14 से 20 नवंबर तक आगरा और कानपुर में आयोजित किया जाएगा। सप्ताह भर चलने वाली इस चैंपियनशिप में देश भर की टीमें प्रतिष्ठित टी20 चैंपियनशिप खिताब के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी। डीसीएस द्वारा दिल्ली राज्य टीम के चयन के लिए, अंतिम टीम चयन शिविर सात अगस्त 2022 को दिल्ली के द्वारका में स्थित वेंकटेश्वर इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित किया गया, जिसमें राज्य के कई प्रतिभाशाली क्रिकेटरों ने भाग लिया। जूरी ने सभी खिलाड़ियों के प्रदर्शन और उत्कृष्टता के आधार पर उन्नीस खिलाड़ियों को चुना जो अब चैंपियनशिप के लिए दिल्ली राज्य टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे। डीसीएस के अध्यक्ष मनीष गोयल ने इस घोषणा पर कहा, राज्य भर के खिलाड़ियों का उत्साह जबरदस्त है।

### तेलुगु योद्धा ने अपनी आधिकारिक जर्सी का अनावरण किया

नयी दिल्ली। भारत के लोकप्रिय खेल खो-खो की पहली लीग अल्टिमेट खो-खो में जीएमआर स्पोर्ट्स की फ्रेंचाइज़ी तेलुगु योद्धा ने लीग के पहले संस्करण के लिए अपनी जर्सी का अनावरण शुक्रवार को किया। तेलुगु योद्धा ने जर्सी में कुछ दिन पहले लॉन्च किये गये लोगो के रंगों को ही शामिल किया है। जर्सी में लाल रंग के डैश के साथ नीले और सुनहरे रंग का एक मिश्रण है। जीएमआर स्पोर्ट्स लीग के बिजनेस डेवलपमेंट और मार्केटिंग हेड सुजॉय गांगुली ने कहा, लोगो लॉन्च करने के बाद, जर्सी लांच अगली बड़ी चीज थी जिसका हम इंतजार कर रहे थे। मुझे अपनी टीम की नई जर्सी लॉन्च करने की खुशी है। यह और भी रोमांचक है कि हम अपनी तेलुगु योद्धा जर्सी पर अपने लोगो के सन्देश और रंगों को बड़ी खूबसूरती के साथ उतार पाए हैं। अल्टीमेट खो खो लीग के पहले सीज़न के खिताब के लिए छह अलग-अलग फ्रेंचाइज़ी प्रतिस्पर्धा करेंगी जो 14 अगस्त से 04 सितंबर तक पुणे के श्री शिव छत्रपति स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आयोजित किया जाएगा। तेलुगु योद्धा अपने अभियान की शुरुआत अपने पड़ोसी राज्य चेन्नई क्विक गन्स के खिलाफ उद्घाटन के दिन करेंगे।

### अगले हफ्ते भारत दौरा करेगा एफआईएच प्रतिनिधिमंडल

लौसेन (स्विट्ज़रलैंड)। अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) का एक प्रतिनिधिमंडल हॉकी इंडिया के नये संविधान में हुई प्रगति की जांच करने के लिये अगले हफ्ते भारत का दौरा करेगा। एफआईएच ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। महासंघ ने यहां जारी एक विज्ञप्ति में कहा कि इस प्रतिनिधिमंडल में एफआईएच के कार्यवाहक अध्यक्ष सैफ अहमद, मुख्य कार्यकारी अधिकारी थियेरी वील और कार्यकारी बोर्ड के सदस्य तैय्यब इकराम शामिल होंगे। एफआईएच ने प्रतिनिधिमंडल की जिम्मेदारियों के बारे में कहा, एफआईएच प्रतिनिधिमंडल भारतीय हॉकी प्रशासनिक समिति के नये संविधान के आलेखन में हुई प्रगति की जांच करेगा। एफआईएच ने यह भी कहा कि प्रतिनिधिमंडल भुवनेश्वर में होने वाले आगामी एफआईएच हॉकी पुरुष विश्व कप को खतरे में पड़ने से बचाने के लिये जल्द से जल्द हॉकी इंडिया के चुनाव कराने का आह्वान करेगा। हॉकी इंडिया की प्रशासक समिति 17 और 18 अगस्त को एफआईएच प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात करेगी। इसके अलावा, प्रशासक समिति ने 16 अगस्त को ओडिशा राज्य सरकार के आयुक्त-सह-सचिव और संभवत: भारत के खेल मंत्री अनुराग ठाकुर के साथ एक बैठक आयोजित करने की योजना बनाई है।

### एमआई एमिरेट्स में शामिल हुए पोलार्ड, ब्रावो, बोल्ट

मुंबई/दुबई। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की बहुप्रतीक्षित इंटरनेशनल लीग टी20 में रिलायंस इंडस्ट्रीज़ की टीम एमआई एमिरेट्स ने उद्घाटन सत्र के लिये कीरोन पोलार्ड, ड्वेन ब्रावो और ट्रेंट बोल्ट को शामिल किया है। एमआई एमिरेट्स ने शुक्रवार को इंटरनेशनल लीग टी20 के लिये अपनी टीम की घोषणा करते हुए कहा कि वर्तमान और पूर्व मुंबई इंडियन्स (एमआई) खिलाड़ियों के साथ-साथ कुछ नये नामों को भी टीम में शामिल किया गया है। एमआई एमिरेट्स में पोलार्ड, ब्रावो और बोल्ट के अलावा निकोलस पूरन और इमरान ताहिर भी नीली और सुनहरी जर्सी में नजर आएंगे। हाल ही में द हंड्रेड का पहला शतक जड़ने वाले इंग्लिश बल्लेबाज़ विल स्मीड को भी एमआई परिवार का हिस्सा बनाया गया है। इसके अलावा, आंद्रे फ्लेचर (वेस्ट इंडीज), समित पटेल (इंग्लैंड) और जॉर्डन थॉम्पसन (इंग्लैंड) टीम से जुड़ने वाले नये नाम हैं। रिलायंस जियो के चेयरमैन आकाश अंबानी ने कहा, मुझे खुशी है कि हमारे प्रमुख खिलाड़ियों में से एक, किरोन पोलार्ड एमआई एमिरेट्स के साथ जुड़ रहे हैं। उनके साथ मुंबई इंडियन्स के पूर्व खिलाड़ी ड्वेन ब्रावो, ट्रेंट बोल्ट और निकोलस पूरन भी हमसे दोबारा जुड़ रहे हैं। एमआई एमिरेट्स के सभी खिलाड़ियों का स्वागत है।

### ग्रां प्रि बैडमिंटन लीग के पहले मैच में आमने-सामने होंगे बांदीपुर, मांड्या

बेंगलूरु। कर्नाटक का बहुप्रतीक्षित बैडमिंटन आयोजन ग्रां प्रि बैडमिंटन लीग (जीबीपीएल) शुक्रवार को शुरू होगा जहां बांदीपुर टस्कर्स पहले मैच में मांड्या बुल्स का सामना करेंगी। इसके अलावा दिन का दूसरा मैच कोडागु टाइगर्स और मैंगलोर शार्क्स के बीच खेला जाएगा। दस दिवसीय आयोजन में आठ टीमें शामिल हैं जिन्हें चार-चार के दो समूहों में बांटा गया है। दोनों समूहों की शीर्ष दो टीमें पॉइंट के आधार पर राउंड रॉबिन नॉकआउट स्टेज में जाएंगी। यहां से जीतकर आगे जाने वाली टीमें फाइनल में 24 लाख के पुरस्कार की दावेदारी पेश करेंगी।

### चोट के कारण ज़िम्बाब्वे दौरे से बाहर रह सकते हैं सुंदर

मुंबई। भारत के ज़िम्बाब्वे दौरे के लिये टीम में लंबे समय बाद शामिल किये गये ऑल-राउंडर वाशिंगटन सुंदर एक बार फिर चोटिल होने के कारण टीम से बाहर हो सकते हैं। गौरतलब है कि वाशिंगटन इस समय इंग्लैंड के रॉयल लंदन कप में लंकाशर काउंटी की ओर से खेल रहे हैं और बुधवार (10 अगस्त) को लंकाशर और वॉरसेस्टरशर के बीच खेले गये मैच में वह चोटिल हो गये थे। लंकाशर क्रिकेट क्लब ने इसकी जानकारी देते हुए ट्वीट किया था, वाशिंगटन सुंदर एक जोर से गिरने के बाद अपने बाएं कंधे का उपचार करवा कर मैदान से बाहर चले गये हैं। सुंदर के ज़िम्बाब्वे दौरे से बाहर होने की फिलहाल कोई आधिकारिक सूचना नहीं है, लेकिन क्रिकबज़ ने एक बीसीसीआई सूत्र के हवाले से शुक्रवार को कहा कि टीम में उनकी वापसी पर संदेह है। इस बीच, बीसीसीआई लक्ष्मण को नियमित कोच राहुल द्रविड़ की अनुपस्थिति में टीम प्रबंधन की जिम्मेदारी दी गयी है, जो इंग्लैंड, वेस्टइंडीज और अमेरिका के दो महीने के दौरे से अभी-अभी लौटे हैं।

### काबुल में विस्फोट से दो लोगों की मौत, तीन घायल

काबुल। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में एक मदरसे में जबरदस्त बम धमाके में एक जाने माने धर्मगुरू और उनके भाई की मौत हो गयी है जबकि तीन अन्य जख्मी हो गये हैं। काबुल पुलिस के प्रवक्ता खालिद ज़ादरान ने आज सोशल मीडिया पर बताया कि राजधानी काबुल में शश्दरक इलाके में स्थित एक मदरसे में गुरूवार को हुए जबरदस्त बम धमाके में धर्मगुरु शेख रहीमुल्लाह और उनके भाई की मौत हो गयी जबकि तीन अन्य लोग जख्मी हो गये। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। अभी तक किसी संगठन ने इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है।

## बर्मिंघम से बहुत कुछ सीखा : अभिषेक

नयी दिल्ली। राष्ट्रमंडल खेल 2022 में रजत पदक जीतने वाली भारतीय पुरुष हॉकी टीम के युवा फॉरवर्ड खिलाड़ी अभिषेक सिंह ने शुक्रवार को कहा कि उन्होंने इस अनुभव से बहुत कुछ सीखा और इसने उन्हें बेहतर प्रदर्शन के लिये प्रेरित किया है।

भारत के 76वें स्वतंत्रता दिवस पर 23 साल के होने वाले अभिषेक ने इसी साल फरवरी में दक्षिण अफ्रीका दौरे पर राष्ट्रीय टीम के लिये पदार्पण किया था। उन्होंने एफआईएच प्रो लीग 2021/22 में 14 मैच खेले और शानदार प्रदर्शन की बदौलत राष्ट्रमंडल खेलों के लिये टीम में जगह बनायी।

अभिषेक ने बर्मिंघम के अनुभव के बारे में कहा, इतने बड़े मंच पर प्रदर्शन करना मेरे लिये एक यादगार अनुभव था। मैंने टूर्नामेंट के दौरान अपने खेल के बारे में बहुत कुछ सीखा और इन क्षेत्रों के बारे में जाना जहां मैं सुधार कर सकता हूं।

उन्होंने कहा, हमारे मुख्य कोच ग्राहम रीड ने अभ्यास सत्रों में पहले ही बता दिया था कि मुझे ज्यादा दबाव नहीं लेना और मैच का आनंद लेना है। इस सलाह ने राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान मेरी बहुत सहायता की क्योंकि मैं अपने स्वाभाविक खेल पर ध्यान देते हुए स्वतंत्रता के साथ खेल रहा था। अभिषेक ने टूर्नामेंट के दौरान भारत के लिये दो गोल भी किये।

उन्होंने अपने प्रदर्शन के बारे में कहा, मेरे साथियों और कोचों ने मुझसे कहा कि अपने पहले बड़े टूर्नामेंट के हिसाब से मैंने अच्छा प्रदर्शन किया। अभी भी कुछ क्षेत्र हैं जहां मुझे सुधार करना है, और राष्ट्रमंडल खेल 2022 के अनुभव ने मुझे उन कमियों को पूरा करने के लिए, और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित किया है।

भारत ने पूरे टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन करते हुए अपने पहले पूल की मैच में घाना पर 11-0 से जीत दर्ज की। इंग्लैंड के खिलाफ 4-4 से ड्रा, कनाडा पर 8-0 से जीत और वेल्स पर 4-1 से जीत के साथ, भारत ने सेमीफाइनल में जगह बनाई, जहां उन्होंने दक्षिण अफ्रीका को 3-2 से जीत के साथ हरा दिया। फाइनल में भारत का सामना ऑस्ट्रेलिया से हुआ जहां उन्हें 0-7 से हार का सामना करना पड़ा।

अभिषेक ने राष्ट्रमंडल खेल 2022 में भारतीय टीम के प्रदर्शन पर कहा, कठिन विरोधियों का सामना करने के बावजूद हमने पूरी प्रतियोगिता में एक टीम के रूप में प्रदर्शन किया। हर मैच में हमारे लिए एक नई चुनौती थी, और हम इसका सामना करने में सक्षम थे। यहां तक कि हालांकि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ फाइनल हमारे अनुकूल नहीं रहा, हमने मैच से बहुत कुछ सीखा है।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम 29 अगस्त को बेंगलुरु में राष्ट्रीय कोचिंग शिविर में लौटेगी और आगामी एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2022/23 सीज़न की तैयारी शुरू करेगी।

अक्टूबर में शुरू होने वाले सत्र में भारत को घर में न्यूजीलैंड और स्पेन का सामना करना है।

## बधिर क्रिकेट सोसायटी ने राष्ट्रीय चैम्पियनशिप के लिए दिल्ली टीम की घोषणा की

नयी दिल्ली। भारत में बधिरों के लिए क्रिकेट को नियंत्रित करने, बढ़ावा देने और क्रिकेट संबंधी आयोजन करने वाली शीर्ष संस्था बधिर क्रिकेट सोसाइटी (डीसीएस) ने आगामी छठी बधिर टी-20 राष्ट्रीय क्रिकेट चैंपियनशिप के लिए चयनित दिल्ली राज्य टीम की घोषणा शुक्रवार को की।

डीसीएस ने बताया कि यह आयोजन 14 से 20 नवंबर तक आगरा और कानपुर में आयोजित किया जाएगा। सप्ताह भर चलने वाली इस चैंपियनशिप में देश भर की टीमें प्रतिष्ठित टी20 चैंपियनशिप खिताब के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी।

डीसीएस द्वारा दिल्ली राज्य टीम के चयन के लिए, अंतिम टीम चयन शिविर सात अगस्त 2022 को दिल्ली के द्वारका में स्थित वेंकटेश्वर इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित किया गया, जिसमें राज्य के कई प्रतिभाशाली क्रिकेटरों ने भाग लिया।

जूरी ने सभी खिलाड़ियों के प्रदर्शन और उत्कृष्टता के आधार पर उन्नीस खिलाड़ियों को चुना जो अब चैंपियनशिप के लिए दिल्ली राज्य टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे।

डीसीएस के अध्यक्ष मनीष गोयल ने इस घोषणा पर कहा, राज्य भर के खिलाड़ियों का उत्साह जबरदस्त है। भारत में क्रिकेट सबसे अधिक पसंद किया जाने वाला खेल है। भारतीय विकलांगता क्रिकेट में प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के साथ बेंचमार्क स्थापित करने की क्षमता है और हमारा प्रयास उन्हें विश्व स्तरीय मंच और उनके विकास के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना है। हम इस तरह की पहल के साथ बधिर क्रिकेटरों को क्रिकेट बिरादरी की मुख्यधारा में लाने के लिए दृढ़ हैं।

## केएल राहुल पूर्णतः स्वस्थ, ज़िम्बाब्वे दौरे पर करेंगे टीम की कप्तानी

मुंबई। भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम के सलामी बल्लेबाज़ केएल राहुल ज़िम्बाब्वे दौरे पर टीम की कप्तानी करेंगे। बीसीसीआई ने गुरुवार को यह घोषणा की।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने ज़िम्बाब्वे दौरे के लिये टीम की घोषणा करते हुए कहा, बीसीसीआई चिकित्सीय टीम ने केएल राहुल की स्थिति का जायज़ा लिया है और उन्हें ज़िम्बाब्वे के खिलाफ होने वाली तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला के लिये स्वस्थ बताया है। बोर्ड ने कहा, चयनकर्ता समिति ने उन्हें टीम का कप्तान चुना है और शिखर धवन को उपकप्तान की ज़िम्मेदारी दी है। इसके अलावा वाशिंगटन सुंदर और दीपक चहर को भी पूर्णतः स्वस्थ होने के बाद टीम में शामिल किया गया है।

इस दौरे पर टीम के वरिष्ठ खिलाड़ियों को आराम दिया गया है जो 28 अगस्त से संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में होने वाले एशिया कप के लिये तैयारी करेंगे। तीन एकदिवसीय मैचों के लिए भारतीय टीम-केएल राहुल (कप्तान) शिखर धवन (उप-कप्तान), रुतुराज गायकवाड़, शुभमन गिल, दीपक हुड्डा, राहुल त्रिपाठी, ईशान किशन (विकेटकीपर), संजू सैमसन (विकेटकीपर), वाशिंगटन सुंदर, शार्दुल ठाकुर, कुलदीप यादव, अक्षर पटेल, अवेश खान, प्रसिद्ध कृष्णा, मोहम्मद सिराज, दीपक चाहर।

## एशिया कप जीतने का दावेदार है भारत : पॉन्टिंग

दुबई। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पॉन्टिंग ने भारत को एशिया के प्रमुख क्रिकेट आयोजन एशिया कप को जीतने का दावेदार बताया है।

पॉन्टिंग ने शुक्रवार को आईसीसी रिव्यू के नये एपिसोड में कहा, सिर्फ एशिया कप ही नहीं, बल्कि किसी भी टूर्नामेंट में भारत को हराना मुश्किल होता है। उनकी गहराई निश्चित रूप से अन्य टीमों की तुलना में बेहतर है और मुझे लगता है कि भारत एशिया कप जीतेगा।

पॉन्टिंग ने यह भी कहा कि एशिया कप में भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले बहुप्रतीक्षित मैच में भारत का पलड़ा भारी है।

पॉन्टिंग ने 28 अगस्त को होने वाले मैच के बारे में कहा, मैं पाकिस्तान के खिलाफ उस मुकाबले को जीतने के लिए भारत के साथ रहूंगा। मैं पाकिस्तान की उपेक्षा नहीं कर रहा क्योंकि वे एक अविश्वसनीय क्रिकेट राष्ट्र हैं जो लगातार बेहतरीन खिलाड़ियों को मंच देते हैं।

गौरतलब है कि भारत और पाकिस्तान एशिया कप में 14 बार आमने-सामने आये हैं जिसमें भारत ने आठ बार जीत दर्ज की है जबकि पांच बार नतीजा पाकिस्तान के पक्ष में रहा है। एक मैच बारिश में धुलने के कारण रद्द हुआ है।

पॉन्टिंग ने भारत-पाकिस्तान मुकाबले की लोकप्रियता के बारे में कहा, एक क्रिकेट प्रेमी होने के नाते, जब भी इस तरह के मुकाबले होते हैं तो बैठकर देखना हमेशा अच्छा होता है क्योंकि हर चीज़ का स्तर बढ़ जाता है।

भारत ने खिलाड़ियों के अत्यधिक रोटेशन के बावजूद इस सत्र में अपने 21 टी20 मैचों में से 17 में जीत दर्ज की है।

पॉन्टिंग ने यह भी कहा कि यदि मोहम्मद शमी को टी20 विश्व कप के लिये टीम में शामिल किया जाता है तो वह शीर्ष गुरिल्ला में भारत के लिये महत्वपूर्ण खिलाड़ी साबित हो सकते हैं।

मोहम्मद शमी पिछले साल संयुक्त अरब अमीरात में हुए टी20 विश्व कप 2020 के बाद टी20 टीम से बाहर हैं।

पॉन्टिंग ने कहा, वह बहुत लंबे समय से भारत के लिये एक अच्छे गेंदबाज़ रहे हैं। मेरा मानना है कि टी20 क्रिकेट में भारत के पास शमी से बेहतर गेंदबाज हैं, और उन्होंने एशिया कप के लिये भी तीन तेज गेंदबाजों का ही चयन किया है। अगर विश्व कप के लिये चार तेज गेंदबाज चुने जाते हैं तो चौथा नाम उनका हो सकता है।

## अमेरिकी साजिश का आरोप लगाने वाले इमरान खान खुद कर रहे थे लॉबिंग, फर्म भी की थी हायर

नई दिल्ली। अमेरिका और चीन का पाकिस्तान में सत्ता से गहरा संबंध है। बिना इन दोनों देशों का नाम लिए पाक में सत्ता पाना लगभग नामुमकिन है। तीन महीने पहले इमरान खान के उस बयान ने विदेशी साजिश वाले बयान ने इन बातों को और मजबूत किया था। इमरान खान ने उस वक्त कहा था कि उन्हें पीएम पद से हटाने के पीछे अमेरिका की साजिश रही। अब इमरान खान के दावों की पोल खुली है। अमेरिका से अच्छे संबंधों के लिए इमरान खान ने अपनी सरकार के दौरान लॉबिंग फर्म हायर की थी। उनकी पार्टी ने अभी भी एक फर्म हायर की है। जिसके लिए उस फर्म को मोटी रकम भी अदा की जा रही है।

इस साल 10 अप्रैल को पाकिस्तानी संसद में हुए नाटकीय

अविश्वास मत के बाद इमरान खान को प्रधान मंत्री का पद खोना पड़ा। उन्होंने इसके पीछे विदेशी साजिश को दोषी ठहराया।

इमरान ने सीधे तौर पर अमेरिका का नाम लिया और दावा किया कि अमेरिका के इशारे पर वो पीएम से हटाए गए। अब इमरान खान की पार्टी पीटीआई को लेकर बड़ा खुलासा हुआ है। पाकिस्तान पहल के निदेशक ने दावा किया है कि पीटीआई ने बाइडेन प्रशासन से अच्छे संबंधों के लिए बाकायदा एक लॉबिंग फर्म को हायर किया है, जिसके लिए वह 25 हजार डॉलर प्रतिमाह का भुगतान भी कर रही है।

### अमेरिका का यार गद्दार

उस वक्त इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के कार्यकर्ताओं ने अमरीका का जो यार है, गद्दार है का नारा गढ़ा, जो शहबाज शरीफ सरकार पर हमला था।

इन बयानों के तीन महीनों के भीतर पीटीआई की पोल खुली है। पार्टी ने बाइडन प्रशासन से अच्छे संबंध के लिए एक लॉबिंग फर्म को हायर किया है। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे दस्तावेजों के अनुसार, लॉबिंग फर्म फेंटन/अरलॉक एलएलसी को संयुक्त राज्य अमेरिका और अमेरिका में पाकिस्तानी प्रवासियों के साथ अच्छे संबंधों के लिए पार्टी के %लक्ष्यों% का समर्थन करने के लिए प्रति माह 25,000 डॉलर का भुगतान किया जा रहा है।

### इमरान खान सरकार के वक्त भी थी लॉबिंग फर्म

पाकिस्तान पहल के निदेशक उज़ैर यूनुस ने इन दस्तावेजों को सार्वजनिक किया है। उन्होंने यह भी दावा किया है कि इस साल मार्च महीने में अमेरिका में पाकिस्तानी दूतावास द्वारा फेंटन/अरलॉक को भी 30,000 डॉलर प्रति माह पर काम पर रखा गया था, यह तब था जब इमरान खान की सरकार सत्ता में थी।

## कोलंबिया ने ईएलएन के साथ शांति वार्ता फिर से शुरू करने की मांग की

हवाना। कोलंबिया के विदेश मंत्री अल्वारो लेवा ने यहां कहा कि कोलंबिया सरकार क्यूबा की राजधानी में नेशनल लिबरेशन आर्मी (ईएलएन) गुरिल्ला के साथ शांति वार्ता फिर से शुरू करना चाहता है। ईएलएन नेताओं से संपर्क करने के लिए एक आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल के साथ कैरेबियाई देश का दौरा करने वाले लेवा ने कहा, हम शांति की इस भूमि में ईएलएन के साथ बातचीत फिर से शुरू करने की उम्मीद करते हैं ताकि राष्ट्रपति (गुस्तावो) पेट्रो उरेगो द्वारा प्रस्तावित सड़क को शुरू किया जा सके। लेवा ने कोलंबियाई सरकार और गुरिल्ला समूह के बीच वार्ता की मेजबानी करने की क्यूबा की दशक भर की परंपरा पर भी प्रकाश डाला। एक पूर्व गुरिल्ला सेनानी गुस्तावो पेट्रो के कोलंबिया के पहले वामपंथी राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेने के कुछ दिनों बाद इसका माहौल तैयार किया जा रहा है। इस बीच क्यूबा के विदेश मंत्री ब्रूनो रोड्रिगेज ने कहा कि उनका देश शांति का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध रहेगा। सरकार और ईएलएन के बीच शांति वार्ता 2017 में पूर्व राष्ट्रपति जुआन मैनुअल सैंटोस के प्रशासन के दौरान शुरू हुई थी, लेकिन जनवरी 2019 में गुरिल्ला समूह द्वारा कार बम हमले में 20 से अधिक लोगों की मौत के बाद निलंबित कर दिया गया था।

### पुर्तगाल में मंकीपॉक्स के 770 मामले

लिस्बन। पुर्तगाल में मंकीपॉक्स के मामले बढ़कर 770 हो गए। यहां मई में पहला मामला सामने आया था। स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय (डीजीएस) ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुर्तगाली स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया कि पिछले सप्ताह 60 नए मामलों की पुष्टि की गई। उन्होंने बताया कि राजधानी लिस्बन और पोर्टो, उत्तरी पुर्तगाल में मामले पाए गए। यहां मंकीपॉक्स वायरस की चपेट में आए 43 फीसदी लोग 30-39 आयु वर्ग के हैं। डीजीएस ने बताया कि मंकीपॉक्स संक्रमितों में से 99.3 प्रतिशत मरीज पुरुष हैं और महिलाओं में केवल पांच मामले ही सामने आए हैं। पुर्तगाल ने 16 जुलाई से मंकीपॉक्स से ग्रसित मरीजों के लिए टीकाकरण शुरू कर दिया है और अब तक 70.2 प्रतिशत पात्र लोगों को टीका लगाया जा चुका है। उन्होंने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने 23 जुलाई को मंकीपॉक्स को अंतरराष्ट्रीय चिंता का सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया। डब्ल्यूएचओ ने रविवार को कहा कि वैश्विक स्तर पर 27,814 मामले सामने आए हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका (7,510), स्पेन (4,577) और जर्मनी (2,887) सूची में शीर्ष पर होने के साथ पुर्तगाल इस बीमारी से सबसे अधिक प्रभावित 10 देशों में से एक है।

### डीओजे ने की ट्रम्प के छापे के वारंट को खोलने की मांग

वाशिंगटन। अमेरिकी न्याय विभाग (डीओजे) ने पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के मार-ए-लागो आवास के तलाशी वारंट को खोलने के लिए एक प्रस्ताव दायर किया है। अटॉर्नी जनरल मेरिक गारलैंड ने यह घोषणा फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (एफबीआई) के एजेंटों द्वारा फ्लोरिडा के पाम बीच में मार-ए-लागो रिसॉर्ट पर छापेमारी के कुछ दिनों बाद की। गत सोमवार को श्री ट्रंप के मार-ए-लागो स्थित रिसॉर्ट पर एफबीआई ने छापेमारी की थी क्योंकि उनपर राष्ट्रपति रहते हुए कई अभिलेखों को ले जाकर अपने इस रिसॉर्ट में छिपाने का आरोप था। करीब 15 बक्सों में अभिलेखों की बरामदगी की गयी। श्री गारलैंड ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि उन्होंने व्यक्तिगत रूप से इस मामले में तलाशी वारंट लेने के निर्णय को मंजूरी दी। उन्होंने कहा, विभाग इस तरह के फैसले को हल्के में नहीं लेता है। जहां तक संभव हो, खोज के विकल्प के रूप में कम दखल देने वाले साधनों की तलाश करना और किसी भी खोज को कम करने के लिए यह मानक अभ्यास है। श्री ट्रम्प और उनके सहयोगियों ने एफबीआई और डीओजे का इस्तेमाल करके डेमोक्रेटिक पार्टी के सांसदों द्वारा किए गए राजनीतिक हमले के रूप में इस ऑपरेशन की निंदा की है। श्री गारलैंड ने आलोचना का जवाब देते हुए कहा कि उनके एजेंटों और अभियोजकों के 'पेशेवरवाद' पर हमले 'निराधार' हैं।

### दक्षिण कोरिया में वायु सेना का लड़ाकू विमान दुर्घटनाग्रस्त

सोल। दक्षिण कोरिया में वायु सेना का एफ-4ई लड़ाकू विमान शुक्रवार को दुर्घटनाग्रस्त हो गया, लेकिन राहत की बात यह रही है कि विमान में सवार दोनों पायल सुरक्षित है। वायुसेना ने बयान जारी करके बताया कि एफ-4ई लड़ाकू विमान पीला सागर के ऊपर सुरक्षा अभियान के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया, लेकिन विमान में सवार वायु सेना के दोनों पायलट पायलट सुरक्षित बच गए हैं। योनहाप समाचार एजेंसी के अनुसार यह हादसा दोपहर 12.20 बजे हुआ। एजेंसी ने सशस्त्र सेवा के हवाले से अपनी रिपोर्ट में बताया कि जब जेट सोल से 35 किलो मीटर दक्षिण में सुवन में अपने अड्डे पर वापस जा रहा था, तो यह दुर्घटनाग्रस्त हो गया। फिलहाल नागरिकों के हताहत होने की कोई सूचना नहीं है। वायु सेना ने घटना के सही कारणों की जांच के लिए एक टीम का गठन किया।

## स्वतंत्रता दिवस से पहले अमेरिकी में भारतीय कॉन्सुलेट पर लिखे खालिस्तानी नारे

नई दिल्ली। स्वतंत्रता दिवस से पहले अमेरिकी में भारतीय कॉन्सुलेट पर खालिस्तानी नारे लिखे पाए गए। एक रिपोर्ट में यह दावा किया गया है। पाकिस्तान के जियो न्यूज ने शुक्रवार को बताया कि सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास की दीवारों पर खालिस्तान के नारे लिखे हुए पाए गए। रिपोर्ट में कहा गया है कि सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे एक वीडियो में भारतीय वाणिज्य दूतावास की दीवारों को खालिस्तान जिंदाबाद के नारे लिखे हुए दिख रहे हैं।

यह घटना ऐसे समय में सामने आई है जब भारत अपनी आजादी की 75 वीं वर्षगांठ मना रहा है। स्वतंत्रता दिवस से पहले प्रतिबंधित खालिस्तानी समूह ने एक भड़काऊ बयान भी जारी किया था। भारत में स्वतंत्रता दिवस समारोह से पहले, खालिस्तानी नेता गुरपतवंत सिंह पन्नू ने प्रमुख स्थानों पर खालिस्तानी झंडा फहराने के लिए नकद इनाम की घोषणा की थी।

भारत की आजादी की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में 13 से 15 अगस्त तक होने वाले आजादी का अमृत महोत्सव के तहत केंद्र सरकार ने हर घर तिरंगा अभियान शुरू किया है। इससे पहले, प्रतिबंधित खालिस्तान समर्थक समूह सिख फॉर जस्टिस (एसएफजे) ने 15 अगस्त को मेलबर्न, लंदन, मिलान, सैन फ्रांसिस्को, वैंकूवर और टोरंटो में भारतीय दूतावासों परखालिस्तानी झंडा फहराने का ऐलान किया था। एसएफजे आतंकी गुरपतवंत सिंह पन्नून ने अपने बयान में पाकिस्तान के संस्थापक मुहम्मद अली जिन्ना की सराहना की थी।

गौरतलब है कि आजादी का अमृत महोत्सव भारत की आजादी के 75 साल और भारत के लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को मनाने के लिए भारत सरकार की एक पहल है। हालांकि, कुछ कट्टरपंथी तत्व सरकार के इस कदम का विरोध कर रहे हैं। इस सप्ताह की शुरुआत में, शिरोमणि अकाली दल (अमृतसर) के प्रमुख सिमरनजीत सिंह मान ने भी हर घर तिरंगा अभियान के बहिष्कार का आह्वान किया था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटरा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं, ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. -DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11, ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

# हिंदू धर्म के बाद किस धर्म की उत्पत्ति हुई?

वैसे हिंदू धर्म के बाद बहुत से प्राचीन धर्मों का उल्लेख किया जा सकता है, जैसे पेगन, वूडू आदि लेकिन हिंदू-जैन के बाद यहूदी धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म था जिसने धर्म को एक नहीं व्यवस्था में ढाला और उसे एक नई दिशा और संस्कृति दी। हजरत आदम से लेकर अब्राहम और अब्राहम से लेकर मूसा तक की परंपरा यहूदी धर्म का हिस्सा है। यह सभी कहीं न कहीं हिंदू धर्म की परंपरा से जुड़े थे। ऐसा माना जाता है कि राजा मनु को ही यहूदी लोग हज. नूह कहते थे। दुनिया के सबसे प्राचीन धर्मों में से एक है यहूदी धर्म। लगभग 4000 साल पुराना यह धर्म वर्तमान में इसराइल का राजधर्म है। यहूदी धर्म की शुरुआत पैगंबर हजरत इब्राहिम (अबराहम या अब्राहम) से मानी जाती है, जो ईसा से 2000 वर्ष पूर्व हुए थे। हज.इब्राहिम के बाद यहूदी इतिहास में सबसे बड़ा नाम 'पैगंबर मूसा' का है। हजरत मूसा ही यहूदी जाति के प्रमुख व्यवस्थाकार हैं। ह.मूसा को ही पहले से चली आ रही एक परंपरा को स्थापित करने के कारण यहूदी धर्म का संस्थापक माना जाता है। हज.मूसा के बाद यहूदियों को विश्वास है कि कयामत के समय हमारा अगला पैगंबर आएगा। मूसा मिस्र के फराओ के जमाने में हुए थे। दुनिया के प्राचीन धर्मों में से एक यहूदी धर्म से ही ईसाई और इस्लाम धर्म की उत्पत्ति हुई है। इस्लाम की एक ईश्वर की परिकल्पना, खतना, बुतपरस्ती का विरोध, नमाज, हज, रोजा, जकात, सूदखोरी का विरोध, कयामत, कोशर (हराम-हलाल), पवित्र दिन (सब्बाब), उम्माह जैसी सभी बातें यहूदी धर्म से ली गई हैं। पवित्र पवित्र भूमि, धार्मिक ग्रंथ, अंजील, हदीस और ताल्मुद की कल्पना एक ही है। ईसाई और इस्लाम में आदम, हव्वा, इब्राहीम, नूह, दावूद, इसाक, इस्माइल, इल्यास, सोलोमन आदि सभी ऐतिहासिक और महान लोग यहूदी परंपरा से ही है। हजरत अब्राहम को यहूदी, मुसलमान और ईसाई तीनों धर्मों के लोग अपना पितामह मानते हैं। आदम से अब्राहम और अब्राहम से मूसा तक यहूदी, ईसाई और इस्लाम सभी के पैगंबर एक ही है किंतु मूसा के बाद यहूदियों को अपने अगले पैंगबर के आने का अब भी इंतजार है।

# आखिर क्या फायदा होगा नैवेद्य अर्पित कर उसे खाने से?

- मन और मस्तिष्क को स्वच्छ, निर्मल और सकारात्मक बनाने के लिए हिन्दू धर्म में कई रीति-रिवाज, परंपरा और उपाय निर्मित किए गए हैं। सकारात्मक भाव से मन शांतचित्त रहता है। शांतचित्त मन से ही व्यक्ति के जीवन के संताप और दुख मिटते हैं।
- जब किसी अन्न को भगवान को समर्पित कर दिया जाता है तो उसमें दिव्यता समाहित हो जाती है। वह और भी पवित्र और गुण वाला बन जाता है, जो हमारे शरीर को पुष्ट करता है। गिलास भर पानी पीने से कहीं अच्छा चरणामृत होता है जो हृदय को सेहतमंद बनाता है।
- लगातार प्रसाद वितरण करते रहने के कारण लोगों के मन में भी आपके प्रति अच्छे भावों का विकास होता है। इससे किसी के भी मन में आपके प्रति राग-द्वेष नहीं पनपता और आपके मन में भी उसके प्रति प्रेम रहता है।
- लगातार भगवान से जुड़े रहने से चित्त की दशा और दिशा बदल जाती है। इससे दिव्यता का अनुभव होता है और जीवन के संकटों में आत्मबल प्राप्त होता है। देवी और देवता भी संकटों के समय साथ खड़े रहते हैं।
- भजन, कीर्तन, नैवेद्य आदि धार्मिक कर्म करने से जहां भगवान के प्रति आस्था बढ़ती है वहीं शांति और सकारात्मक भाव का अनुभव होता रहता है। इससे इस जीवन के बाद भगवान के उस धाम में भगवान की सेवा की प्राप्ति होती है और अगला जीवन और भी अच्छे से शांति व समृद्धिपूर्वक व्यतीत होता है।
- श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार अंत में हमें उन्हीं देवी-देवताओं के स्वर्ग, इत्यादि धामों में वास मिलता है जिसकी हम आराधना करते रहते हैं।
- श्रीमद् भगवद् गीता में भगवान श्रीकृष्ण, अर्जुन के माध्यम से हमें यह भी बताते हैं कि देवी-देवताओं के धाम जाने के बाद फिर पुनर्जन्म होता है अर्थात देवी-देवताओं का भजन करने से, उनका प्रसाद खाने से व उनके धाम तक पहुंचने पर भी जन्म-मृत्यु का चक्र खत्म नहीं होता है। (श्रीगीता 8/16)।

# कितने प्रकार के होते हैं भूत

**हिन्दू धर्म में गति और कर्म अनुसार मरने वाले लोगों का विभाजन किया है- भूत, प्रेत, पिशाच, कूष्मांडा, ब्रह्मराक्षस, वेताल और क्षेत्रपाल। उक्त सभी के उप भाग भी होते हैं। आयुर्वेद के अनुसार 18 प्रकार के प्रेत होते हैं। भूत सबसे शुरुआती पद है या कहें कि जब कोई आम व्यक्ति मरता है तो सर्वप्रथम भूत ही बनता है। इसी तरह जब कोई स्त्री मरती है तो उसे अलग नामों से जाना जाता है। माना गया है कि प्रसुता, स्त्री या नवयुवती मरती है तो चुड़ैल बन जाती है और जब कोई कुंवारी कन्या मरती है तो उसे देवी कहते हैं। जो स्त्री बुरे कर्मों वाली है उसे डायन या डाकिनी करते हैं। इनसभी की उत्पति अपने पापों, व्याभिचार से, अकाल मृत्यु से या श्राद्ध न होने से होती है।**

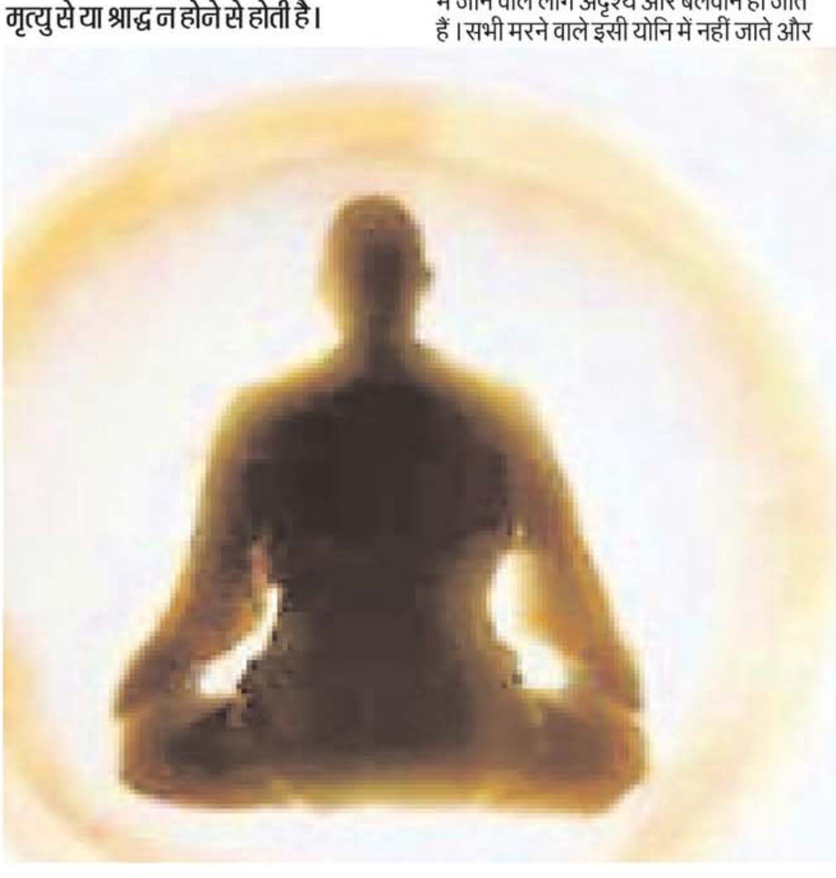

**पुरुषों का भूत** - हिन्दू धर्म में गति और कर्म अनुसार मरने वाले लोगों का विभाजन किया गया है- भूत, प्रेत, पिशाच, कूष्मांडा, ब्रह्मराक्षस, वेताल और क्षेत्रपाल। सभी को यम के अधीन रहना होता है। आर्यमा नामक देवता को पितरों का अधिपति कहा गया है, जो चंद्रमंडल में रहते हैं। उक्त सभी के उपभाग भी होते हैं। आयुर्वेद के अनुसार 18 प्रकार के प्रेत होते हैं। भूत सबसे शुरुआती पद है या कहें कि जब कोई आम व्यक्ति मरता है, तो सर्वप्रथम भूत ही बनता है। प्रेत योनि में जाने वाले लोग अदृश्य और बलवान हो जाते हैं। सभी मरने वाले इसी योनि में नहीं जाते और सभी मरने वाले अदृश्य तो होते हैं, लेकिन बलवान नहीं होते। यह आत्मा के कर्म और गति पर निर्भर करता है। बहुत से भूत या प्रेत योनि में न जाकर पुन: गर्भधारण कर मानव बन जाते हैं। पितृ पक्ष में हिन्दू अपने पितरों का तर्पण करते हैं। इससे सिद्ध होता है कि पितरों का अस्तित्व आत्मा अथवा भूत-प्रेत के रूप में होता है। गरूड़ पुराण में भूत-प्रेतों के विषय में विस्तृत वर्णन मिलता है। श्रीमद्भागवत पुराण में भी धुंधकारी के प्रेत बन जाने का वर्णन आता है।

**स्त्री का भूत** - हालांकि स्त्री और पुरुष एक शरीरिक विभाजन है तथा आत्मिक तौर पर कोई स्त्री और पुरुष नहीं होता। लेकिन जिसके चित्त की दशा जैसी होती है उसे वैसी योनि प्राप्त होती है। यदि कोई आत्मा स्त्री बनकर रही है तो वह खुद को अनंतकाल तक स्त्री ही महसूस करते हुए अन्य योनियां धारण करेगी। खैर! जब कोई स्त्री मरती है तो उसे अलग नामों से जाना जाता है। माना गया है कि प्रसूता स्त्री या नवयुवती मरती है तो चुड़ैल बन जाती है और जब कोई कुंआरी कन्या मरती है तो उसे देवी कहते हैं। जो स्त्री बुरे कर्मों वाली है उसे डायन या डाकिनी कहते हैं। इन सभी की उत्पत्ति अपने पापों, व्यभिचार, अकाल मृत्यु या श्राद्ध न होने से होती है।

**प्रेतबाधा** : भूतादि से पीड़ित व्यक्ति की पहचान उसके स्वभाव एवं क्रिया में आए बदलाव से की जाती है। अलग-अलग स्वभाव में परिवर्तन के अनुसार जाना जाता है कि व्यक्ति कौन से भूत से पीड़ित है।

**भूत पीड़ा** : यदि किसी व्यक्ति को भूत लग गया है, तो वह पागल की तरह बात करने लगता है। मूढ़ होने पर भी वह किसी बुद्धिमान पुरुष जैसा व्यवहार भी करता है। गुस्सा आने पर वह कई व्यक्तियों को एक साथ पछाड़ सकता है। उसकी आंखें लाल हो जाती हैं और देह में सदा कंपन बना रहता है।

**पिशाच पीड़ा** : पिशाच प्रभावित व्यक्ति सदा खराब कर्म करना है, जैसे नग्न हो जाना, नाली का पानी पीना, दूषित भोजन करना, कटु वचन कहना आदि। वह सदा गंदा रहता है और उसकी देह से बदबू आती है। वह एकांत चाहता है। इससे वह कमजोर होता जाता है।

**प्रेत पीड़ा** : प्रेत से पीड़ित व्यक्ति चिल्लाता और इधर-उधर भागता रहता है। वह किसी का कहना नहीं सुनता। वह हर समय बुरा बोलता रहता है। वह खाता-पीता नही हैं और जोर-जोर से श्वास लेता रहता है।

**शाकिनी पीड़ा** : शाकिनी से ज्यादातर महिलाएं ही पीड़ित रहती हैं। ऐसी महिला को पूरे बदन में दर्द बना रहता है और उसकी आंखों में भी दर्द रहता है। वह अक्सर बेहोश भी हो जाती है। कांपते रहना, रोना और चिल्लाना उसकी आदत बन जाती है।

**चुड़ैल पीड़ा** : चुड़ैल भी ज्यादातर किसी महिला को ही लगती है। ऐसी महिला यदि शाकाहारी भी है तो मांस खाने लग जाएगी। वह कम बोलती, लेकिन मुस्कुराती रहती है। ऐसी महिला कब क्या कर देगी? कोई भरोसा नहीं।

**यक्ष पीड़ा** : यक्ष से पीड़ित व्यक्ति लाल रंग में रुचि लेने लगता है। उसकी आवाज धीमी और चाल तेज हो जाती है। वह ज्यादातर आंखों से इशारे करता रहता है। इसकी आंखें तांबे जैसी और गोल दिखने लगती हैं।

**ब्रह्मराक्षस पीड़ा** : जब किसी व्यक्ति को ब्रह्मराक्षस लग जाता है, तो ऐसा व्यक्ति बहुत ही शक्तिशाली बन जाता है। वह हमेशा खामोश रहकर अनुशासन में जीवन-यापन करता है। इसे ही 'जिन्न' कहते हैं। ये बहुत सारा खाना खाते हैं और घंटों तक एक जैसी ही अवस्था में बैठे या खड़े रहते हैं। जिन्न से ग्रस्त व्यक्ति का जीवन सामान्य होता है। ये घर के किसी सदस्य को परेशान भी नहीं करते हैं, बस अपनी ही मस्ती में मस्त रहते हैं। जिन्नों को किसी के शरीर से निकालना अत्यंत ही कठिन होता है।

इस तरह से और भी कई तरह के भूत होते हैं जिनके अलग-अलग लक्षण और लक्ष्य होते हैं। उपरोक्त जानकारी शास्त्रों के आधार है।

# कामदेव को पुत्र की तरह पालने के बाद रति ने उनसे कर लिया विवाह

जिस तरह पश्चिमी देशों में क्यूपिड और यूनानी देशों में इरोस को प्रेम का प्रतीक माना जाता है, उसी तरह हिन्दू धर्मग्रंथों में कामदेव को प्रेम और आकर्षण का देवता कहा जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार कामदेव भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी के पुत्र हैं। उनका विवाह रति नाम की देवी से हुआ था, जो प्रेम और आकर्षण की देवी मानी जाती है। कुछ कथाओं में यह भी उल्लिखित है कि कामदेव स्वयं ब्रह्माजी के पुत्र हैं और इनका संबंध भगवान शिव से भी है। कुछ जगह पर धर्म की पत्नी श्रद्धा से इनका आविर्भाव हुआ माना जाता है। जोभी हो हम एक रोचक पौराणिक कथा पढ़ते हैं। कामदेव को सुनहरे पंखों से युक्त एक सुंदर नवयुवक की तरह प्रदर्शित किया गया है जिनके हाथ में धनुष और बाण हैं। ये तोते के रथ पर मकर (एक प्रकार की मछली) के चिह्न से अंकित लाल ध्वजा लगाकर विचरण करते हैं। वैसे कुछ शास्त्रों में हाथी पर बैठे हुए भी बताया गया है। वसंत ऋतु के देवता कामदेव की पूजा वसंत पंचमी की जाती है। उनके कई नाम है जिममें से मदन की प्रसिद्ध है। असम में है उनका खास मंदिर। मदन-कामदेव मंदिर को 'असम का खजुराहो' के नाम से जाना जाता है। यह मंदिर घने जंगलों के भीतर पेड़ों से छुपा हुआ है। कहते हैं कि भगवान शंकर द्वारा तृतीय नेत्र खोलने पर भस्म हो गए कामदेव का इस स्थान पर पुनर्जन्म तथा उनकी पत्नी रति के साथ पुन: मिलन हुआ था।

## पौराणिक कथा

पौराणिक कथाओं के अनुसार एक समय ब्रह्माजी प्रजा वृद्धि की कामना से ध्यानमग्न थे। उसी समय उनके अंश से तेजस्वी पुत्र काम उत्पन्न हुआ और कहने लगा कि मेरे लिए क्या आज्ञा है? तब ब्रह्माजी बोले कि मैंने सृष्टि उत्पन्न करने के लिए प्रजापतियों को उत्पन्न किया था किंतु वे सृष्टि रचना में समर्थ नहीं हुए इसलिए मैं तुम्हें इस कार्य की आज्ञा देता हूं। यह सुन कामदेव वहां से विदा होकर अदृश्य हो गए। यह देख ब्रह्माजी क्रोधित हुए और शाप दे दिया कि तुमने मेरा वचन नहीं माना इसलिए तुम्हारा जल्दी ही नाश हो जाएगा। शाप सुनकर कामदेव भयभीत हो गए और हाथ जोड़कर ब्रह्माजी के समक्ष क्षमा मांगने लगे। कामदेव की अनुनय-विनय से ब्रह्माजी प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें रहने के लिए 12 स्थान देता हूं- स्त्रियों के कटाक्ष, केश राशि, जंघा, वक्ष, नाभि, जंघमूल, अधर, कोयल की कूक, चांदनी, वर्षाकाल, चैत्र और वैशाख महीना। इस प्रकार कहकर ब्रह्माजी ने कामदेव को पुष्प का धनुष और 5 बाण देकर विदा कर दिया।

इन पांच बाणों के नाम हैं- 1.मारण, 2.स्तम्भन, 3.जृम्भन, 4.शोषण, 5.उम्मादन (मन्मन्थ)। उनका धनुष मिठास से भरे गन्ने का बना होता है जिसमें मधुमक्खियों के शहद की रस्सी लगी है। उनके धनुष का बाण अशोक के पेड़ के महकते फूलों के अलावा सफेद, नीले कमल, चमेली और आम के पेड़ पर लगने वाले फूलों से बने होते हैं। ब्रह्माजी से मिले वरदान की सहायता से कामदेव तीनों लोकों में भ्रमण करने लगे और भूत, पिशाच, गंधर्व, यक्ष सभी को काम ने अपने वशीभूत कर लिया। फिर मछली का ध्वज लगाकर कामदेव अपनी पत्नी रति के साथ संसार के सभी प्राणियों को अपने वशीभूत करने बढ़े। इसी क्रम में वे शिवजी के पास पहुंचे। भगवान शिव तब तपस्या में लीन थे तभी कामदेव छोटे से जंतु का सूक्ष्म रूप लेकर कर्ण के छिद्र से भगवान शिव के शरीर में प्रवेश कर गए। इससे शिवजी का मन चंचल हो गया। उन्होंने विचार धारण कर चित्त में देखा कि कामदेव उनके शरीर में स्थित है। इतने में ही इच्छा शरीर धारण करने वाले कामदेव भगवान शिव के शरीर से बाहर आ गए और आम के एक वृक्ष के नीचे जाकर खड़े हो गए। फिर उन्होंने शिवजी पर मोहन नामक बाण छोड़ा, जो शिवजी के हृदय पर जाकर लगा। इससे क्रोधित हो शिवजी ने अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से उन्हें भस्म कर दिया। कामदेव को जलता देख उनकी पत्नी रति विलाप करने लगी। तभी आकाशवाणी हुई जिसमें रति को रुदन न करने और भगवान शिव की आराधना करने को कहा गया। फिर रति ने श्रद्धापूर्वक भगवान शंकर की प्रार्थना की। रति की प्रार्थना से प्रसन्न हो शिवजी ने कहा कि कामदेव ने मेरे मन को विचलित किया था इसलिए मैंने इन्हें भस्म कर दिया। अब अगर ये अनंग रूप में महाकाल वन में जाकर शिवलिंग की आराधना करेंगे तो इनका उद्धार होगा। तब कामदेव महाकाल वन आए और उन्होंने पूर्ण भक्तिभाव से शिवलिंग की उपासना की। उपासना के फलस्वरूप शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा कि तुम अनंग, शरीर के बिन रहकर भी समर्थ रहोगे। कृष्णावतार के समय तुम रुक्मणि के गर्भ से जन्म लोगे और तुम्हारा नाम प्रद्युम्न होगा।

## श्रीकृष्ण और कामदेव

पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण को भी कामदेव ने अपने नियंत्रण में लाने का प्रयास किया था। कामदेव ने भगवान श्रीकृष्ण से यह शर्त लगाई कि वे उन्हें भी स्वर्ग की अप्सराओं से भी सुंदर गोपियों के प्रति आसक्त कर देंगे। श्रीकृष्ण ने कामदेव की सभी शर्त स्वीकार की और गोपियों संग रास भी रचाया लेकिन फिर भी उनके मन के भीतर एक भी क्षण के लिए वासना ने घर नहीं किया।

## रति ने पाला कामदेव को पुत्र की तरह फिर उनसे कर लिया विवाह

जब शिव ने कामदेव को भस्म कर दिया तब ये देख रति विलाप करने लगी तब जाकर शिव ने कामदेव के पुन: कृष्ण के पुत्र रूप में धरती पर जन्म लेने की बात बताई। शिव के कहे अनुसार भगवान श्रीकृष्ण और रुक्मणि को प्रद्युम्न नाम का पुत्र हुआ, जो कि कामदेव का ही अवतार था। कहते हैं कि श्रीकृष्ण से दुश्मनी के चलते राक्षस शंभरासुर नवराज प्रद्युम्न का अपहरण करके ले गया और उसे समुद्र में फेंक आया। उस शिशु को एक मछली ने निगल लिया और वो मछली मछुआरों द्वारा पकड़ी जाने के बाद शंभरासुर के रसोई घर में ही पहुंच गई। तब रति रसोई में काम करने वाली मायावती नाम की एक स्त्री का रूप धारण करके रसोईघर में पहुंच गई। वहां आई मछली को उसने ही काटा और उसमें से निकले बच्चे को मां के समान पाला-पोसा। जब वो बच्चा युवा हुआ तो उसे पूर्व जन्म की सारी याद दिलाई गई। इतना ही नहीं, सारी कलाएं भी सिखाईं तब प्रद्युम्न ने शंभरासुर का वध किया और फिर मायावती को ही अपनी पत्नी रूप में द्वारका ले आए।

मुद्गल पुराण के अनुसार कामदेव का वास यौवन, स्त्री, सुंदर फूल, गीत, पराग कण या फूलों का रस, पक्षियों की मीठी आवाज, सुंदर बाग-बगीचों, वसंत ऋतु, चंदन, काम-वासनाओं में लिप्त मनुष्य की संगति, छुपे अंग, सुहानी और मंद हवा, रहने के सुंदर स्थान, आकर्षक वस्त्र और सुंदर आभूषण धारण किए शरीरों में रहता है। इसके अलावा कामदेव स्त्रियों के शरीर में भी वास करते हैं, खासतौर पर स्त्रियों के नयन, ललाट, भौंह और होठों पर इनका प्रभाव काफी रहता है।

## कामदेव मंत्र

कामदेव के बाण ही नहीं, उनका 'क्लीं मंत्र' भी विपरीत लिंग के व्यक्ति को आकर्षित करता है। कामदेव के इस मंत्र का नित्य दिन जाप करने से न सिर्फ आपका साथी आपके प्रति शारीरिक रूप से आकर्षित होगा बल्कि आपकी प्रशंसा करने के साथ-साथ वह आपको अपनी प्राथमिकता भी बना लेगा। कहा जाता है कि प्राचीनकाल में वेश्याएं और नर्तकियां भी इस मंत्र का जाप करती थीं, क्योंकि वे अपने प्रशंसकों के आकर्षण को खोना नहीं चाहती थीं। ऐसा माना जाता है कि इस मंत्र का लगातार जाप करते रहने की वजह से उनका आकर्षण, सौंदर्य और कांति बरकरार रहती थी।